विचार दृष्टि

वर्ष : 3 अंक : 7 अप्रेल-जून : 2001 रुपये : 15

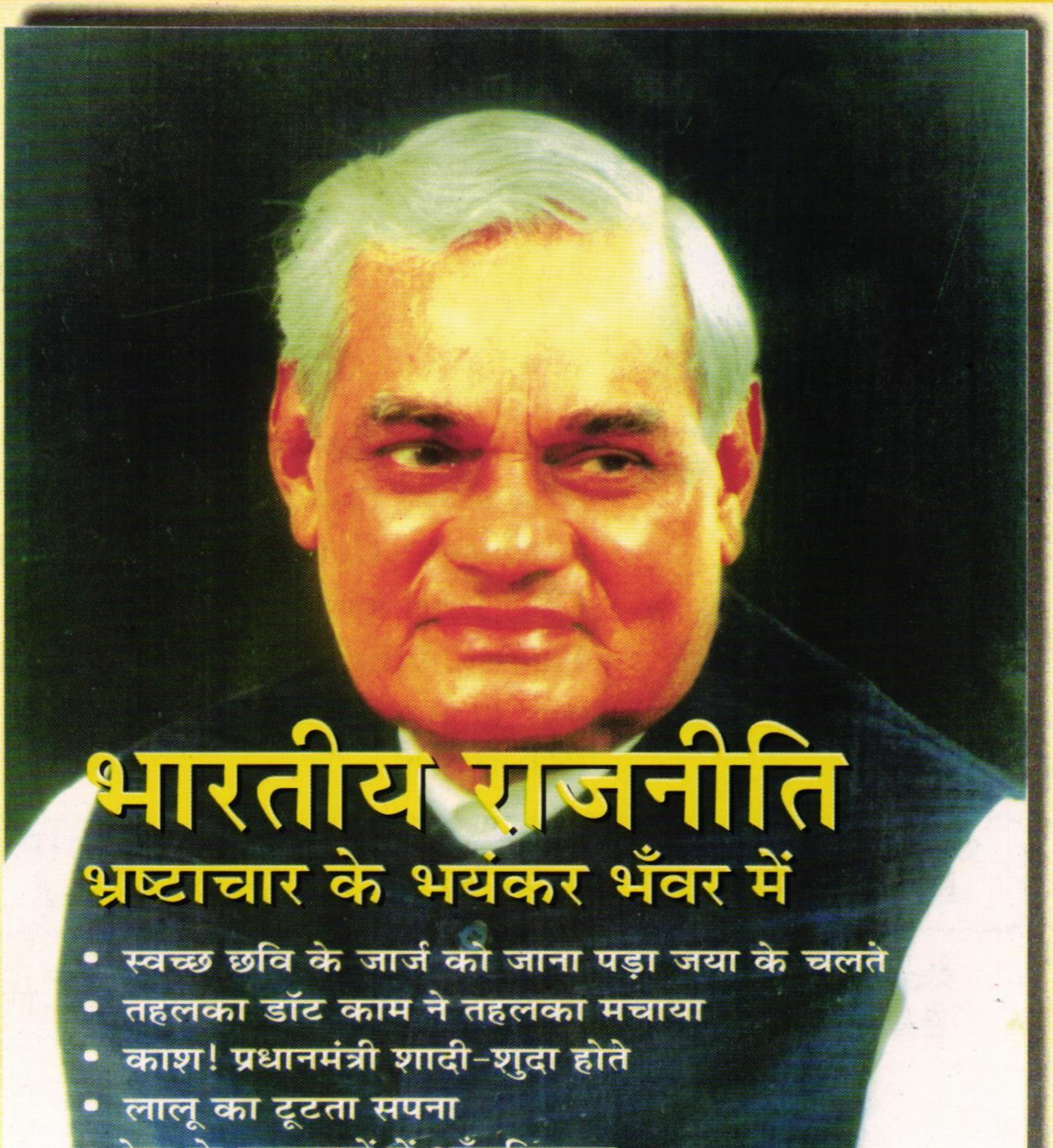

भारतीय राजनीति
भ्रष्टाचार के भयंकर भँवर में

- स्वच्छ छवि के जार्ज को जाना पड़ा जया के चलते
- तहलका डॉट काम ने तहलका मचाया
- काश! प्रधानमंत्री शादी-शुदा होते
- लालू का टूटता सपना
- रेणु के उपन्यासों में आँचलिकता

New Millennium

With

an excellent technical training

at

KUMARTEC COMPUTERS

Assembled PC at very reasonable price of Rs. 14,400

in the field of

Free Interent Browsing for all Advance Courses

Software Training	-	**Dos, Unix, Windows'95, '98, '2000. Accounting Packages - Tally, Easty Languages - C, C++, Orcle, Java etc.**
Hardware Training	-	**Card Level Assembling, Fault Finding, Installation, Networking in pear to pear and Client Server Based (NT, Novell)**

Cyber cafe, Colour Printing, Designing, E-mail, DTP, Book Publishing, Screen Printing, Data Punching

Contact : U-208, SHAKARPUR, BEHIND BANK OF BARODA, VIKAS MARG, DELHI-92 ☎ : 2230652

E-mail : ranjansudhir@hotmaillcom

विचार दृष्टि

(राष्ट्रीय भावनाओं पर आधारित त्रैमासिकी)

वर्ष-3 अप्रैल-जून, 2001 अंक-7

-----पत्रिका परिवार -----

प्रधान सम्पादक व प्रकाशक: सिद्धेश्वर

परामर्शी सम्पादक : गिरीशचन्द श्रीवास्तव

कार्यकारी सम्पादक : डॉ. शिवनारायण

सह सम्पादक : कामेश्वर मॉनव

सहा.सम्पादकः मनोज कुमार

सम्पादन सहायक : अंजलि

विधि सलाहकार: मान.न्यायमूर्ति श्री बी.एल.यादव

शब्द संयोजक : शशि भूषण

साज-सज्जा : दिलीप कुमार सिन्हा

मुख्य प्रकाशकीय कार्यालय : दिल्ली

ई.-50, एफ.एफ.सी., झंडेवालान

रानी झाँसी रोड, नई दिल्ली-110055

अन्य कार्यालय : विज्ञापन व प्रसार

दिल्ली : एस. रंजन, प्रबंध सम्पादक

कुमारटेक कम्प्यूटर्स, यू.-208, शकरपुर, दिल्ली-92, ☎: 2230652

ब्यूरो प्रमुख

मुम्बई : वीरेन्द्र याज्ञिक ☎: 8897962

कलकता : जितेन्द्रधीर

चेन्नई : डॉ. मधु धवन

तिरूवनन्तपुरम : डा. रति सकसेना

बंगलोर : पी.एस.चन्द्रशेखर, ☎:6568867

प्रशासकीय कार्यालय :

'दृष्टि' 6, विचार विहार, यू - 207, शकरपुर विकास मार्ग , दिल्ली -110092

फोन -011-2230652, फैक्स -011-2225118

संपादकीय व पत्राचार कार्यालय :

'बसेरा', पुरन्दरपुर, पटना-1 दूरभाष : 0612-228519

E-mail-ranjansudhir@hotmail.com

मुद्रकः प्रोलिफिक इनकारपोरेटेड

एक्स-47, ओखला इंडस्ट्रीयल एरिया,फेज-2, नई दिल्ली-20

मुख्य वितरक :

कुमार बुक सेन्टर, ए०-67, क्रिश्चन कॉलोनी, पटेल चेस्ट, नई दिल्ली

दूरभाष: 7666084 (P.P.)

मूल्य : एक प्रति 15 रुपये

आजीवन सदस्य : 1000 रुपये

सृजन और सृजनहार

पृष्ठ

पाठकीय पन्ना : 2

संपादकीय : 5

विचार-प्रवाह :

मनुस्मृति-एक अनुशीलन -जियालाल आर्य 6

समाज :

क्यों बढ़ रही है आत्महत्या की घातक प्रवृति ? - डॉ0 शुभंकर बनर्जी 8

मुद्दा :

भ्रष्टाचारियों की प्रतिष्ठा की पुनर्बहाली 10

जनसंख्या-नियंत्रण देश की मूलभूत समस्या - दिलीप कुमार सिन्हा 11

तहलका प्रकरण :

स्वच्छ छवि के जार्ज को जाना पड़ा 12

को बड़ छोट कहत अपराधू---- 14

न्याय जगत :

दिल्ली में सीएनजी का दूरगामी प्रभाव - ज्ञानेन्द्र नारायण सिंह 15

बिहार :

लालू का टूटता सपना - विनय कुमार सिन्हा 21

बिहार में 22 वर्षों के बाद पंचायत चुनाव 25

प. बंगाल :

कांग्रेस ममता की गिरफ्त में 26

तमिलनाडु :

तमिल में उर्वशी-साहित्य - डा. तेज नारायण कुशवाहा 27

गांव-जवार :

नई राष्ट्रीय कृषि-नीति पर गांव में संगोष्ठी 28

कीटनाशक से केरल का पाद्रे गांव तबाह 30

श्रद्धांजलि : 31

अर्थ-व्यवस्था :

2001-2002 का रेल एवं आम बजट 32

पृष्ठ

समाचार-विश्लेषण : 34

साहित्य :

रेणु के उपन्यासों में आँचलिकता -सिद्धेश्वर 35

व्यंग्य :

दौलत - कृष्ण कुमार राय 39

साहित्य-समाचार : 40

सम्मान : 42

नारी-जगत :

भूमंडलीकरण और स्त्री-विमर्श -सुशीला 44

शख्शियत :

कैक्टसों के बीच खिला गुलाब - डॉ. विद्या शर्मा 45

महाकाल बोल रहा है....- अशोक जोषी 46

सेहत-सलाह :

रेकी : चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में एक अभिनव प्रयोग - शशि भूषण 47

गतिविधियाँ : 48

काव्य-कुंज : 52

कला-संस्कृति :

भावना को भुनाने की कला और सामाजिक यथार्थ 54

भेंटवार्ता :

कलाकार को शादी नहीं करनी चाहिए 56

देश-विदेश :

तालिवान में बुद्धा पर बूलेट - शशि रंजन 57

खेल-खिलाड़ी : 58

व्यंग्य :

रास्ता बताने वाले - अलका पाठक 59

फिल्म-समीक्षा :

मुझे सब कुछ पता है - सुधांशु 60

पत्रिका-परामर्शी

1. पद्मश्री डॉ. श्यामसिंह 'शशि', दिल्ली
2. प्रो. रामबुझावन सिंह, पटना
3. श्री जियालाल आर्य, पटना
4. बनवारी लाल यादव, दिल्ली
5. डॉ बाल शैरि रेड्डी, चेन्नई
6. श्री जे.एन.पी.सिन्हा, दिल्ली
7. कविवर गोपी वल्लभ सहाय, पटना
8. श्री बांकेनन्दन प्रसाद सिन्हा, पटना

रचनाकार के विचारों से पत्रिका-परिवार का सहमत होना आवश्यक नहीं।

तमिल से इतनी उदासीनता क्यों?

अत्यन्त दु:खी हृदय से ये पंक्तियां लिख रहा हूँ। जब प्रतीक्षा फलित न हो तो मन:स्थिति दिग्भ्रमित हो जाती है। महीने पूर्व अपनी रचना **कुरल चिन्तन** आपको भेंट की थी। यद्यपि मैंने यह प्रति माननीय रेलमंत्री जी के लिये सुरक्षित रखी थी। पर आपने अत्यन्त आग्रह किया था और वचन दिया था कि पुस्तक की समीक्षा अपने लोकप्रिय पत्र **विचार दृष्टि** में प्रस्तुत करेंगे।

पर पता नहीं क्यों, अभी तक इस कृति के सम्बन्ध में आपने एक शब्द भी नहीं लिखा या आपकी विचार दृष्टि में यह पुस्तक इतनी समर्थ नहीं है कि इसके बारे में कुछ लिखा जा सके, या हम तमिलभाषियों की हिन्दी इतनी परिपक्व नहीं है कि वह **विचार दृष्टि** में चार पंक्तियां पा सके।

सब मिलाकर यही मुझे प्रतीत हुआ है कि न जाने क्यों आपने इतनी उदासीनता की स्थिति रखी है। यद्यपि मैं यह स्वीकार करता हूँ कि दैनिक जीवन में हमें हिन्दी से इतना ही नाता रहता है जितना दाल-सब्जी में नमक का स्थान। हम तमिल भाषियों की नमक जैसी ही स्थिति हिन्दी के सम्बन्ध में है। न लो तो लाचार, अधिक ले लिया तो निराहार। वैसे भी तमिलभाषी की हिन्दी में अस्पष्ट लय होती है। शायद इसी कारण आप यह तय नहीं कर पाये कि इसकी जय(वर्णन) कैसे की जाय, एक भय था कि कहीं हिन्दीभाषी तमिलभाषी हिन्दी की हंसी न उड़ा दें। अस्तु-

मन से यदि हम न चाहें तो तमिलनाडु में हिन्दी का प्रचलन कैसे हो सकता है। यह तो एक बहुत आत्मवंचना की बात होगी जब हमें कहें तो कुछ पर लिखें, करें कुछ। अस्तु-

आपके अनन्त हिन्दी प्रेम के प्रति मेरे हृदय में श्रद्धा है, आदर है। बस इसी अपनत्व ने कुछ खुला-सा लिखने को प्रेरित किया है। सनलाइट साबुन से कपड़ा धोने के बाद यदि वह गन्दे नाले में गिर जाय तो कपड़ा तो धुल जाता है पर उसमें एक गन्ध रह जाती है जो मन को मलिन कर देती है। हिन्दी वाले चाहे कितना भी महायज्ञ क्यों न करें पर जब तक वे तमिल भाषियों को साथ नहीं लेंगे तब तक हिन्दी की बिन्दी मन्दी ही रहेगी मेरे प्रदेश में।

अत्यन्त आदर से योग्य सेवा लिखें। यदि आपको कहीं मेरी पंक्तियां अनचाही लगी हों तो तहे दिल से क्षमा चाहता हूँ। क्योंकि अपनों से मन की स्थिति को सम्यक्तया स्पष्ट करना मानवता की रीत है, मीत है, जीत है, नीत है।

सम्पर्क: त० शि० क० कण्णन
सचिव, तमिलभाषा अकादमी
3, प्रथम प्रधान आलै, सीताम्मल कॉलोनी, चेन्नै-600018

शख्सियत स्तम्भ की रचनाएं कमाल की

आप जिस लगन और मेहनत से राष्ट्रीय भावनाओं पर आधारित यह पत्रिका नियमित निकाल रहे हैं, दुर्लभ है। पत्रिका अपने नाम के अनुरूप वैचारिक उत्कृष्ट सामग्रियों का समावेश कर संग्रहणीय हो गई है। सुपरिचित रचनाकार डॉ. बाल शौरी रेड्डी पर डॉ. महेन्द्र कार्तिकेय की तथा अली सरदार जाफरी पर डॉ. शाहिद जमील की कलम ने कमाल किया है।

वीरेन्द्र चन्द्राकर, गोवा

आधुनिकता पर चोट

युवा पीढ़ी स्तम्भ के तहत अमरनाथ 'अमर' ने पारम्परिक मूल्यों के प्रति युवा-पीढ़ी का जो दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है, वह कुछ सोचने को मजबूर करता है। **प्रो. राम भगवान सिंह** के व्यंग्य लेख **मैंने भी बाल रंगवाया** में आधुनिकता पर जो चोट की गई है वह समसामयिक है और प्रबुद्धजनों के लिए एक अच्छी-खासी मानसिक खुराक ।

सुनील कुमार आर्य, कोटा

रचनाकारों से

√ रचना भेजने के लिए कोई शर्त नहीं है, सभी रचनाकारों का हम हार्दिक स्वागत करते हैं। उदीयमान रचनाकारों को विशेष रूप से प्रोत्साहित किए जाने का प्रयास रहेगा।

√ रचना एक तरफ टंकित या स्पष्ट लिखी होनी चाहिए। रचना के अन्त में उनके मौलिक, अप्रकाशित तथा अप्रसारित होने के प्रमाण पत्र के साथ अपना पूरा नाम व पता अवश्य लिखें।

√ रचना के साथ पासपोर्ट/स्टाम्प आकार की स्वेत एवं श्याम तस्वीर की दो प्रतियाँ अवश्य संलग्न करें।

√ यदि आप अस्वीकृत रचना वापस चाहते हैं तो कृपया अपना पता लिखा, डाक टिकट लगा लिफाफा लगाना न भूलें।

√ रचना भेजते वक्त यह अवश्य देख लें कि लिफाफा पर आवश्यक डाक टिकट लगें हैं या नहीं।

कार्यकारी सम्पादक : विचार दृष्टि

'बसेरा', पुरन्दरपुर, पटना-1(बिहार) / यू०-207, शक्करपुर, दिल्ली-92

जरा इनकी भी सुनें

1. अहिंसा का अस्त्र ही आधुनिक आणविक अस्त्रों की सबसे बड़ी काट है। अहिंसा कायरता का नहीं, बल्कि बहादुरी का परिचायक है।

-अटल बिहारी वाजपेयी

2. रक्षा सौदों की दलाली के रहस्योद्घाटन से संसदीय लोकतंत्र कमजोर हुआ है।

-पी. ए. संगमा, पूर्व लोकसभाध्यक्ष

3. भारत को विश्व व्यापार संगठन की सदस्यता छोड़कर आत्मनिर्भर बनने का प्रयास करना चाहिए

-मुलायम सिंह यादव, अध्यक्ष, सपा

4. जार्ज पहले जैसे नही रहे, उनपर जया जेटली के भ्रष्टाचार का जादू हावी हो गया।

-मृणाल गोरे, समाजवादी नेता

5. हमने तो केवल पशुचारा खाया, राजग सरकार ने तो देश को ही बेच डाला

-लालू प्रसाद यादव, अध्यक्ष राजद

6. पत्रकारों को पिछलग्गू न होकर सरकार के गलत कार्यों का पर्दाफाश करना चाहिए। अच्छी पत्रकारिता यही है कि पावरफूल जर्नलिस्ट बनों। यदि पत्रकार सरकार के काले कारनामों को उजागर नहीं करेगा तो सरकार निरंकुश हो जाएगी।

-तरूण तेजपाल, प्रधान सम्पादक, तहलका डॉट कॉम

7. स्वतन्त्र मुम्बई का षड्यन्त्र किसी ने रचा तो मराठी युवकों की नई पीढ़ी उसे पत्थरों से कुचलकर मारने से नहीं हिचकेगी

-बाल ठाकरे, शिवसेना प्रमुख

8. अयोध्या कांड हिन्दुओं की भावनाओं का विष्फोट था, कोई पूर्व योजना नहीं थी।

-लालकृष्ण आडवाणी, गृहमंत्री

9. अयोध्या में विवाहित ढाँचा **'गुलामी की निशानी और राष्ट्र के लिए शर्मनाक'** था, क्योंकि दूसरा नाम एक **'हमलावर'** के नाम पर रखा गया था।

केन्द्रीय खेलमंत्री उमाभारती

10. भाजपा के राष्ट्रवाद की पोल तहलका कांड ने खोल दी है। इस कांड के बाद अटल बिहारी वाजपेयी तथा भाजपा का मुखौटा उतर गया है और असली चेहरा सामने आ गया है।

-सलमान खुर्शीद,नेता कांग्रेस पार्टी

बिल गेट्स को पछाड़ रॉबसन बने दुनिया का सबसे अमीर आदमी

माइक्रोसॉफ्ट प्रमुख बिल गेट्स को पीछे छोड़ते हुए अमेरिका के ही एस. रॉबसन वाल्टन विश्व के सबसे धनी व्यक्ति बन गए हैं। **2001** की सूची में वाल्टन की सम्पत्ति लगभग **45** अरब पाउंड(करीब **3150** अरब रुपए) बताई गई है जो गेट्स से आठ अरब पाउंड(करीब **3600** अरब रुपए) अधिक है।

पटना मेडिकल रिहैवलिटेशन क्लिनिक

मखनियाँ कुआँ रोड, पटना-4

मोबाइल-9835095988

सिन्हा फिजियोथेरापी क्लिनिक

लक्ष्मी नर्सिंग होम कम्प्लेक्स, पश्चिमी बोरिंग केनाल रोड राजापुर के निकट

डॉ० परमानन्द प्र० सिंह

BBC. DDT (PAT) , SG R. P. (Cal)

DENSA

PHARMACEUTICALS PVT. LTD.

Mr. Devendra Kumar Singh
C. M. D.

022 - 8974777(O)
Fax : 8974777(F)
9525255285

Office :

Anurag Mansion, Shiv Vallabh Road
Ashok Van, Dahisar (East), Mumbai-400 068

Factory :

Plot No. 10, dewan&Sons, Udyog Nagar, Palghat,
Distt. - Thane, Mumbai (Maharashtra)

सम्पादकीय...............

भारतीय राजनीति भ्रष्टाचार के भयंकर भंवर में

हम सब इस बात से अवगत हैं कि देश की प्रभुसत्ता राजनीतिक लोगों में निहित है यानी वे ही देश के संचालक हैं किन्तु संसार के सबसे बड़े लोकतन्त्र का दावा करने वाली भारतीय राजनीति जब भ्रष्टाचार के भयंकर भंवर में फंस जाए तो लोकतन्त्र का खतरे में पड़ना स्वाभाविक है। भ्रष्टाचार की जड़ें राजनीतिक दलों व उसके नेताओं में इतनी पैठ बना ली हैं कि उसके जहर उनके रग-रग में समा गए हैं। राजनीतिक नेता सत्ता में हों या विपक्ष में आकंठ भ्रष्टाचार में डूबे होने के बावजूद उनकी आवाज भ्रष्टाचार के खिलाफ सबसे बुलन्द होती है। कल तक बोफोर्स की दलाली में फंसी कांग्रेस **तहलका डॉट कॉम** द्वारा रक्षा सौदों में दलाली के रहस्योद्घाटन के बाद पिछले दो सप्ताह तक संसद की कार्यवाही को जिस प्रकार ठप्प कर करदाताओं के करोड़ों रुपये का वारा-न्यारा कर गई, उससे आखिर क्या उभरकर सामने आता है? क्या भाजपा तथा कांग्रेस एक ही सिक्के के दो पहलू नहीं दिखते? तहलका डॉट कॉम की एक बेवसाइट ने रक्षा सौदों की दलाली का मामला उजागर कर पूरे भारतीय राजनीति में एक तहलका मचा दिया है। जो अपनी कमीज को दूसरों से उजली और सफेद बताते थे, वे पाखंडी निकले। उच्च आदर्शों, नैतिकता और पारदर्शिता का ढिंढोरा पीटनेवाली पार्टी के अध्यक्ष को मात्र एक लाख का नववर्ष पार्टी फन्ड लेते सारे देश ने लेते, गिनते और रखते देखा। सचमुच **तहलका** के इस बेवसाइट ने पूरे देश को शर्मिन्दगी की स्थिति में लाकर खड़ा कर दिया है। जिस देश की सरकार में शामिल नेता चन्द रुपयों के लिए देश की सुरक्षा का ही सौदा कर डाल रहे हों, उसकी रक्षा भगवान ही कर सकते हैं। जब **जार्ज फर्नाडीस** जैसे समाजवादी नेता का नाम सामने आता है, जिसे दूरदर्शन चैनल सादगी व समर्पण का आधुनिक संस्करण बनाकर अपने कपड़े तक स्वयं धोते हुऐ दिखाते हैं तो राष्ट्र को लेकर निराशा अत्यन्त बढ़ जाती है। आखिर अब देशवासी किस पर भरोसा करे?

बहुत ही अच्छे कलेवर वाले ईमानदार और श्रेष्ठ व्यक्ति होते हुए भी प्रधानमंत्री **वाजपेयी** के चारों ओर ऐसे लोग घिर गए जिनके कारण न केवल उनकी साफ छवि को काफी नुकसान पहुँचा बल्कि **राष्ट्रवादी विचारधारा** को भी धक्का लगा।

छींका टूटने के इंतजार में बैठी बिपक्षी पार्टियां व उसके नेता भ्रष्टाचार के नाम पर अपने-अपने दड़बों से बाहर आ गये हैं और उनकी आक्रामकता देखते बनती है। उन्हें गिरेबान चढ़े अपने कालरों की गंदगी अचानक साफ आने लगी और वे अपनी आँखों पर स्वार्थ की पट्टी बाँध, विरोध में झंडा उठाऐ चल पड़े। कांग्रेस अध्यक्ष **सोनिया गाँधी** पर बोफोर्स की दलाली को लेकर भ्रष्टाचार के आरोप अभी समाप्त भी नहीं हो पाए थे कि उनके निजी सचिव **विसेंट जार्ज** तथा उसके परिवार के सदस्यों के पास ढाई करोड़ रुपये की चल-अचल सम्पति होना यही बताता है कि भारतीय राजनीति भ्रष्टाचार के दलदल में डूबती चली जा रही है तथा राजनीतिज्ञों के साथ-साथ उनके इर्द-गिर्द रहनेवाले लोग भी दोनों हाथों से धन बटोरने में लगे हुए हैं।

अभी-अभी दिल्ली उच्च न्यायालय ने हवाला कांड में आरोपित 17 राजनीतिबाजों और नौकरशाहों से आय का विवरण पेश करने और उनसे कर वसूलने का निर्देश आयकर विभाग को दिया है। इन राजनीतिज्ञों में **लालकृष्ण आडवाणी, यशवन्त सिन्हा** तथा **शरद यादव** के अलावा कई राजनेताओं का नाम शामिल है। केन्द्रीय सतर्कता आयुक्त ने भी स्वीकार किया है कि जबतक राजनीति में भ्रष्टाचार रहेगा तबतक सरकारी विभागों में भ्रष्टाचार खत्म करना सम्भव नहीं होगा। स्वयं प्रधानमंत्री ने कहा है कि यह चिन्ता का विषय है कि नकली शस्त्र दलाल बने पत्रकार इतनी आसानी से सेना तथा प्रशासन में ऊँचे पदों पर बैठे लोगों तक पहुँच गए। निःसंदेह, पचास वर्ष में ढीली पड़ गई पूरी व्यवस्था को ही चुस्त-दुरूस्त करने की भारी चुनौती आज राष्ट्र के सामने उपस्थित है। किन्तु भ्रष्टाचार के विरूद्ध संघर्ष की हमारी निष्ठा संदिग्ध है क्योंकि जब भारत सरकार के वित्तमंत्री को केन्द्रीय उत्पाद एवं सीमा शुल्क बोर्ड के अध्यक्ष **बी० पी० वर्मा** के काले कारनामों पर काफी पहले से संदेह था तो समय रहते उन पर कोई कार्रवाई क्यों नहीं की गई। जाहिर है मौजूदा व्यवस्था में भ्रष्ट तत्त्वों से निबटने के कोई ठोस उपाय नहीं हैं और यदि हैं तो वे निरर्थक साबित हो चुके हैं।

भारतीय राजनीति के भ्रष्टाचार का सबसे अधिक भयावह पहलू तो यह है कि जो जनता से भ्रष्टाचार मिटाने का दावा कर सत्ता में आते हैं वही भ्रष्टाचार में लिप्त हो जाते हैं। कल संसद में जिस दल ने हो-हल्ला कर नैतिकता के आधार पर वर्तमान सरकार के त्याग-पत्र की माँग की उन्होंने तो अपने शासनकाल में भ्रष्टाचार के नित नए मानदण्ड स्थापित किए हैं। जीप घोटाले से लेकर बोफोर्स, शेयर, यूरिया, चारा घोटाले का लम्बा इतिहास उन्हीं लोगों की देन है। वास्तव में नारों की राजनीति से सरकारें और चेहरे तो बदल जाते हैं पर सत्ता का चरित्र और व्यवस्था नहीं बदलती है। यही सबसे बड़ी चिन्ता की बात है। भाजपानीत सरकार के आने से ऐसा लगा था कि देश में कांग्रेस सरकारों के मुकाबले स्वच्छ और पारदर्शी सरकार काम करेगी। मगर **तहलका डॉट कॉम** के नए भंडाफोड़ से बची खुची उम्मीदें भी जाती रहीं। भारत में किसी लोकतान्त्रिक सरकार को इससे ज्यादा शर्मनाक भंडाफोड़ का सामना नहीं करना पड़ा। जनता असहाय और लाचार है। सामंतवाद और पूंजीवाद ने अपना विकृत चेहरा धर्म और देशभक्ति के नकाब में छिपाया है। जब-जब यह नकाब उतरा है समाज में परिर्वतन आया है। इसलिए भ्रष्टाचार मिटेगा ऐसी आशा की जानी चाहिए। सरकार और विपक्ष यदि सचमुच भ्रष्टाचार से लड़ना चाहता है तो उसे व्यवस्था को बदलना होगा। इसके अतिरिक्त समाज के संवेदनशील तथा प्रबुद्धजनों को भी अपनी तटस्थता त्याग कर आम जनता में चेतना जागृत करनी होगी। स्पष्ट है भ्रष्टाचार के खिलाफ युद्ध सभी को मिलकर लड़ना होगा।

सिद्धेश्वर
sidheshwarprasad@hotmail.com

मनुस्मृति-एक अनुशीलन

❑ जियालाल आर्य

मनु और मनुस्मृति के बारे में लोग, जो इसके ज्ञाता हैं और जो अज्ञाता हैं-दोनों प्रकार के लोग भ्रांतिमय व्याख्या करते हैं। कुछ लोग मनुस्मृति को सनातन धर्म, हिन्दू-धर्म, यदि कोई है, या ब्राह्मणवादी व्यवस्था की आलोचना करते हैं। कुछ मनु के नाम पर ब्राह्मण जाति को गालियां देते हैं। उनकी मान्यता है कि ब्राह्मण को नहीं बल्कि ब्राह्मणवादी व्यवस्था को दोषी ठहराते हैं। उन तमाम प्रकार के लोगों के जहां और जिस रूप में उनका हित प्रभावित होता है, वहां उस रूप में मनु और मनुस्मृति की, मनुवादी, ब्राह्मणवादी व्यवस्था की, ब्राह्मणवाद की आलोचना करते हैं। निहित स्वार्थ में लोगों को अलग करने का प्रयास करते हैं और अपने प्रयास में बहुत हद तक सफल भी होते हैं। परन्तु कोई भी वर्ग अगड़ा, पिछड़ा, अन्त्यज मनुस्मृति, मनुवादी व्यवस्था, ब्राह्मणवादी व्यवस्था की कमियों को दूर करके समाज को जोड़ने का प्रयास नहीं करता या नहीं करना चाहता।

ऐसी स्थिति क्यों है। क्योंकि कुछ लोग मनुस्मृति के नियमों-कानूनों को जानते नहीं। कुछ लोग जानते हैं तो उन्हें पूर्ण जानकारी नहीं है अल्प ज्ञान भयंकारी। कुछ लोग जानते हैं, परन्तु वे उसे समाज के सामने सही स्थिति में लाना नहीं चाहते हैं। शायद यथास्थिति में ही विश्वास करते हैं। ऐसे लोगों की पहचान करके सही और प्रगतिशील व्याख्या प्रस्तुत करने के लिए अभी तक न तो कोई सामाजिक संस्था आगे आई है, और न कोई वर्ग या जाति और न ही कोई राजनीतिक पार्टी। समाज में भ्रम और अज्ञान का मकड़जाल फैला है।

कोई भी नियम, कानून, धर्म और संविधान तत्कालीन देश, काल, परिस्थिति और आवश्यकता को देखते हुए बनाया जाता है। वेदकालीन नियम आज पूर्णतया लागू नहीं होंगे, मनुकालीन धर्मशास्त्र आज के युग में लागू करना अन्याय होगा। अंग्रेजों ने कतिपय कानून बनाए, जो आज भी लागू हैं परन्तु समय-समय पर आवश्यकतानुसार उनको संशोधित करना पड़ता है। भारतवर्ष में नवीनतम कानून भारत का संविधान है जिसमें भी गत पचास वर्षों में अस्सी से अधिक संशोधन हो चुके हैं। प्राचीन समाज, अर्वाचीन समाज, मध्यकालीन समाज यथास्थितिवादी था। प्रगतिशील सोच नहीं के बराबर थी। यदि कहीं से प्रगति की बात उठती थी तब रूढ़िवादी व्यवस्था उसे दबा देती थी। प्रगतिशील परिवर्त्तन का सदा से ही विरोध होता आया है। भारत की आबादी की 49 प्रतिशत महिलाओं को 33 प्रतिशत, राजनीतिक आरक्षण देने से संबंधित संविधान के संशोधन विधेयक का भी विरोध हो रहा है, कारण कुछ भी हो।

रूढ़िवादी लोग भारत को विश्व मान लेते हैं और प्रायः सोचते हैं कि भारत में प्रचलित व्यवस्था ही विश्व के देशों की भी व्यवस्था है। यह अज्ञानता का परिचायक है। इसी प्रकार हर धर्म के अनुयायी अपने धर्म के गुणों को ही जानते हैं, कमियों को जानने की इच्छा नहीं रखते हैं। इसीलिए शायद धर्म प्रगतिशील नहीं बन पाता है। किसी भी धर्म, नियम, कानून और संविधान को जबतक प्रगति की कसौटी पर नहीं परखा जायगा, तब तक वह न तो प्रगतिशील बन सकेगा और न ही कल्याणकारी। ऐसे प्रतिगामी धर्म पर बना समाज समय के साथ मिट जायेगा, यह सब सत्य है।

मनु ने मनुस्मृति में कहा है कि **"जो मनुष्य सभी प्राणियों में आत्म रूप से अपने आप को रखता है वह सब में समता को प्राप्त कर परम पद ब्रह्मत्व को पातः है।"**

एवं य सर्वभूतेषु पश्यत्यात्मानत्मना।
स सर्वसमतामेत्य ब्रह्माम्येति परं पद॥
(अध्याय 12-125)

मनुस्मृति का यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण सिद्धांत है। समता के लिए स्वयं को दूसरे के रूप में रखकर परखो। क्या आज ऐसा हो रहा है? शायद मनु ने भी ऐसा नहीं किया!

कानून, नियम, संविधान में समता का सिद्धान्त प्रतिवादित करना आसान काम नहीं है। यह बड़ा ही दुरूह और कठिन है। इसके लिए स्वार्थ के त्याग की आवश्यकता है। विवेक की आवश्यकता है। यह कार्य किसी एक व्यक्ति के वश का नहीं है। यह तभी संभव है जब समाज के हर वर्ग के विचारवान, ज्ञानी, विवेकवान सहिष्णु लोगों के प्रतिनिधित्व से बनी कोई संस्था हो। भारत के स्वतंत्र हाने के पूर्व से ही स्वाधीन भारत के संविधान की कल्पना की गई। तत्काल उपलब्ध ऐसे लोगों की संविधान समिति बनी। उसका प्रमुख डा० भीमराव आम्बेडकर को बनाया गया। समिति में जाने माने विधिवेत्ता, विचारक, विवेकवान, विचारशील, त्यागी लोगों को रखा गया और उनके द्वारा निर्मित संविधान को विश्व का सर्वश्रेष्ठ संविधान कहा गया। परन्तु वह संविधान भी भारतीय लोगों की आवश्यकताओं की संतुष्टि करने में सक्षम नहीं हो पा रहा है। मनुस्मृति में भी ऐसी ही संस्था की कल्पना की गई है। मनुस्मृति तैयार करने के बाद मनु को ऐसा लगा था कि उनके द्वारा बनाया गया संविधान या धर्मशास्त्र समाज के हर वर्ग के लिए कल्याणकारी नहीं बन पाया है।पर अब के सोचे होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत। फिर भी मनु ने निर्धारित कर दिया, कि भविष्य में संविधान का निर्माण कोई एक व्यक्ति नहीं करेगा, अपितु एक परिषद करेगी, जिसमें हर वर्ग का प्रतिनिधित्व हो। उन्होंने कहा "दस लोगों की एक धर्म परिषद **दशवरा**(संसद) का गठन करें अथवा दस के अभाव में तीन लोगों की **त्रयवरा** परिषद का गठन करें। यह परिषद जिस धर्म नियम की व्यवस्था करे उसे ही मानें, उसमें शंका न करे।" कुछ लोगों का कहना है कि **दश शिष्ट ब्राह्मणों** की दशवरा परिषद या तीन सदाचार युक्त ब्राह्मणों की त्रयवरा परिषद होती है। परन्तु यह सर्वमान्य नहीं है क्योंकि ब्राह्मण की परिभाषा ब्राह्मण जाति से नहीं है। ब्रह्मं जानाति इति ब्राह्मणः। और ब्रह्म को जानने का अधिकार हर किसी को है।

सम्पर्क-"आर्य निवास" 23,
आई०ए०एस०कॉलोनी,
किदवईपुरी, पटना

किसान...,
हमारी उन्नति के साथी

विश्व व्यापी भविष्य की ओर अग्रसर

भारत में हरित क्रांति की अग्रदूत एवं देश को उर्वरकों के उत्पादन के मामले में आत्म निर्भर बनाने के लिए वर्षों तक कार्य करने के उपरांत इफको नाइट्रोजीनस व फास्फेटिक उर्वरकों के उत्पादन व विपणन के क्षेत्र में विश्व की अग्रणीय संस्था के रूप में उभर कर सामने आई है।

किसानों की खुशहाली के लिए कार्य करते हुए तीन दशक से भी अधिक समय का सफर तय करने के बाद इफको उर्वरकों के उत्पादन में विश्व की अद्वितीय संस्था बन चुकी है।

इफको की बहुआयामी योजना 'विजन 2000' पूरी हो चुकी है। यह योजना उत्कृष्टता के लिए किये गये अथक प्रयासों से पूर्ण की गई है। इस योजना के अंतर्गत आंवला, फूलपुर, कलोल तथा कांडला संयंत्रों की क्षमता का विस्तार अनुमोदित लागत व निर्धारित समय के भीतर कर लिया गया है।

इफको ने अपने विकास के ऊँचे शिखर पर पहुँचने के लिए अब एक और पंचवर्षीय योजना 'मिशन 2005' बनायी है। इस योजना के अंतर्गत उत्पादन क्षमता को बढ़ाने, नये संयंत्रों की स्थापना करने, विदेशों में संयुक्त उद्यम स्थापित करने, विविधीकरण करने व हर स्तर पर सहकारिता आंदोलन को सुदृढ़ करने का लक्ष्य रखा गया है।

इफको ने सामान्य बीमा क्षेत्र में प्रवेश करने के प्रयोजन से जापान की टोकियो मैरीन एण्ड फायर इंश्योरेन्स कम्पनी लिमिटेड के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किये हैं।

इफको

इंडियन फारमर्स फर्टिलाइजर कोआपरेटिव लिमिटेड

34, नेहरू प्लेस, नई दिल्ली – 110 019

वैबसाइट : http://www.iffco.nic.in

प्रगति में सहायक

क्यों बढ़ रही है आत्महत्या की घातक प्रवृत्ति?

❑ डॉ० शुभंकर बनर्जी

यदि किसी के मन में आत्महत्या की बात आती है तो इसे रोकने के लिए समय पर उपाय करना काफी सराहनीय प्रयास कहला सकता है। अर्थात आत्महत्या के विचार या व्यवहार को गंभीरता से लिया जाना चाहिए।

दरअसल ऐसे विचार मन में आना भी एक प्रकार का मानसिक रोग ही है तथा इसकी अंतिम परिणति मृत्यु तक हो सकती है। यहां यह बात भी आवश्यक है कि जिस प्रकार से रोग होने पर उसका उपचार करना चाहिए उसी तरह से आत्महत्या करने की इच्छा मन में आने के लक्षण प्रकट होने पर भी तुरंत मनोवैज्ञानिक की सलाह लेनी चाहिए।

आश्चर्यजनक तथ्य यह भी है कि भारत में प्रति एक मिनट में एक आत्महत्या का प्रयास होता है। इसी प्रकार से हर सातवें मिनट में एक सफल आत्महत्या हो जाती है। आत्महत्या करने वाले 60 प्रतिशत लोग 30 वर्ष से कम आयुवर्ग के होते हैं। जबकि 40 प्रतिशत अठारह वर्ष से भी कम आयु वर्ग के होते हैं। केन्द्रीय समाज कल्याण बोर्ड की एक रिपोर्ट से यह तथ्य उजागर हुआ है। स्पष्ट है कि समाज से आत्महत्या की इस प्रवृत्ति पर रोक लगाना तथा इस दिशा में व्यापक जागृति लाने की तत्काल आवश्यकता भी आ गयी है।

इस सन्दर्भ में वैज्ञानिक संशोधन तथा सामाजिक सर्वे द्वारा किये गये एक आकलन के अनुसार कुल आत्महत्या करने वालों की संख्या का बहुत कम भाग ऐसा है जो पहले ही प्रयास में आत्महत्या करने में सफल रह पाता है। परंतु शेष सभी घटनाओं में 3 से लेकर 6 संख्या तक के प्रयास देखे गये हैं। स्पष्ट है कि इस प्रकार की घटनाओं की उपेक्षा न करके पर्याप्त गंभीरता से ली जाए तो ऐसी घटनाओं पर नियंत्रण भी प्राप्त किया जा सकता है।

साधारणत: आत्महत्या का प्रयास करने वाले ज्यादातर इस संशय में रह जाते हैं कि आखिरकार जीवित रहा जाए या नहीं! मनोचिकित्सकों का मत यह भी है कि आत्महत्या का निर्णय करने वाले लोग प्राय: अपने व्यवहार या बातचीत में प्रकट कर ही देते हैं कि उसके मन में ऐसा करने का ख्याल आ रहा है। उदाहरणत: आत्महत्या करने की धमकी देना, आत्महत्या करने के उपायों पर चर्चा या ऐसे विचारों पर बातचीत, दैनिक कार्यों (सोने, खाने, पीने आदि) में परिवर्तन, साधारण व्यवहार में एकाएक परिवर्तन, अपनी प्रिय वस्तुओं के प्रति लगाव में कमी या रुचि न लेना, प्राय: बेचैन रहना, निराशापूर्ण बातें करना, घृणास्पद भावना युक्त बातें करना, उदास तथा उद्‌देश्यहीन बातें करना, गहरी परंतु नासमझी वाली बातों पर चर्चा करना आदि ऐसी घटनाओं के प्रति सचेत करने वाले लक्षण हैं। अर्थात ऐसी चर्चा करने वाले व्यक्ति के प्रति सदैव सतर्कतापूर्ण दृष्टि रखनी चाहिए।

दरअसल आत्महत्या का विचार या व्यवहार भी किसी प्रकार का रोग होने का संकेत हो सकता है। न केवल सामाजिक-आर्थिक तथा पारिवारिक समस्या बल्कि कई बार अपने अनिश्चित भविष्य, असफल प्रेम संबंध, यौनविषयक संदेह, चरित्र दोष आदि भी ऐसी परिस्थितियां हैं जिसके कारण ऐसी भावनायें मन में उत्पन्न हो सकती हैं।

दरअसल आत्महत्या का विचार या व्यवहार भी किसी प्रकार का रोग होने का संकेत हो सकता है। न केवल सामाजिक-आर्थिक तथा पारिवारिक समस्या बल्कि कई बार अपने अनिश्चित भविष्य, असफल प्रेम संबंध, यौनविषयक संदेह, चरित्र दोष आदि भी ऐसी परिस्थितियां हैं जिसके कारण ऐसी भावनायें मन में उत्पन्न हो सकती हैं।

परंतु मानसिक रोगों (जैसे-स्किजोफ्रेनिया, डिप्रेशन, अकेलापन, हताशा इत्यादि) के कारण भी ऐसी भावनायें उत्पन्न हो सकती हैं। ऐसी गलत अवधारणा भी है कि आत्महत्या की बात करने वाले या ऐसी धमकी देने वाले आत्महत्या नहीं कर पाते हैं या ऐसा करने से पहले वे अवश्य चेतावनी देते हैं। इसी प्रकार से तनावग्रस्तता के कारण आत्महत्या की घटनायें होने का अर्थ यह भी कदापि नहीं है कि सभी ऐसी घटनाओं का कारण डिप्रेशन ही हो।

यहां यह बात भी उल्लेखनीय है कि शराबी होने के साथ भी आत्महत्या का कोई सीधा सम्बन्ध नहीं होता है। अर्थात शराबी या नशाखोरी से ग्रस्त व्यक्तिओं में से जो आत्महत्या करता है, उसके आत्महत्या का संबंध वास्तव में व्यसन से ही होता है। अधिकतर मामलों में आत्महत्या का प्रयास करने वाले व्यक्ति आगे भी इसी प्रकार की सोच से ग्रस्त रहता है।

वैसे तो साधारण तौर पर मानसिक तनावग्रस्तता के कारण ही आत्महत्या की घटनायें होती हैं, परंतु यह अनिवार्य रूप से आवश्यक भी नहीं है। यदि उसके तनाव की मात्रा थोड़ी सी हो तो उस स्थिति से उबरने के बाद पुन: वह सामान्य जीवन जी सकता है।

सम्पर्कः सचिव "शांति मिशन"
ए-46, सादतपुर, करावल नगर रोड, दिल्ली-110094

GOLDEN

GOLDEN POLYMEX (INDIA) LIMITED

Regd. Office :
Uma Shanker Lane, Mogalpura, Patna City-800008
Ph. : 640212, 640015, Fax : 0612-644525

Mfrs. Of :
High Barrier - Extruded Multilayar Films
H.M., LLDPE, LDPE Bags, Gravure
&
Flexo Printing etc.

भ्रष्टाचारियों की प्रतिष्ठा की पुनर्बहाली

विचार कार्यालय, दिल्ली

भारतीय राजनीति की यह विडम्बना है कि जो राजनेता कल तक भ्रष्ट व्यक्तियों के रूप में जाने जाते थे, धीरे-धीरे अब वे सभी व्यक्ति पुनः प्रतिष्ठित व्यक्तियों की श्रेणी में आते जा रहे हैं। एक समय था, जब भ्रष्टाचार की वजह से लांछित, निंदित और कभी-कभी न्यायपालिका के निचले स्तर से दंडित व्यक्ति हाशिए पर चले जाते थे और फिर उनके राजनीतिक जीवन का उत्थान मुश्किल से हो पाता था, लेकिन अब ऐसा नहीं हो पाता। क्यों कि भ्रष्टाचार के गंभीर आरोपों से घिरे व्यक्ति कुछ समय बाद पुनः राजनीति की मुख्य धारा में लौट आते जा रहे हैं। सत्ता की कुर्सी के लालच में जो राजनीतिक दल भ्रष्ट राजनेताओं की भर्त्सना करते नहीं अघाते थे, वे ही आज उन्हें गले लगाने में तनिक भी नहीं हिचकिचा रहे हैं। कारण कि उन्हें सत्ता की कुर्सी येन-केन प्रकारेण हथियाना है।

अन्नाद्रमुक की सुप्रीमों जयललिता का ही उदाहरण आप ले लें। उनपर अभी लगभग तीन दर्जन मुकदमे चल रहे हैं और वे सभी मामले भ्रष्टाचार से सम्बन्धित हैं। एक मामले में तो उन्हें सजा भी सुनाई जा चुकी है और अन्य मामले में उच्चतम न्यायालय ने उच्च न्यायालय, मद्रास के फैसले को खारिज करते हुए उनके खिलाफ मुकदमा चलाने के आदेश दिए हैं। यह मामला करीब 30 करोड़ रुपये के घोटाले का है। बावजूद इन सबके देश का सबसे बड़ा विपक्षी दल कांग्रेस तमिलनाडु विधान सभा के आसन्न चुनाव के लिए उनसे हाथ मिलाने को आतुर दिखे। जयललिता को केन्द्र बनाकर तमिलनाडु में ऐसी पार्टियां इकट्ठी हो रही हैं जो अन्यथा एक दूसरे को फूटी आँखों देखने को तैयार नहीं थीं। आपको याद होगा, पैरम्बदूर में राजीव गाँधी की हत्या के बाद जबकि तमिल टाइगरों के घोर समर्थक भी उनके खिलाफ हो गए थे, वन्नियार नेता डॉ० रामदास और उनकी पी० एम० के० पार्टी टाइगरों की समर्थक बनी रही। उन दिनों कांग्रेस और पी० एम० के० दोनों एक-दूसरे के आमने-सामने खड़े थे। क्या यह विचित्र नहीं कि आज कांग्रेस और पी० एम० के० फिर से एक ही पाले में पहुँच गयी है? इसी तरह तमिलनाडु की राजनीति में सबसे साफ सुथरे नेता माने जाने वाले मूपनार ने, जो पाँच साल पहले जब कांग्रेस विधान सभा चुनाव में जयललिता का साथ छोड़ने के लिए तैयार नहीं हुई थी तो मूपनार ने कांग्रेस से बाहर निकलकर अपनी नयी पार्टी तमिल मनीला कांग्रेस बना ली थी, क्योंकि जयललिता को वे एक भ्रष्ट राजनीतिज्ञ मानते थे। वही मूपनार की तमिल मनीला कांग्रेस जयललिता के साथ मिलकर चुनाव लड़ने को बेताब है। आज उन्हें भाजपा की साम्प्रदायिकता अधिक आपत्तिजनक लगती है बजाय जयललिता के भ्रष्टाचार के। आज की निर्लज्ज, लोलूप और स्वार्थी भारतीय राजनीति में चुनाव जीतने के फेरे में या यों कहा जाय कि कुर्सी हथियाने के चक्कर में कोई भी जयललिता के काले कारनामों का स्मरण नहीं करना चाहता, बल्कि उनकी गोद में बैठने को तैयार है। क्या यह जयललिता की प्रतिष्ठा की पुनर्बहाली नहीं कही जाएगी?

ठीक इसी प्रकार पूर्व केन्द्रीय मंत्री सुखराम, जिनके घर से सी० बी० आई० के छापे में 4 करोड़ रुपये की नकद राशि बरामद हुई थी और टेलिकॉम घोटाले में जो बेनकाब हो चुके थे, भाजपा की वजह से उनकी प्रतिष्ठा की पुनर्बहाली हुई। जयललिता और सुखराम की पंक्ति में माधवसिंह सोलंकी, बिहार के मुख्य मंत्री जगन्नाथ मिश्र, लालू प्रसाद को भी खड़ा किया जा सकता है। पशुचारा घोटाले के आरोपित तथा भ्रष्टाचार के मामले में चिर-परिचित जगन्नाथ मिश्र को न केवल अंगीकार करने में बल्कि उन्हें कार्यकारिणी के सदस्य मनोनीत करने में शरद पवार की राष्ट्रीय लोकतान्त्रिक पार्टी को तनिक भी हिचकिचाहट नहीं हुई। इसी प्रकार चारा घोटाले के सिरमौर लालू प्रसाद के राष्ट्रीय जनता दल के साथ कदमताल करने तथा राबड़ी मंत्रिमंडल में शामिल होने में कांग्रेस को कोई परेशानी नहीं दीखती। इसे आप भ्रष्टाचारियों की प्रतिष्ठा की पुनर्बहाली नहीं तो और क्या कहेंगे? भारतीय राजनीति की इसी विडम्बना का परिणाम है कि भ्रष्टाचार के गंभीर से गंभीर आरोपों का सामना करने वाले किसी भी राजनीतिज्ञ को कभी भी कठोर दण्ड नहीं दिया गया, चाहे वह हर्षद मेहता का हवाला काण्ड हो या सुखराम का टेलिकॉम घोटाला कांड, जयललिता का तांसीभूमि घोटाला कांड हो या फिर पशुचारा घोटाला। सांसद रिश्वत कांड में सूरज मण्डल, नरसिम्हा राव सरीखे बड़े-बड़े दिग्गजों का आखिर क्या बिगड़ा? न्यायपालिका के निचले स्तर पर उन्हें यदि कभी कोई सजा सुनाई गयी तो मामला ऊँची अदालतों तक पहुँचते-पहुँचते रफा-दफा हो जाता रहा।

यद्यपि घपले-घोटालों का सिलसिला लगातार बढ़ता चला जा रहा है किन्तु उसके जिम्मेदार राजनीतिज्ञ पता नहीं कैसे और क्यों सजा पाने से बचने में सफल हैं? ऐसा प्रतीत होता है कि न्यायिक सक्रियता का दौर समाप्त होता जा रहा है। कुछ समय पूर्व केन्द्रीय सतर्कता आयोग ने भ्रष्टाचार के खिलाफ कदम उठाते हुए भ्रष्ट माने जाने वाले सैकड़ों वरिष्ठ नौकरशाहों के नाम अपनी वेबसाइट में उजागरकर एक हलचल-सी मचा दी थी, पर न तो उनके आज वैसे तेवर नजर आ रहे हैं और न ही उस वेबसाइट की कहीं कोई चर्चा है। सचमुच यह दुखद स्थिति है। यह सच है कि राजनैतिक पार्टियां लोकतंत्र के लिए अपरिहार्य हैं किन्तु अच्छी कार्यपद्धति पर ही लोकतंत्र की सफलता निर्भर करती है। यदि ये दल अपने वैचारिक आधार पर दृढ़ रहते हुए लोकतान्त्रिक मर्यादाओं

शेष पृष्ठ 11 पर

जनसंख्या-नियंत्रण देश की मूलभूत समस्या

❑ दिलीप कुमार सिन्हा

मार्च, 2001 के अन्त तक देश की आबादी का 103 करोड़ तक पहुँच जाना चिन्ताजनक है क्योंकि जिस रफ्तार से आबादी बढ़ रही है उसकी तुलना में विकास नहीं हो पा रहा है। देश के अनेक क्षेत्र ऐसे हैं जहाँ आजादी के 54 वर्षों बाद भी विकास की किरणें अभी तक नहीं जा पाई हैं। पिछले एक दशक में हमारी जनसंख्या करीब 18 करोड़ बढ़ गई है। यह पूरे ब्राजील की आबादी के बराबर है या यूँ कहिए कि **ब्रिटेन, फ्रान्स, जर्मनी** और **स्पेन** चारों देशों को मिला दें तो जितनी आबादी होगी उतनी ही हमने केवल दस साल में बढ़ा दी है। अकेले उत्तरप्रदेश में जिस रफ्तार से आबादी बढ़ी है वह विश्व के कई राष्ट्रों से अधिक हो गई है। बिहार भी आबादी के मामले में तीसरे स्थान पर है किन्तु निरक्षरता के मामले में वह शीर्ष पर है। आखिर ये दोनों राज्य दक्षिण के तमिलनाडु तथा केरल राज्यों से कोई सबक क्यों नहीं लेते, जहाँ साक्षरता की वजह से आबादी की गति धिमी है।

हमें इस बात पर सदैव ध्यान रखना होगा कि जनसंख्या नियंत्रण का सीधा सम्बन्ध साक्षरता से है। इसलिए आबादी नियंत्रण कार्यक्रमों के साथ-साथ साक्षरता बढ़ाने के उपायों पर ध्यान देना जरूरी है। वास्तविकता यह है कि बढ़ती हुई आबादी के कारण उत्पन्न समस्याओं के प्रति आम जनता में जागरूकता का अभाव है। इसलिए जरूरत इस बात की है कि जनसंख्या नियंत्रण कार्यक्रमों के सन्दर्भ में पूरे राष्ट्र में एक नयी चेतना जब तक नहीं जाग्रत की जाएगी तो उत्तरप्रदेश और बिहार का खामियाजा सारे देश को भुगतना पड़ेगा।

विदित हो कि कभी **चीन** की आबादी हमारे देश की आबादी से करीब डेढ़ गुनी थी पर आज उसकी आबादी भारत से मात्र 23 करोड़ 80 लाख अधिक है। जहाँ आज भारत की आबादी एक अरब तीन करोड़ है वहीं चीन की जनसंख्या 1 अरब 26 करोड़ 80 लाख है। **संयुक्त राष्ट्र संघ** की एक रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 2050 तक **भारत** की जनसंख्या **चीन** की अनुमानित जनसंख्या 1.5 अरब को पारकर 1.6 अरब यानी अगले 50 साल में भारत जनसंख्या के मामले में चीन को कहीं पीछे छोड़ देगा और विश्व का सबसे अधिक जनसंख्या वाला देश हो जाएगा। विश्व की आबादी 9 अरब होगी। इस प्रकार विश्व का हर छठा इंसान भारत का होगा। एक घर में चार पीढ़ियाँ रहेंगी।

अब चीन जनसंख्या नियंत्रण के सख्त तरीके अपना रहा है और चीनी लोगों को **हम दो हमारा एक** का नारा दिया गया है। अब चीन ने आबादी बढ़ाने से तौबा कर ली है। आबादी पर नियंत्रण करने की वजह से विशेषज्ञों का मानना है कि अगले 25 वर्षों में आबादी के मामले में हमारा देश चीन को बहुत पीछे ढकेल देगा। चीन की सरकार ने तो कई राज्यों में बच्चा पैदा करने के लिए परमिट प्रणाली लागू कर दी है। बिना परमिट के बच्चा पैदा होते ही सरकारी कार्यवाही चालू हो जाती है। चीन में एक बच्चा प्रति दम्पति की पारिवारिक योजना लागू है। क्या भारत में ऐसा सम्भव है? यहाँ तो सत्ता की कुर्सी हथियाने के लिए वोट की राजनीति की जाती है। धार्मिक अन्धविश्वास ने भी जनसंख्या नियंत्रण में बाधा उपस्थित की है। हलांकि मुस्लिम समुदाय के पढ़े-लिखे लोगों में जनसंख्या नियंत्रण हेतु चलाए जा रहे कार्यक्रमों के प्रति जागरूकता काफी देखी जा रही है पर गरीबों तथा अनपढ़ लोगों में चाहे वे किसी सम्प्रदाय के हों अभी भी आबादी की गति जस की तस है।

सम्पर्क: बी.-84, शकरपुर, दिल्ली-92

शेष पृष्ठ-10 का ....

और सीमाओं के भीतर कार्य करते हैं तो इससे लोकतन्त्र का आधार मजबूत होगा। पर क्या वे आज वैसा कर रहे हैं? कतई नहीं। आज जिस प्रकार धड़ल्ले से कुर्सी हथियाने के लिए अपने सिद्धान्तों व विचारों की बलि ये दल दे रहे हैं उससे लोकतन्त्र मजबूत होने के बजाय कमजोर होता जा रहा है। प्राय: सभी दल वैचारिक और सांगठनिक दिशाहीनता की शिकार हैं तथा सत्ता की अंधी दौड़ में शामिल हो गए हैं। नतीजतन देश में हताशा का वातावरण है और जनता का राजनीतिक पार्टियों एवं उसके नेताओं से लगातार विश्वास उठता जा रहा है। ऐसी ही हताशा फासीवाद के लिए सबसे उपजाऊ जमीन का काम करती है।

चुनाव आयोग तथा विभिन्न उच्च न्यायालयों के आदेशों के मद्देनजर अन्नाद्रमुक की महासचिव सुश्री जे. जयललिता आज की परिस्थिति में तमिलनाडु विधान सभा का चुनाव लड़ने के लिए आयोग्य हैं।

भारतीय राजनीति की यह बिडम्बना ही कही जाएगी कि भ्रष्टाचार के आरोप में जेल आते-जाते रहने के बावजूद अपना राजनीतिक वर्चस्वकायम रखे हुए हैं। इन नेताओं में लालू प्रसाद यादव जयललिता तथा सुखराम का नाम सबसे ऊपर है।

सत्ता हथियाने की ललक ने आज के औसत राजनीतिज्ञों को सिद्धान्तहीन बना दिया है। अब न तो सिद्धान्तों की राजनीति की जा रही है और न ही मूल्यों की। अवसरवादिता और संकीर्णता दिन-प्रतिदिन बढ़ती ही चली जा रही है।

स्वच्छ छवि के जार्ज को जाना पड़ा जया के चलते

विचार कार्यालय, नई दिल्ली

जार्ज फर्नांडीस इस देश के ऐसे तपे-तपाए नेता हैं जो अपनी योग्यता,कर्मठता कौशल, प्रतिभा तथा अद्वितीय क्षमता के लिए चर्चित रहे हैं। भाजपा नीत केन्द्र की गठबन्धन सरकार की गाड़ी को अभी तक खिंचते जाने का मुख्य श्रेय उन्हीं को जाता है। जब कभी भी वाजपेयी सरकार के समक्ष

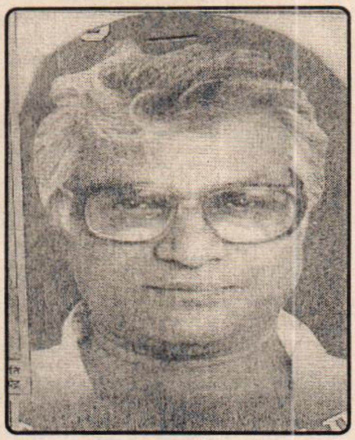

समक्ष खड़ी हुई, चाहे वह जयललिता से हो या ममता से तो उसके निदान निकालने का भार जार्ज के सबल कन्धों पर दिया गया और उन्होंने बखुबी उन समस्याओं का हल निकालने में अपनी निष्ठा का परिचय दिया। किन्तु दुर्भाग्य यह कि ऐसे निष्ठावान नेता की पिछले पचास वर्षों की राजनीतिक पूंजी को समता पार्टी की अध्यक्ष **जया जेटली** ने रक्षा सौदों की दलाली के सिलसिले में रक्षामंत्री के सरकारी आवास में ही दो लाख रुपये स्वीकार कर एक झटक में नष्ट कर डाला। इससे बढ़कर और आश्चर्यजनक घटना क्या हो सकती है कि देश की सुरक्षा की सर्वोच्च कमान सम्भालने वाले रक्षा मंत्री की यह कैसी चूक कि **तहलका डॉट कॉम** की एक मनगढ़न्त अन्तर्राष्ट्रीय कम्पनी सुरक्षा सौदों के बहाने रक्षा मंत्री के ही निवास में घुसकर कथित सौदा पटाने की बात उन्हीं की पार्टी की अध्यक्ष जया जेटली से करने का साहस करे? इसे जार्ज की जया के प्रति व्यक्तिगत कमजोरी कहें या और कुछ किन्तु यह सच है कि जार्ज की इसी व्यक्तिगत कमजोरी प्रतीत होती जया ने उनको और उनके दल **समता पार्टी** को अपूरणीय क्षति पहुँचाई है। जार्ज ऐसे कर्मठ नेता की सेवा से बहरहाल देश को वंचित कर दिया गया है। हलांकि यह सही है कि न तो तहलका टेप में जार्ज से कहीं लेन-देन की बात है और न ही रक्षा सौदे की चर्चा किन्तु **तहलका डॉट कॉम** द्वारा रक्षा सौदों की दलाली का जिस प्रकार पर्दाफाश किया गया उस परिस्थिति में जार्ज का रक्षा मंत्री पद से त्याग पत्र देना आवश्यक था। जो लोग यह कहते हैं कि उन्होंने त्याग पत्र देने में विलम्ब किया उन्हें यह स्मरण करना चाहिए कि तहलका द्वारा रक्षा सौदों की दलाली के रहस्योद्घाटन के तुरन्त बाद जार्ज फर्नांडीस ने प्रधानमंत्री से अपने त्याग पत्र की इच्छा जाहिर कर दी थी किन्तु अटल जी ने वैसा करने से उन्हें मना कर दिया था। इसलिए यह कहना कि यदि जार्ज प्रारम्भ में ही त्याग पत्र दे देते तो ममता बनर्जी राजग नहीं छोड़ती, न्यायोचित नहीं लगता। वैसे भी ममता जी महाजोट के तहत कांग्रेस से हाथ मिलाने को सदैव इच्छूक लग रही थी और इधर अटल जी ने भी ममता की रोज-रोज की किच-किच से पिंड छुड़ाने का मन बना लिया था और ममता की धमकी **मैं मैके चली जाऊँगी** से आजीज होकर जयललिता की भाँति उनकी भी छुट्टी कर दी।

> **जार्ज फर्नांडीस के पिछले पचास वर्षों की राजनीतिक पूंजी को समता पार्टी की अध्यक्ष जया जेटली ने रक्षा सौदों की दलाली के सिलसिले में रक्षामत्री के सरकारी आवास में ही दो लाख रुपये स्वीकार कर एक झटके में नष्ट कर डाला।**

खैर, जो हो, **जार्ज फर्नांडीस** की विश्वसनीयता, ईमानदारी, सादगी और पारदर्शिता रूपी जो अद्वितीय पूंजी अभी तक बच रही थी उसमें जया जेटली ने डाका डलवा दिया। तहलका की सफलता इस माने में कही जाएगी कि उसने जार्ज सरीखे निष्ठावान और दक्ष नेताओं को छलने के ख्याल से छद्म सौदों और पार्टी फन्ड के लिए समता पार्टी की अध्यक्ष जया जेटली और उसके कोषाध्यक्ष आर० के० जैन को पटाया। विदित हो कि आर० के० जैन पहले आर० एस० एस० तथा भाजपा के करीब थे। कहीं ऐसा तो नहीं कि यह साजिश बहुत पहले से आर० एस० एस० द्वारा रची गई हो क्योंकि प्रधानमंत्री अटल जी के अत्यन्त करीब और विश्वसनीय हो जाने की वजह से जार्ज भी आर० एस० एस० की आँख की किरकिरी हो गए थे।

इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि देश में अब तक हुए रक्षा मंत्रियों में जार्ज फर्नांडीस विशेषकर सैनिकों के बीच सर्वाधिक लोकप्रिय रक्षा मंत्री माने गए हैं। उन्होंने सैनिकों के साथ जैसा तादात्मय स्थापित किया वैसा इससे पहले कभी नहीं देखा गया। बीस हजार फिट की ऊंचाई पर बसे **सियाचिन,** जहाँ 25 डिग्री तक तापक्रम रहता है वहाँ के सैनिकों की खोज-खबर लेने जार्ज फर्नांडीस अपने छोटे से कार्यकाल में चौदह बार गए जबकि अबतक कोई रक्षा मंत्री वहाँ नहीं जा पाया था। यही नहीं जार्ज ने तमाम सीमाओं पर जाकर अग्रिम चौकियों तक का बार-बार भ्रमण किया

तथा रक्षा मंत्रालय के अधिकारियों को वहाँ जाने के लिए बाध्य किया। ऐसे रक्षा मंत्री का त्याग पत्र सचमुच देश के लिए दुर्भाग्य कहा जाएगा।

भारत के वर्तमान मुख्य सतर्कता आयुक्त **एन०विट्ठल** ने तहलका रहस्योद्घाटन के बाद दूरदर्शन को बताया था कि फर्नांडीस रक्षा सौदों में पारदर्शिता लाने के लिए ईमानदार उपाय कर रहे थे। उन्होंने कहा कि जहाँ तक मैं जानता हूँ उनके इरादे नेक हैं और वह व्यवस्था के सुधार में अधिक पारदर्शिता के लिए भरसक प्रयास करते रहे हैं। एन० विट्ठल जैसे मुख्य सतर्कता आयुक्त से इस तरह की टिप्पणी अपने आप में बड़ी महत्वपूर्ण मानी जानी चाहिए क्योंकि वह ईमानदारी के लिए संघर्षशील चरित्र रखनेवाले अधिकारी माने जाते हैं। वैसे भी जार्ज ने स्वत: अपने रक्षामंत्रित्व काल में 1989 से अबतक के 75 करोड़ रुपये की राशि के उपर सभी सौदों को केन्द्रीय सर्तकता आयोग की निगरानी और सर्वेक्षण के लिए सुपुर्द किया था। जिसकी ईमानदारी संदिग्ध हो, वह ऐसा कार्य नहीं कर सकता।

तहलका डॉट कॉम ने दलाली का रहस्योद्घाटन कर तहलका मचाया

बंगारू व जेटली पर रिश्वत लेने का आरोप

तहलका डॉट कॉम नामक वेबसाइट ने रक्षा के एक कथित दलाली का रहस्योद्घाटन कर सतारूढ़ राजनीति में तहलका मचा दिया है। भाजपा के अध्यक्ष **बंगारू लक्ष्मण** तथा समता पार्टी की अध्यक्ष **जया जेटली** सहित रक्षा मंत्रालय के कई वर्तमान एवं अवकाश प्राप्त अधिकारियों को

रक्षा सौदे के नाम पर रिश्वत लेते हुए खुफिया कैमरों में कैद किया गया है। **आपरेशन वेस्ट एंड** के नाम से यह सारा काम बड़े ही गुपचुप ढंग से किया गया और राजग सरकार के नेताओं, अधिकारियों और सौदा करानेवालों के बीच की साठ गांठ को उजागर करने के लिए उसे आठ महीने लगे। इस काम में पेशगी की रिश्वत के बतौर कम्पनी ने इन 34 नेताओं और नौकरशाहों पर 10 लाखा रुपये से

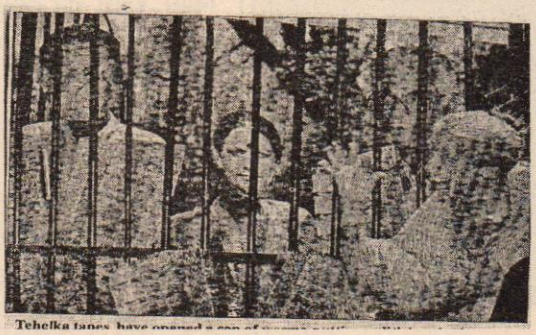

अधिक की राशि खर्च की। बताया गया है कि बंगारू लक्ष्मण ने पार्टी फंड के नाम एक लाख रुपये की राशि लेना स्वीकार कर लिया है तथा रक्षा मंत्री जार्ज फर्नांडीस की बेहद करीबी समझी जाने वाली समता पार्टी की अध्यक्ष जया जेटली को श्री फर्नांडीस के कृष्णमेनन मार्ग स्थित सरकारी आवास पर पार्टी के काम के लिए उपरोक्त कम्पनी के **प्रतिनिधि** से दो लाख रुपये लेते हुए दिखाया गया है। समता पार्टी के कोषाध्यक्ष आर० के० जैन को तहलका की टीम ने 50 हजार रुपये दिए थे। उसने टेप में स्वीकार किया है कि उसने रक्षा सौदे के जरिए पार्टी के लिए 50 करोड़ रुपये एकत्र किए जबकि दस करोड़ रुपये कमीशन के बतौर उसने स्वयं अपने पास रख लिए थे।

इस रहस्योद्घाटन के जवाब में प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए भाजपा के अध्यक्ष बंगारू लक्ष्मण ने कहा कि दलित समाज से आने की वजह से उन्हें एक सुनियोजित षडयंत्र के तहत फंसाने और बदनाम करने की कोशिश की गयी है। समता पार्टी के प्रवक्ता द्वारा जारी एक विज्ञप्ति में कहा गया है कि समता पार्टी ने न तो किसी रक्षा सौदे को बढ़ावा दिया गया है और न ही रक्षा मंत्रालय के किसी काम में दखल दिया है। प्रधानमंत्री अटल जी के रुख को देखते हुए बंगारू लक्ष्मण ने भाजपा के अध्यक्ष पद से त्याग पत्र दे दिया है।

एक तरफ, देश की सीमाओं की रक्षा में तैनात सैनिक मामूली से वेतन के लिए तरसते हैं और दूसरी तरफ सत्ता और राजनीति के गलियारों में बैठे लोग सेना के काम आने वाले आवश्यक साजोसामान के लिए हाथों-हाथ करोड़ों रुपयों का वारा-न्यारा कर लेते हैं। और उसपर भी तुर्रा यह कि राजनेता अपने को दलित कहकर इसे साजिश की संज्ञा दे रहे हैं।

ऐसा लगता है कि दलित समाज के सदस्यों को रिश्वत लेने की छूट दे दी जानी चाहिए। क्रिकेट कप्तान अजहर पर जब मैच फिक्सिंग के तहत रिश्वत लेने का आरोप लगा था तो वे अपने को अल्पसंख्यक समाज के होने के चलते उनपर साजिश किए जाने का उन्होंने आरोप लगाया था। उन्हें यह नहीं मालूम कि कानून सबसे लिए बराबर है। वह दलित और अल्पसंख्यक नहीं देखता। इसी को कहते हैं **चोरी और सीनाजोरी।**

तहलका डॉट कॉम ने आर० एस० एस० के ट्रस्टी आर० के० गुप्ता को भी अपने जाल में लपेटा है। बताया गया है कि गुप्ता ने प्रधानमंत्री से अपनी घनिष्टता बताकर कमीशन के हिस्से के तौर पर करोड़ों रुपये भाजपा के कोष में देते हैं। गुप्ता हाल में हुए सखोई सौदे में भी दलाल थे और वे सीधे प्रधानमंत्री कार्यालय के जरिए अपनी गतिविधियां संचालित करते हैं। इस डॉट कॉम के प्रधान सम्पादक तरुण तेजपाल ने कहा है कि उन्होंने रक्षा सौदे में दलाली प्रकरण का पर्दाफाश इसलिए किया क्योंकि इस क्षेत्र को राजनेता, हथियारों के सौदागर और सेना के आला अफसर दुधारू गाय के रूप में इस्तेमाल करते रहे हैं।

विचार कार्यालय, नई दिल्ली

तहलका डॉट कॉम के साहसिक कदम

जिस प्रकार इस बार **तहलका डॉट कॉम** ने भाजपा नीत राजग सरकार के नेताओं, नौकरशाहों व सैन्य अधिकारियों के भ्रष्टाचार के खिलाफ धावा बोला है उसी प्रकार पिछली बार **तहलका** वालों ने क्रिकेट मैच फिक्सिंग घोटालों पर से पर्दा उठाया था। उनके प्रयासों से ऐसा लगता है कि **तहलका** वालों का उद्देश्य भ्रष्टाचार पर हमला कर उसे समाप्त करना है। चूंकि **तहलका** वालों ने समाज में शुचिता लाने का बीड़ा उठाया है इसलिए वे जरूर कुछ अग्नि परीक्षाओं से गुजरने को तैयार होंगे।

वस्तुत: पत्रकारिता का मुख्य उद्देश्य भी तो लोकतन्त्र की धूल को झाड़ लगाते रहना है। सच्चाई को जनता तक लाना ही पत्रकारिता का मुख्य उद्देश्य होता है भले ही यह तहलका का पूरा प्रकरण एक मनगठन्त कहानी या नाटक ही क्यों न हो। नाटककार या कहानीकार का भी तो मुख्य उद्देश्य अपने नाटक या कहानी के माध्यम से सच्चाई पर से पर्दा को हटाना ही होता है। तहलका के पत्रकारों ने भी उसी प्रकार अपने टेप के माध्यम से देश के नेताओं के चरित्र को उजागर किया और उनकी ईमानदारी के मुखौटे को उतार फेंका है। तहलका डॉट कॉम ने जिस तरह भारतीय राजनीति में व्याप्त भ्रष्टाचार का पर्दाफाश किया, वह पत्रकारिता से जुड़े हर किसी के लिए गर्व की बात है। हर्ष की बात तो यह है कि इस काम के लिए न तो तहलका को जमीन की जरूरत हुई और न तो अन्य कोई सरकारी सुविधा। उसके रिपोर्टरों ने जिस तरह अपनी जान जोखिम में डालकर इस **महाघोटाले** को उजागर किया है वह वाकई में काबिले तारीफ है। **तहलका डॉट कॉम** ने जो साक्ष्य पेश किए हैं, उनसे बड़े-बड़े राजनीतिज्ञ भी सन्देह के घेरे में आ गए हैं। इन्हीं राजनेताओं के कारनामों की वजह से लोकतन्त्र की गरिमा नष्ट हो रही है।

को बड़ छोट कहत अपराधू---

विचार संवाददाता, दिल्ली

यह बात ठीक है कि **तहलका डॉट कॉम** के बेवसाइट ने रक्षा सौदों की दलाली का भंडाफोड़ कर न केवल देश के सबसे उपरी सरकारी तंत्र में व्याप्त भ्रष्टाचार को उजागर किया है बल्कि विश्व के सबसे बड़े लोकतन्त्रात्मक देश के सबसे बड़ी सत्तारूढ़ राजनीतिक पार्टी **भाजपा** तथा उसके घटक दल **समता पार्टी** के शीर्ष पर विराजमान नेता अपने देश की रक्षा से सम्बन्धित सौदा करने के लिए रिश्वत की राशि लेते दिखलाया है, जो इस देश के लिए बड़े शर्म की बात है किन्तु जिस प्रकार प्रमुख विपक्षी दल कांग्रेस तथा राजद जैसी पार्टियों ने सरकार से इस्तीफे की मांग करते हुए अलोकतान्त्रिक तरीके से सरकार गिराने के लिए संसद में शोर-शराबा करती रही और आठ दिनों तक संसद की कार्यवाही को ठप्प रखा उन्हें अपने अतीत को झांकते हुए लोकतान्त्रिक व न्यायिक प्रक्रिया को भी जानने का प्रयास करना

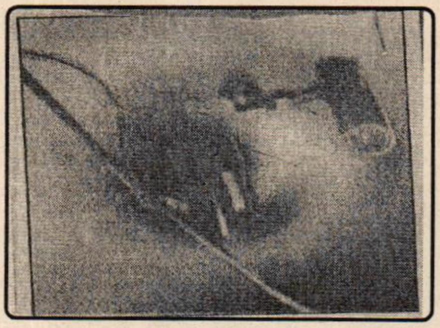

चाहिए था। नेहरू सरकार के मंत्री **के० डी० मालवीय** तथा मुद्राकांड के वक्त **टी० टी० कृष्णामचारी** ने जाँच के बाद दोषी सिद्ध होने की स्थिति में इस्तीफा दिया था, किन्तु नेहरू सरकार को गिराया नहीं गया था। फिर जीप, यूरिया, बोफोर्स तथा चारा जैसे घोटाले में लिप्त विपक्षी दलों के नेताओं को अपने दामन में लगे दाग पर नजर डालनी चाहिए। उन्हें यह नहीं भूलना चाहिए कि भ्रष्टाचार की शुरूआत आजाद भारत में **नेहरू** के प्रधानमंत्रित्व काल में हुई थी और उनकी लाड़ली **इन्दिरा जी** ने सत्ता के लिए भ्रष्टाचार को बहुआयामी रूप दिया और सिलसिला रूका नहीं, इन्दिरा जी के सुपुत्र **राजीव गाँधी** के प्रधानमंत्रित्व काल में बोफोर्स की दलाली का भंडाफोड़ हुआ जिसकी जाँच पिछले एक दशक से अभी भी लम्बित है। यहाँ तक कि चुनावों में भ्रष्टाचार का प्रवेश करवा के उन्होंने भारतीय लोकतन्त्र की रीढ़ ही तोड़ दी। सत्ता पक्ष हो या प्रतिपक्ष सबका नारा एक ही **है-सत्ता का सुख स्वयं भोगो, हमें भी भोगने दो।** प्राय: सभी राजनीतिक दलों ने अपनी विश्वसनीयता खो दी है। शायद वर्तमान नेतृत्व से निराश, हताश और उससे घृणा करने की स्थिति तक पहुँच रहा प्रबुद्ध भारतीय जनमानस कुछ करिश्मा कर दिखाए।

नेताओं को यह नहीं भूलना चाहिए कि यह भारतीय सेना ही है जिसने देश की एकता और अखण्डता को पिछले 54 वर्षों से कायम रखा है और सीमाओं पर आज भी बड़ी कठिन परिस्थितियों में जिम्मेदारी निभा रहे हैं। अभी हाल के कारगिल युद्ध में हमारे जांवाज वीर सैनिकों और सैन्य अधिकारियों ने अपनी जान को हथेली पर रखकर जिस बुलन्द हौसले से विजय हासिल की वह भी भीषणतम कठिन चुनौतियों के समक्ष भारतीय सेना का एक अविस्मरणीय कीर्तिमान है। आज उसी सुरक्षा व्यवस्था के बारे में तहलका टेप से भ्रम फैला है। निश्चय ही इससे सेना के मनोबल पर भी असर पड़ा है। लेकिन दुर्भाग्य से इस दौर में भारतीय राजनीति एक ऐसे मुहाने पर पहुँच गयी है जहाँ सुरक्षा हितों को भी ताक पर रखकर दलीय हितों की आराधना की जाती है। अलबत्ता तहलका टेप की बातों के जरिए यह जरूर प्रकट हुआ कि भारत की राजनीतिक और सुरक्षा से सम्बन्धित लोगों तक नाटकीय पात्रों और दलालों का पहुँचना कितना आसान है।

अदालत की अवहेलना

राजधानी दिल्ली को प्रदूषण समस्या से मुक्ति दिलाने के लिए उच्चत्तम न्यायालय द्वारा दिल्ली की सड़कों पर मात्र सीएनजी बसों की बाध्यता के फैसले ने दिल्ली सरकार और सुप्रीम कोर्ट के बीच जो टकराव की स्थिति पैदा कर दी वह भारतीय लोकतन्त्र के लिए खतरनाक संकेत है। जब किसी राज्य के मुख्यमंत्री द्वारा न्यायालय के आदेशों की इस तरह खुल्लमखुल्ला अवहेलना करना शुरू किया जाएगा तो न्यायिक व्यवस्था का क्या औचित्य रह जाएगा।

पिछले दिनों सर्वोच्च न्यायालय द्वारा व्यावसायिक वाहनों को सीएनजी में परिवर्तित करने के आदेश को 31 मार्च, 2001 तक लागू करने के बजाय दिल्ली की मुख्यमंत्री तथा परिवहन मंत्री ने उस आदेश की स्पष्ट अवहेलना करते हुऐ जिस प्रकार यह घोषणा कर दी कि जिन लोगों ने सर्वोच्च न्यायालय में सीएनजी वाहन खरीदने सम्बन्धी हलफनामा दायर कर दिया है वे उसी आधार पर बिना विशेष परमिट के भी व्यावसायिक वाहन 15 अप्रील तक चला सकते हैं आखिर क्या दर्शाता है। विदित हो कि उच्चत्तम न्यायालय ने 28 जुलाई,1998 को ही व्यावसायिक वाहनों को सीएनजी में परिवर्तित करने का आदेश दिया था। तो इन दो वर्षो में सरकार अकर्मण्य क्यों बनी रही, जिसकी वजह से यह भयंकर समस्या खड़ी हो गयी।

हालांकि सर्वोच्च न्यायालय द्वारा 14 अप्रील तक सीएनजी वाहनों में बदलने के आदेश से आम नागरिकों को थोड़ी राहत मिली परन्तु दिल्ली सरकार के रवैए पर उसने अपनी कड़ी नाराजगी भी जतायी। राज्य सरकारों की इस प्रवृति पर रोक लगनी चाहिए ताकि भविष्य में कोई इस तरह की हिम्मत न कर सके अन्यथा अदालत पर से भी लोगों का भरोसा जाता रहेगा।

सुप्रीम कोर्ट का फैसला

सुप्रीम कोर्ट ने फैसला सुनाया है कि वे पुरुष तलाक देने के अधिकार से वंचित होंगे जो पत्नी के उनके व्यभिचार, प्रताड़ित करने के कारण उनसे अलग रह रही हो। पति को इस आधार पर तलाक नहीं दी जा सकती की वो हमारे साथ नहीं रही है।

दिल्ली में सीएनजी का दूरगामी प्रभाव

❑ ज्ञानेन्द्र नारायण सिंह

दिल्ली को प्रदूषण मुक्त करने के प्रयास में उच्चत्तम न्यायालय द्वारा प्रदूषण कारी उद्योगों को सील करने तथा डीजल बसों को सड़क से हटाने और सी० एन० जी० बसों के परिचालन की बाध्यता लागू करने के दो फौसले से शहर में अफरा-तफरी मच गई। इससे न केवल दिल्ली प्रशासक को परेशानी उठानी पड़ी बल्कि दिल्ली की काफी बड़ी संख्या में लोग प्रभावित हुए। न्यायालय का फैसला एक अप्रील से प्रभावी होने के बाद से ही एकाएक करीब दो-तिहाई वाहनों के कम हो जाने से वहाँ के नागरिकों की विवशता और उनकी परेशानी अवर्णनीय है। सड़कों पर एक अजीब किस्म का खालीपन पसार गया। नागरिकों की परेशानी का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि महानगर में चल रही कल 14 हजार बसों में से मात्र ढाई हजार बसें ही सड़को पर उतरीं। परिणाम यह हुआ कि दिल्लीवासियों के सब्र का बाँध टूटते ही वे हिंसा पर उतर आए और दिल्ली परिवहन की लड़खड़ाई व्यवस्था के खिलाफ लोगों का गुस्सा आगजनी, चक्काजाम, पथराव व हाथापाई के रूप में फूटा। बसें फूंकी गयी तथा दर्जनों क्षतिग्रस्त किए गए। भीड़ को नियंत्रित करने के लिए दिल्ली पुलिस को गोली चलानी पड़ी और कई जगह लाठीचार्ज भी हुआ। एक ओर जहाँ दिल्ली प्रशासन द्वारा सी० एन० जी० की कमी बताई गई वहीं भारत सरकार के पेट्रोलियम मंत्रालय ने सी० एन० जी० की कमी के इस दावे को नकारते हुए कहा कि दिल्ली में उपलब्ध सी० एन० जी० का केवल आधा हिस्सा ही प्रयोग हो रहा है। पेट्रोलियम मंत्री राम नाइक ने दावा किया कि इस समय दिल्ली में 68 पेट्रोल पम्पों पर सी० एन० जी० उपलब्ध हैं जबकि दो सी० एन० जी० स्टेशन तैयार होने वाले हैं और 6 स्टेशन अगले चार माह में तैयार हो जाएगे। उन्होंने बताया कि दिल्ली में इस समय प्रतिदिन 1,94,000 कि0 ग्रा0 गैस की आपूर्ति हो रही है। दरअसल दिल्ली की परिवहन व्यवस्था एकाएक चरमराने का

एक कारण यह भी था कि केन्द्र सरकार पर काबिज भाजपा और दिल्ली की कांग्रेसी सरकार जननीवन के इन त्रासद क्षणों में भी अपनी राजनीतिक बढ़त बनाने के लिए समस्या का समाधान निकालने के बजाय एक दूसरे पर छिंटाकशी में अधिक व्यस्त दिखे। नागरिकों की समस्या के त्वरित समाधान के प्रति किसी में भी उतनी बेचैनी नहीं पाई गई जो होनी चाहिए थी।

वैसे सच कहा जाय तो दिल्ली परिवहन निगम और निजी ओपरेटरों ने स्थिति से सामना कर लिया है क्योंकि सी० एन० जी० के लिए बुकिंग की संख्या काफी तेजी से बढ़ी। उच्चतम न्यायालय के कड़े रूख से नफा-नुकसान चाहे जिस तबके का चाहे जितना हुआ हो पर इतना अवश्य है कि यदि अदालत तुल जाए तो वह सरकार को लीक पर लाने के लिए मजबूर कर सकती है जिसके दूरगामी प्रभाव से इन्कार नहीं किया जा सकता।

पाँच राज्यों के चुनाव क्या कुछ गुल खिलाएगे?

निर्वाचन आयोग की घोषणानुसार आगामी 10 मई को **असम, केरल, पांडिचेरी, तमिलनाडु तथा प० बंगाल** इन पाँच राज्यों के विधान सभाओं के चुनाव होने को हैं। ये चुनाव इस दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं कि इसके नतीजे केन्द्र की वाजपेयी सरकार को प्रभावित कर सकते हैं। इन चुनावों के परिणाम कांग्रेस तथा भाजपा दोनों के लिए महत्व रखते हैं। यदि कांग्रेस विधान सभाओं में जीतती है तो वह केन्द्र में भी सत्ता के लिए दावा पेश करेगी और यदि **भाजपा** एवं उसके सहयोगी दलों की विजय होती है तो **कांग्रेस** व **लोकमोर्चा** में शामिल दलों ने तहलका प्रकरण के बाद जो जोश बनाया है उस पर अंकुश लग जाएंगे। परिणाम जाहे जो हो पर इतना तय है कि बोफोर्स तोप सौदे तथा **तहलका** के रक्षा सौदों की दलाली का रहस्योद्घाटन आसन्न चुनाव पर हावी रहेगा।

प० बंगाल के विधान सभा चुनाव के परिणाम पर भी बहुत कुछ निर्भर करेगा। **राजग** से हटने के बाद **ममता बनर्जी** की तृमूकां की जीत यदि हो जाती है तो वह भारतीय राजनीति में एक प्रखर शक्ति के रूप में उभरेगी और यदि मार्क्सवादी पुनः सत्ता में लौटते हैं तो **ज्योति बसु** ही एक मात्र ऐसे नेता होंगे जिनका चयन **तीसरे मोर्चे** के नेतत्व के लिए किया जा सकेगा क्योंकि तीसरे मोर्चे की शक्ति में इजाफा होगा। लगभग यही स्थिति **तमिलनाडु** के साथ भी है। तमिलनाडु की सत्ता पर मौजूद **द्रमुक गठबन्धन** की जीत होने पर राजग की स्थिति मजबूत होगी और **जयललिता** के नेतत्व में **अन्नाद्रमुक गठबन्धन** की जीत से विपक्ष का मनोबल बढ़ेगा। इस बात में कतई सन्देह नहीं कि **करुणानिधि** की चिर वैरी **जयललिता** की **अन्नाद्रमुक गठबंधन** में वान्नियार जाति में असर रखने वाले नेता और जातिगत राजनीति के ध्वजवाहक **एस० रामदास** के जा मिलने से जयललिता की स्थिति थोड़ी मजबूत हुई है। किंतु जातिविहीन समाज के प्रति समर्पित द्रमुक गठबंधन भी कमजोर पड़ जाएगी यह कहना कठिन है। इन सबके बावजूद यह कहा नहीं जा सकता कि राजनीति कब क्या करवट लेगी। पर यह बात तो सच है कि रक्षा सौदों की दलाली का भंडाफोड़ होने के बाद केन्द्र की सरकार अस्थिर सी लगने लगी है ।

चिदम्बरम तमकां से निलम्बित

तमिल मनीला कांग्रेस कार्यकारिणी ने पार्टी विरोधी गतिविधियों के लिए उसके नेता, को निलम्बित करने का फैसला किया है। भारत के पूर्व वित्त मंत्री तथा दक्षिण भारत के तेज़-तर्रार राजनीतिज्ञ **पी० चिदम्बरम** अन्नाद्रमुक गठबन्धन के प्रारम्भ से ही विरोधी रहे हैं। उन्होंने तमिलनाडु विधान सभा के तीन उपचुनावों का फरवरी 2000 में अनाद्रमुक को समर्थन देने का विरोध तो किया ही था, फरवरी, 2001 में भी अन्नाद्रमुक के गठबन्धन में शामिल होने के वक्त हुई बातचीत में भी उसके घटक दलों को स्पष्ट कह दिया था कि वे अन्नाद्रमुक के लिए कभी भी प्रचार नहीं करेंगे। आसन्न विधान सभा चुनाव के लिए अन्नाद्रमुक की ओर से तमकां को मात्र 32 तथा कांग्रेस को 15 सीटें जाने पर चिदम्बरम ने अपने नेता मूपनार को उस गठबन्धन में शामिल होने पर पुनर्विचार करने का आग्रह किया था किन्तु मूपनार ने उनकी एक न मानी। फलतः चिदम्बरम ने **तमकां लोकतान्त्रिक मंच** की स्थापना कर जयललिता का विराध करते हुए द्रमुक मोर्चा के लिए प्रचार करने का मन बनाया।

सेवानिवृति योजना से तहलका

विचार संवाददाता, नई दिल्ली से

विश्व बैंक और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष के दबाव में केन्द्र सरकार द्वारा थोपी गई तुगलकी आर्थिक नीतियों की वजह से राष्ट्रीयकृत बैंकों को लेने के देने पड़ गए हैं। अफरा-तफरी में लागू की गयी **स्वैच्छिक सेवा निवृति योजना** (वी. आर. एस.) के परिणामस्वरूप 31 मार्च, 2001 को लगभग 1.25 लाख कर्मचारियों के सेवा निवृत होने से बैंकों के सामने इसके संचालन की समस्या खड़ी हो गयी है और प्रबन्धकों के होश उड़ गए हैं। 31 मार्च के बाद वे जनसुविधाएं के कांउटर चलाने में असमर्थ हैं और कर्मचारी न होने के कारण आयकर, बिक्रीकर, सम्पदा शुल्क, टेलीफोन बिल, बिजली का बिल लेने जैसे जन सुविधा कांउटरों को बन्द किए जाने की संभावना उत्पन्न हो गयी है। इनसे बैंकों का काम-काज भयंकर रूप से प्रभावित हो रहा है बताया गया है कि बैकों के उच्चधिकारी की बातें नहीं मानने का ही यह परिणाम है कि लक्ष्य से ज्यादा वी० आर० एस के आवेदन मिले। आवेदन पारित हो जाने के बाद इन अधिकारियों व कर्मचारियों ने अपने पिछले बचे अवकाश लेकर घर बैठ गए, जिससे बैंकों का काम प्रभावित हो गया। दूसरी ओर इस योजना को लागू करने से कर्मचारियों के भविष्य निधि तथा उपादान राशि का भुगतान करने में बैंकों को 8750 करोड़ रुपये देने पड़े हैं जिससे बैंकों की आर्थिक स्थिति भी प्रभावित हुई है।

दिल्ली सबसे खराब महानगर रहने के लिहाज से

विचार संवाददाता, नई दिल्ली से

अन्तर्राष्ट्रीय रोजगार परामर्शदात्री कम्पनी **विलियम एम मर्करे** के एक ताजा सर्वेक्षण से यह तथ्य उभरकर सामने आया है कि रहने के लिहाज से भारत की राजधानी **दिल्ली** सबसे खराब महानगरों की सूची में शामिल है। दुनिया के विभिन्न महानगरों में **वेंकुवर और जयूरिख** रहने के लिहाज से अव्वल नम्बर पर है। आस्ट्रेलिया के प्रमुख बन्दरगाह शहर **सिडनी** को रहने योग्य पसंदीदा महानगरों में एक बताया गया है। उक्त सर्वेक्षण में कुल शामिल 215 महानगरों में सिडनी 105 अंकों के साथ **सिडनी** चौथे नम्बर पर तथा यूरोप के दो शहर **जेनेवा** और **कोपनहेगन** भी सिडनी के साथ चौथे नम्बर पर हैं। दिल्ली को 48 अंक और बंगला देश की राजधानी **ढाका** को 47 अंक मिला है। सर्वेक्षण के अनुसार भारत में **मुंबई** और **बंगलूर** रहने के लिहाज से सबसे अच्छे महानगर हैं जिसे क्रमशः 56 और 54 अंक दिए गए हैं।

बैकों में स्वैच्छिक

हर्षद मेहता के बाद अब पारेख शेयर धोटाला

भारतीय शेयर बाजार ने दो बड़े घोटालों का सामना किया। आज से लगभग 9 वर्ष पूर्व 23 अप्रील,1992 को **हर्षद मेहता** पर बैंकर्स रसीद की गड़बड़ी कर शेयर बाजार में पैसा लगाने का आरोप लगा। उस समय इस घोटाले के चलते बैंकों को 4100 करोड़ रुपयों का नुकसान हुआ और आम निवेशकों को कई-कई करोड़ का। उस समय हिन्दुस्तान मोटर, अपोलो टायर, एसीसी, जे के सिंथेटिक्स आदि हर्षद मेहता के मोहरे थे। इस बार मार्च, 2001 में हुआ **केतन पारेख शेयर घोटाला कांड**। इस कांड में केतन पारेख ने **माधवपुरा मर्केंटाइल कोओपरेटीव बैंक** की मांडवी शाखा से पे आर्डर लेकर इस का इस्तेमाल बाजार में किया और ग्लौबल ट्रस्ट बैंक, हिन्दुजा फाइनेंस, डीएसक्यू साफ्टवेयर आदि नई अर्थव्यवस्था वाले शेयरों में पैसा लगाया। सिर्फ बैंक ऑफ इंडिया से 2200 करोड़ रुपऐ कि हेराफेरी की। उसके खातेदारो के 720 करोड़ रुपऐ अब लापता हैं । स्पष्ट है कि हर्षद मेहता से लेकर केतन पारेख ने बैंक प्रणाली की कमजोरी का लाभ उठाया है। इसलिए बदली परिसिथति में देश के बैंकिग उघोग में चल रहे नियम कायदों की पुन: समीक्षा की जानी चाहिए। क्योंकि केतन की गिरफ्तारी के बाद बाजार से गायब निवेशकों की स्थिति ने शेयर बाजार के भविष्य पर एक सवाल भी खड़ाकर दिया है। इन निवेशकों को बाजार में वापस किस तरह लाया जाए यह भी एक बड़ी समस्या है। हलाकि निवेशकों को यह नहीं भूलना चाहिए कि शेयर बाजार एक चक्का है जहाँ उतार-चढ़ाव दोनों आना है। जरूरत है बाजार घटने पर सही शेयरो को चुनना और बाजार चढ़ने पर और ज्यादा की लालच छोड़कर जल्दी से शेयर बेचकर मुनाफा कमाने की। जो निवेशक लालच में आकर बाजार के उच्चतम स्तर को छुने की कोशिश करता है उसको शेयर बाजार से नुकसान हो सकता है। शेयर बाजार में जोखिम है लेकिन सोच समझकर किया गया निवेश फायदा पहुँचा सकता है।

बिहार के मंत्री ददन पहलवान की सहृदयता

विचार संवाददाता, पटना

आज भारतीय राजनीति से कदमताल करती बिहार की राजनीति में भी जहाँ नैतिकता की गिराबट व सिद्धान्तहीनता की बात धड़ल्ले से की जा रही है वहीं बिहार मंत्रिमंडल के वाणिज्य कर राज्य मंत्री **ददन पहलवान** ने पटना जंक्शन में लावारिस पड़े एक नवजात शिशु के प्रति अपनी सहृदयता और अपने मानवीय व्यवहार का परिचय देकर यह सिद्ध कर दिया है कि राजनीति के उँचे शिखर पर पहुँचने वालों का दिल भी द्रवित होता है आम जन की पीड़ी से उनका भी दिल धड़कता और पिघलता है किसी की आँखों में आंसू देखकर । हुआ यों कि लालकिला एक्सप्रेस से अपने गृह जिला बक्सर जाने के कम में पटना जंक्सन पर पड़े लावारिस नवजात शिशु पर मंत्री श्री पहलवान की नजर ज़ब पड़ी तो अपनी यात्रा रद्द कर वे उसे अपने आवास ले आए। वहां उनके ड्राइवर **सुभाष पासवान** ने उसे गोद ले लिया और उस बच्चे की परवरिश के लिए न केवल मंत्री जी ने एक बकरी की व्यवस्था कर दी बल्कि नवजात शिशु के भरण-पोषण के लिए आर्थिक सहायता प्रदान करने की घोषणा भी की। विधाता का विधान भी विचित्र है। सामाजिक बंधनों व मर्यादाओं के चलते जिस बच्चे की माँ ने उसे प्लेटफार्म पर लावारिस छोड़ दिया जगन्नियंता ने उसे पालनेवाले को भी भेज दिया। कुदरत का यही खेल तो निराला है जिसे लोग आज तक नहीं समझ पा रहे हैं।

ब्रजेश विवाद के घेरे में मुश्किल में प्रधानमंत्री

आमतौर यह कहा जाता है कि यदि किसी को रातों-रात बेहिसाब दौलत मिल जाए तो वह बौरा जाता है। भारतीय विदेश सेवा के पूर्व अधिकारी **ब्रजेश मिश्र** की भी बहुत कुछ ऐसी ही स्थिति प्रतीत होती है।। विदेश सेवा में अपनी सेवा पूरी करने के पश्चात् बेरोजगार बैठे ब्रजेश को अटल जी ने कुर्सी सम्भालते ही अपनी वयक्तिगत पसन्द के कारण पहले तो अपना मुख्य सचिव बना दिया फिर छहमाह बाद ही वे राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार हो गए। फिर तो बस पूछिये मत। **श्रीमती इन्दिरा जी** के जमाने में **आर० के० धवन** की जो हैसियत थी कि वे किसी भी मंत्री को एक फोन कर कोई भी काम करवा लेते थे सिर्फ यह कहकर कि **मैडम ऐसा चाहती हैं या उनकी ऐसी इच्छा है**, मिश्रा जी का भी कद उतना ही बढ़ गया। तमाम छोटे-बड़े अधिकारियों की नियुक्तियाँ मिश्रा की मर्जी से हुई बताई जाती है। कहा तो यहाँ तक जाता है कि इस हस्ती ने विदेश तक को हाइजैक कर रखा है। हो भी क्यों नहीं, मिश्रा जी अटल जी के साथ अक्सर जलपान और खाना जो करते हैं। आज की तारीख में अनेक मंत्री ब्रजेश मिश्रा से हिसाब चुकता करने के मूड में हैं,क्योंकि उन्होंने करीब करीब हर मंत्रालय के कामकाज में दखल देने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। आर० एस० एस० तथा उसके प्रमुख **सुदर्शन**,, शिवसेना प्रमुख **बाल ठाकरे** तथा धटक दल **समता पार्टी** के रूख को देखते हुए स्वयं प्रधानमंत्री भी श्री मिश्रा के चलते सबसे अधिक मुश्किल में पड़ गए हैं भले ही वे इसका इजहार न कर रहे हों।

विचार संवाददाता, नई दिल्ली

काश! प्रधानमंत्री शादी-शुदा होते

प्रख्यात हास्य कवि **सुरेन्द्र शर्मा** के अनुसार यदि भारत के प्रधान मंत्री की शादी हो गयी होती तो कदाचित आज उन्हें जितनी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है, उनसे, उन्हें मुक्ति मिल जाती। नई दिल्ली में पिछले दिनों गुजरात भूकम्प पीड़ितों के सहायतार्थ आयोजित एक कार्यक्रम में, जिसमें अटल जी स्वयं मौजूद थे, देश भर में अपनी **चार लाइनों** की कविता के लिए मशहूर हास्य कवि श्री शर्मा ने प्रधानमंत्री को शादी के महत्व के बारे में तफसील से बताया। उन्होंने कहा कि जबसे **अटल बिहारी वाजपेयी** ने केन्द्र में प्रधानमंत्री की गद्दी सम्भाली है किसी न किसी महिला राजनीतिज्ञ से पीड़ित रहे हैं। पूर्व में अन्नाद्रमुक की महासचिव **सुश्री जयललिता** से तंग आकर अटल जी ने पिंड छुड़ाया। फिर इधर तृणमूल कांग्रेस की अध्यक्ष तथा रेलमंत्री **सुश्री ममता** जी से आजीज होकर प्रधानमंत्री ने उन्हें किनारा किया। आश्यर्च तो यह कि दोनों महिला राजनीतिज्ञ अविवाहिता हैं फिर भी उनसे अटल जी का नहीं पटा। कवि श्री शर्मा का कहना था कि यदि वाजपेयी शादी-शुदा होते तो इस समय महिला राजनीतिज्ञों द्वारा पैदा की जा रही समस्याओं से बच जाते क्योंकि घर में मौजूद पत्नी वाजपेयी के लिए ऐसी समस्याओं को आसानी से समाप्त कर देती। शर्मा जी को यह मालूम होना चाहिए कि प्रधानमंत्री अटल जी अकेले ऐसे व्यक्ति नहीं हैं जो अक्सर महिला राजनीतिज्ञों द्वारा किसी न किसी समस्या में फंसते रहे हैं, उनके मंत्रिमण्डल के वरिष्ठ सहयोगी राजग के संयोजक **जार्ज फर्नांडीस** को भी अपनी पार्टी की अध्यक्ष **जया जेटली** की कारगुजारियों के चलते रक्षा मंत्री का पद त्यागना पड़ा। हाँ अन्तर यही कि जहाँ प्रधानमंत्री को सुश्री से उलझना पड़ा वहीं जार्ज को श्रीमती से पाला पड़ा।

हाँ, तो बात की जा रही थी कवि सुरेन्द्र शर्मा द्वारा अटल जी को शादी करने की सलाह के सवाल पर। शर्मा की सलाह से सहमति जताते हुए प्रधानमंत्री ने कहा की किसी की मौत होने पर उसे शव यात्रा के लिए किसी अन्य की जरूरत पड़ती है। इस प्रकार शादी और मौत दोनों मामलों में अकेले व्यवस्था सम्भालना मुश्किल है। प्रधानमंत्री की इस सहमति से यह स्पष्ट है की अटल जी को अपनी शादी नहीं करने से पछतावा है क्योंकि अकेले व्यवस्था सम्भालने में उन्हें दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है।

-विचार संवाददाता, दिल्ली

शीला दीक्षित करोड़ों रुपये की पाइप लाइन घोटालों में शामिल

दिल्ली जल बोर्ड में सीवर पाइप लाइन विवाद का मामला में पहले फंसी दिल्ली सरकार अब एक नये घोटाला सोनिया विहार पाइप लाइन का ठेका देने में करोड़ों का घपला में पुरी तरह शामिल प्रतीत होती है।

इस सम्बन्ध में पूर्व महापौर और जल बोर्ड के सदस्य श्री योगध्यान आहूजा, श्रीमती शकुंतला आर्या और दिल्ली छावनी से बोर्ड के सदस्य श्री अशोक कुमार तंवर ने आरोप लगाया कि सोनिया विहार जल संयंत्र के लिए 33 कि०मी० लम्बी पाइप लाइन डालने के लिए अधिकतम न्यायोमित दरें 85 करोड़ रुपये आंकी गई थी लेकिन जल बोर्ड की अध्यक्षा मुख्यमंत्री शीला दीक्षित तथा वरिष्ठ अधिकारियों ने धांधली करके, विरोध के बावजूद 111.31 करोड़ रुपये में आवंटित कर दिया जबकि जल बोर्ड के उपाध्यक्ष श्री सुरेंद्र कुमार ने भी इसका विरोध किया था। बोर्ड द्वारा यह ठेका सोनिया विहार के जलशोधन संयंत्र से यमुनापार के विभिन्न क्षेत्रों में पाइप लाइनें बिछाने के लिए आवंटित किया गया है। उपाध्यक्ष अनुसार श्रीमती शीला दीक्षित ने इस ठेके को आवंटित कराने में तानाशाही रवैया अपनाया।

देश की पहली विदेश सचिव चोकिला अय्यर

चोकिला अय्यर को देश की पहली विदेश सचिव होने का गौरव प्राप्त हुआ है। उन्हें ललित मानसिंह के सेवा निवृत्त होने पर इस पद पर नियुक्ति किया गया है। सचमुच उनकी नियुक्ति देश की महिला राजनायिकों के लिए एक महत्वपूर्ण घटना है। नयी विदेश सचिव अपने कार्यकाल के दौरान पैदा होनेवाली चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार हैं। उन्होंने कहा कि उनकी इस नियुक्ति से विदेश मंत्रालय में काम करनेवाली प्रतिभावान एवं परिश्रमी महिला अधिकारियों को प्रोत्साहन मिलेगा। अय्यर, जो आयरलैंड में भारत की राजदूत थी, का स्थानान्तरण ही हेग में किया जा रहा था कि उन्हें विदेशसचिव के रूप में कार्य भार ग्रहण करने के लिए भारत बुलाया गया। वे अगले साल जून में सेवा निवृत्त होंगी। उनके बारे में कहा जाता है कि वे अत्यन्त भद्रशालीन किन्तु किसी भी गलती पर कड़ी नजर रखने वाली महिला हैं। विश्वास है, चोकिला लगभग अपने एक साल की सेवा में सफल, दक्ष होंगी तथा अपनी कर्मठता का परिचय देकर पुरुष वर्चस्व को चुनौती देंगी।

सुशील कुमार प्रधान सेनाध्यक्ष होंगे

भारत के तीनों सेनाध्यक्षों में वरिष्टतम नौसेना प्रमुख एडमिरल सुशील कुमार देश के पहले प्रधान सेनाध्यक्ष होंगे। इस आशय का एक प्रस्ताव मंजूरी के लिए केन्द्रीय मंत्रिमंडल के पास भेज दिया गया है।

उल्लेखनीय है कि कारगिल संघर्ष के बाद देश के सुरक्षा प्रबन्ध में बदलाव लाने के लिए गठित कार्यदलों में से एक ने (चीफ ऑफ डिफेन्स स्टाफ) प्रधान सेनाध्यक्ष का पद बनाए जाने की सिफारिस की थी। एडमिरल प्रधान सेनाध्यक्ष के दायित्व के साथ-साथ नौसेनाध्यक्ष का दायित्व भी सम्भालेगें।

ऋतिक और रवीना को चुनाव प्रचार में उतारेगी : भाजपा

पांच राज्यों में होने वाले विधानसभा चुनाव भाजपा के लिए प्रतिष्ठा का प्रश्न बना

भाजपा ने पांच राज्यों में होने वाले आगामी विधानसभा चुनावों के संबंधा में चुनाव अभियान प्रारंभ करने संबंधित रणनीति को अंतिम

रुप दे दिया है। तहलका प्रकरण से बिगड़ी पार्टी की छवि को सुधारने का जिममा लालकृष्ण आडवाणी को सौंप दिया गया है। आडवाणी ने इसी क्रम को जारी के तहत देश के विभिन्न भागों में जनसंभाएं करने की शुरुआत कर दी है वहीं भाजपा नेत्री व सूचना प्रसारण मंत्री सुषमा स्वराज को भी बंगाली भाषा सीखने संबंधित आदेश जारी हो चुके हैं। बताया जाता है कि सुषमा ने बाकायदा एक स्कूली छाखा की भांति "बंगाली–शिक्षक" से 'शिक्षा ग्रहण' कार्यक्रम शुरु कर दिया है। गौरतलब है कि सुषमा के आर्कषण को बंगाल में भुनाने के मद्देनजर उन्हें विशेष रुप में प. बंगाल सौंपा गया है। भाजपा कर शीर्ष नेतृत्व इस समय ममता से काफी खफा दिखायी देता है। भाजपा ने रणनीति बनायी है कि चाहे वाममोर्चा एक बार पुनः सत्तारुढ़ हो, लेकिन तृणमूल नेत्री को सबक अवश्य सिखया जाएगा। इसी रणनीति के तहत विभिन्न नामी गिरामी फिल्मी हस्तियों को भी चुनाव प्रचार के दौरान उतारने की तैयारियें लगभग पूर्व हो चुकी है।

सूत्रों का कहना है कि सिने स्टार ऋतिक रोशन तथा जवां दिलों की धाड़कन रवीना टंडन से इस बावत बातचीत लगभग पूर्व हो चुकी है। बताया जाता है कि इन फिल्मी हस्तियों के मौजुदा आकर्षण के जरिए भीड़ जुटाने संबंधित योजना के तहत किसी करिशमाई नेतृत्व भाजपाई की मौजुदगी में चुनावी जनसभाओं को आयोजित करने की रुपरेखा को अंतिम रुप दे दिया गया है।

राजनीतिक क्षेत्रों में चर्चा है कि रवीना टंडन को हाल ही में फिल्म फेयर पुरस्कार देने संबंधित योजना भी इसी कड़ी का एक हिस्सा थी। गौरतलब है कि रवीना को मिले फिल्म पुरस्कार का भारी विरोधा किया गया था। इस विरोधा के फलस्वरुप जूटी के सदस्यों ने अपने पद से त्याग–पत्र तक दे डाले थे, लेकिन सुषमा स्वाराज की मेहरवानी से रवीना पुरुस्कार पाने में कामयाब रही। रवीना भी अपने एहसान का बदला चुकाने की एवज में भाजपा के चुनावी अभियान में कूदने से परहेज नहीं करेगी।

ऋतिक रोशन ने भी चुनाव प्रचार मे हिस्सा लेने संबंधित मामले में अपनी स्वीकृति लगभग दे दी ही सूत्रों का कहना है कि पिछले दिनों राजधाानी में आयोजित ऋतिक रोशन लाईव शो' के समय ही उक्त कार्य योजना के अंतिम रुप प्रदान कर दिया था।

इस प्रकार भाजपा के आगामी चुनावों कह वैतरणी एक बार फिर फिल्मी हस्तियों के आकषर्ण की सहायता से पार लगाने का मन बना

भारत के लोग भूलते जा रहें हैं भूकम्प-त्रासदी को

विचार संवाददाता, गुजरात से

नई सहस्त्राब्दी के प्रथम गणतन्त्र दिवस पर प्रकृति ने गुजरात में जो विनाशकारी कहर ढाई उसमें गुजरात सरकार के आंकड़ों के अनुसार 20 हजार लोगों को असमय मौत ने निगल लिया था। 17 लाख व्यक्ति घायल हुए हैं। 10 लाख जिंदगियां बेघर हो गयी हैं। 350 गांव और कस्बे तबाह हो चुके हैं। 200 विद्यालयों का अता-पता नहीं है। अनुमान के अनुसार जिंदा और घायल लोगों के पुनर्वास के लिए लगभग 35000 करोड़ रुपयों की जरूरत पड़ेगी। इतनी बड़ी धनराशि का इंतजाम करना न तो केन्द्र के बूते की बात है और न राज्य की। ऐसे समय में भारतीय नागरिकों को ही अपनी उदारता व संवेदना का परिचय देना होगा। परन्तु खेद है कि आम भारतीयों में भूचाल के शुरूआती दौर में जो जोश था, वह ठंडा पड़ चुका है। लोगबाग इस त्रासदी को भूलते जा रहे हैं। लेकिन, उन लोगों के दर्द को कौन पहचानेगा और महसूस करेगा, जो आज भी इस त्रासदी के नतीजों को झेल रहे हैं।

भूकम्प से उत्पन्न ऐसी विषम परिस्थिति में अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति बिल क्लिंटन की भारत के इस दौर की यात्रा दुनिया भर के उन लोगों की आत्मा को झकझोरने में सहायक सिद्ध होगी, जो सम्पदा सम्पन्न हैं। जाहिर है क्लिंटन की गुजरात यात्रा 350 अरब रुपयों की विपुल धनराशि इकट्ठा करने में अहम् भूमिका निभाएगी। क्लिंटन की इस सद्यात्रा ने न केवल भूकम्प से तबाह लोगों के जख्मों पर मरहम लगाने का काम किया है बल्कि भारतीय नागरिकों के साथ-साथ गुजरात सरकार द्वारा शिथिलता से चलाए जा रहे पुनर्वास के कामों में भी तेजी आएगी। यकीनन उनकी यह यात्रा भूकम्प पीड़ितों को बेशुमार राहत पहुँचाएगी।

क्लिंटन की सद्भावना भारत यात्रा

अजीत कुमार, नई दिल्ली से

अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति बिल क्लिंटन की इस बार की भारत यात्रा पूर्व की इनकी भारत यात्रा से बिल्कुल भिन्न रही क्योंकि पिछली बार की तरह इस बार न तो उनके साथ काफी लाव-लश्कर थे और न ही उनकी सुरक्षा के लिए कोई तामझाम। पूरी यात्रा के दौरान कहीं भी कोई औपचारिकताएं नहीं दिखीं कारण कि क्लिंटन इस बार न केवल गुजरात में विगत 26 जनवरी को हुए भयंकर भूकम्प-पीड़ितों के दर्द को बांटने आए थे बल्कि इस त्रासदी से त्रस्त लोगों को पुनर्वास करने तथा समाज में नए सिरे से जीने की व्यवस्था में कुछ ठोस करने की तमन्ना लेकर आए थे। आखिर तभी तो अपनी यात्रा के प्रारम्भ में भूकम्प में सबसे अधिक क्षतिग्रस्त गुजरात के भुज, रतनाल तथा अंजार क्षेत्र का जायजा लिया तथा अहमदाबाद आकर वहाँ के गैरसरकारी संगठनों एवं गुजरात के मुख्यमंत्री केशुभाई पटेल और राज्यपाल सुन्दर सिंह भंडारी से मिलकर उनके द्वारा पीड़ितों के लिए की जा रही व्यवस्था की जानकारी ली। गैरसरकारी संगठनों के कार्यकलापों की क्लिंटन ने सराहना की तथा तुरन्त 200 करोड़ रुपये की सहायता का आश्वासन प्रदान कर पीड़ितों की पीड़ा को बाँटने का प्रयास किया। उल्लेखनीय है कि क्लिंटन के साथ इस बार एक दर्जन उद्योगपति भारत की यात्रा पर थे। क्लिंटन के साथ उनका निजी सुरक्षा दस्ता भी आया था।

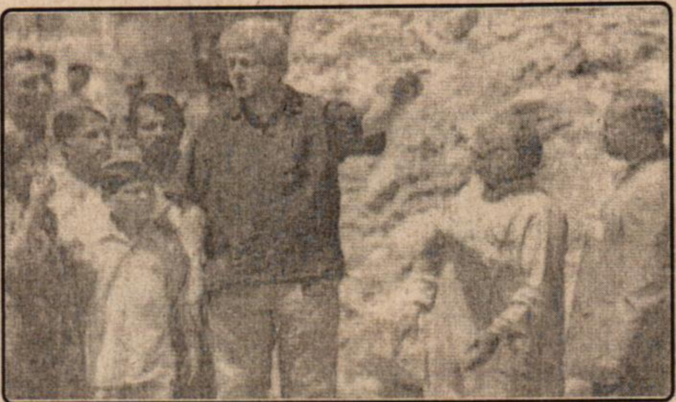

गुजरात के बाद मुम्बई में अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति भारत के प्रधानमंत्री द्वारा गठित **राष्ट्रीय आपदा प्रबन्धन समिति** के उपाध्यक्ष **शरद पवार** के साथ-साथ मशहूर उद्योगपति **रतन टाटा** तथा **अम्बानी** से भी मिले।

जो भी हो, बिल क्लिंटन ने इस बार भारत की यात्रा कर गुजरात की प्राकृतिक त्रासदी के प्रति जिस प्रकार संवेदना और सहानुभूति प्रकट करते हुए उसके पुनर्निर्माण के सन्दर्भ में अपनी और भारत के प्रति प्रतिबद्धता व्यक्त की, अपने लगाव का जैसा प्रदर्शन किया उससे भारत अमेरिकी सम्बन्ध और अधिक मजबूत होंगे। वस्तुत: क्लिंटन की वर्तमान यात्रा ने दोनों देशों के सम्बन्धों को मानवीय आधार प्रदान किया है। यह विश्व की एक जानी-मानी हस्ती भारत के प्रति सदाशयता की ही परिणाम है।

दिल्ली में दलित राजनीति

रा.वि. ब्यूरो, दिल्ली

दलित आधार वाले तीन संगठनों में से दो बहुजन समाज पार्टी एवं लोक जनशक्ति ने एक घंटे के अंतराल से एक ही जगह मावलंकर हॉल में अपने कार्यक्रम रखे हैं। जबकि तीन वर्षों से अपनी अलग पहचान बनाने वाले अनुसूचित जाति-जनजाति संगठनों के परिसंघ के अध्यक्ष **रामराज** बलजीत नगर में दलित महिला सम्मेलन के नाम एक कार्यक्रम का आयोजन किया है। जिसमें पूर्व प्रधानमंत्री वी.पी.सिंह मुख्य अतिथि होगें तथा इसमें सांसद फूलन देवी व अभिनेत्री सांसद जयाप्रदा भाग लिया। सम्मेलन के आयोजकों का मानना है कि दलित अब राजनीति के बजाय खुद के विकास और सामाजिक उत्थान के मसले को गंभीरता से ले रहे हैं। यह सम्मेलन असंगठित क्षेत्र की महिला मजदूरों की समस्याओं पर गंभीरता पूर्वक विचार किया। अकेले दिल्ली में इस तरह की करीब एक लाख महिलाएं हैं जो कई आधारभूत अधिकारों से वंचित हैं। दलितों के लिए यह शुभ संकेत है।

लालू का टूटता सपना

❑ विनय कुमार सिन्हा

राजद सुप्रीमों **लालू प्रसाद** के चेहरे पर फिलहाल परेशानी की लकीरें क्यों उभर आयी हैं? इस अहम सवाल का जवाब लगभग समान रूप से लालू प्रसाद के विरोधियों और समर्थकों दोनों के पास है। सत्ता की राजनीति में लालू प्रसाद के सामने जब बाहरी शक्तियाँ लगभग हार मान चुकी हैं तब दल के भीतर का घाव ही उन्हें परेशान करने लगा है। कलतक सुप्रीमों के सामने कमर सीधी करके खड़ा होने की हिम्मत नहीं रखनेवाले दल के विधायक भी उनकी औकात को ललकारने लगे हैं। ऐसे असंतुष्ट विधायकों और मंत्रियों की संख्या दिनोंदिन बढ़ती ही जा रही है और कई सदस्य मोके की तलाश में हैं। लालू प्रसाद की हेकड़ी इतनी ढीली पड़ गयी है कि वे सदस्यों के मान-मनौवल और आरज़ू विनती पर उतर आए हैं। वे सरकार से असंतुष्ट चल रहे विधायकों की पहचान कर उनके घर बिन बुलाऐ मेहमान बन रहे हैं।

विक्षुब्धों की कमान सम्भाले हैं, लालू प्रसाद के वर्षों के सहयोगी एवं पार्टी के प्रमुख सिपहसालार **प्रो०रंजन प्रसाद यादव।** रंजन की महीनों से चल रही भीतर घात की राजनीति अब सतह पर आ चुकी है। विक्षुब्ध सदस्य चाहते हैं बिहार में सरकार चलाने के लिए नेता को बदला जाय और वे रंजन यादव को अगला मुख्यमंत्री के रूप में देखना चाहते हैं। दर्जन भर विधायक सरकार के कामकाज के विरोध में खुलकर सामने आ चुके हैं और उनका मानना है कि उनके साथ पचास से अधिक विधायक पार्टी तोड़ने और सरकार गिराने के लिए काफी हैं। अबतक राबड़ी सरकार के तीन मंत्री सरकार से नाराज होकर त्यागपत्र दे चुके हैं ये हैं, वित्त मंत्री **शंकर प्रसाद टेकरीवाल,** उच्च शिक्षा राज्यमंत्री **रामदास राय** और कल्याण राज्य मंत्री **एजाजुल हक़।** इन मंत्रियों ने सरकार की खराब विधि-व्यवस्था को मुद्दा बनाया। दूसरी तरफ लालू प्रसाद नेता पद पर से **राबड़ी देवी** को नहीं बदलने के अतिरिक्त दल के सदस्यों की हर माँग को मानने के लिए तैयार हैं। परंतु रंजन यादव पिघलने की मुद्रा में नहीं हैं। उनका मानना है कि "बिहार के विकास के मुद्दे के सामने कोई अब अनैतिक समझौता नहीं होगा। "राबड़ी सरकार विकास की संस्कृति को समझती ही नहीं हैं। किसी भी स्थाई सरकार के लिए राज्य के विकास का मुद्दा महत्वपूर्ण है। विदित हो कि 1990 में विधान सभा में काँग्रेस को सत्ता से हराकर लालू यादव ने लगभग सात वर्षों तक मुख्यमंत्री की कुर्सी चलायी। बहुचर्चित **चारा घोटाले** में उनके दोषी पाए जाने पर 1997 में सी० बी० आई० की अदालत ने गिरफ्तारी वारन्ट निकाला तो न चाहते हुए भी उन्हें मुख्यमंत्री पद छोड़ना पड़ा। तब उन्होंने बिहार की सत्ता अपनी पत्नी **राबड़ी देवी** को सौंप दी। उन्होंने विधिवत विधायक दल की बैठक बुलायी उसमें राबड़ी देवी को विधायक दल का नेता चुना गया। बैठक से राबड़ी देवी के नाम का प्रस्ताव वर्तमान समता पार्टी के अध्यक्ष **रघुनाथ झा** ने किया था और दल के अन्य सदस्यों ने उनका समर्थन किया। उस समय रघुनाथ झा राष्टीय जनता दल में ही थे। ऐसा माना जाता है कि रघुनाथ झा ने ही लालू प्रसाद को विकल्प के तौर पर राबड़ी देवी का नाम सुझाया था। राबड़ी देवी के नाम पर पूर्व स्वास्थ्य मंत्री के साथ कुछ सदस्यों ने विरोध जताया था। परंतु वे संख्या में इतने कम थे कि लालू प्रसाद ने उसे आसानी से दबा दिया। इससे पूर्व भी जब-जब भी पार्टी के भीतर विरोध का स्वर उभरा तो उसे उन्होंने कठोरता से दबाया है। लालू प्रसाद के तानाशाही आचरण और रूखे व्यवहार के कारण ही अबतक कई लोगों ने उनका साथ छोड़ दिया। पहले **नीतीश कुमार** फिर **शरद यादव** और **रामविलास पासवान** उनसे अलग हुए। 1996 में शरद यादव के नेतृत्व में लगभग 30 विधायकों ने लालू प्रसाद का साथ छोड़ा था। जो लोग उनके प्रभाव से बाहर नहीं निकल पाए वे आज भी मन-मसोसकर उनके साथ हैं।

इस बार विक्षुब्धों की चुनौती ने लालू प्रसाद को भीतर से हिला दिया है। उनके नित्य नए-नए घोटाले का उजागर होना तथा अपराधियों को संरक्षण देने वाली सरकार की छवि बनने के कारण लालू प्रसाद की लोकप्रियता का ग्राफ काफी नीचे आया है।

वैसे इस बार विक्षुब्धों की चुनौती ने लालू प्रसाद को भीतर से हिला दिया है। उनके नित्य नए-नए घोटाले का उजागर होना तथा अपराधियों को संरक्षण देने वाली सरकार की छवि बनने के कारण लालू प्रसाद की लोकप्रियता का ग्राफ काफी नीचे आया है। पिछले विधान सभा चुनाव में ही उन्हें इसका अहसास हो गया था। रंजन यादव ने विकास और विधि-व्यवस्था को मुद्दा बनाकर राबड़ी सरकार पर प्रहार करना शुरू किया। इसकी हर तरफ सराहना तथा समर्थन मिला है। इस मुद्दे पर लालू और रंजन में महीनों से लुका-छिपी का खेल चल रहा है। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं है कि रंजन यादव के दिमाग में बिहार की गद्दी पाने की महात्वाकांक्षा पिछले-दो-तीन वर्षों से पक रही है और वे पार्टी के भीतर योजनाबद्ध तरीके से अपनी लॉबी चुस्त बना

रहे थे। गत विधान सभा चुनाव के बाद सरकार बना पाने में अपनी असफलता से हताश हुए भाजपा-समता ने रंजन यादव को खाद-पानी देना शुरू किया। मुख्यमंत्री राबड़ी देवी और लालू प्रसाद पर आय से अधिक संपति रखने के मामले के ट्रायल के कारण भी रंजन यादव को अपनी कुर्सी नजदीक दिखी। उसके संभावित फैसले को ध्यान में रखकर ही उन्होंने सरकार पर खुले तौर पर दबाव का माहौल बनाना प्रारंभ किया।

बिहार विभाजन के बाद रंजन यादव का लालू के साथ लुका-छिपी का खेल समाप्त हुआ और वे सरकार की गलतियों पर खुलकर बोलने लगे। उनका निशाना सीधे लालू प्रसाद होने लगे। इसी रणनीति के तहत रंजन यादव के समर्थकों ने पिछले 11 सितम्बर 2000 को राजधानी पटना के ए० एन० सिन्हा सामाजिक संस्थान में बिहार के विकास पर एक सेमिनार आयोजित किया था। सेमिनार से रंजन यादव ने बिहार के बंटवारे के पोषियों को गद्दार कहा। बिहार विभाजन के लिए वे पूरी तरह लालू को ही दोषी मानते हैं। सेमिनार के बहाने उन्होंने अपने समर्थकों को जुटाने का प्रयास किया। हालांकि सेमिनार में सरकार के एक मात्र मंत्री **अखिलेश सिंह** ने ही अपनी उपस्थिति दर्ज करायी थी। तथापि सेमिनार को युवा एवं खेलमंत्री **मोनाजिर हसन**, विधायक **सुरेन्द्र**, **सम्राट चौधरी** आदि का भी बाहर से समर्थन प्राप्त था। विभाजन के तुरंत बाद **शरद** और **नीतीश** बिहार के विकास के बहाने राजद में विभाजन के लिए रंजन को हवा देना शुरू किया। इसके पीछे इन नेताओं की राजनीति रंजन यादव के सहारे लालू यादव से राजनीतिक दुश्मनी साधना तथा विभाजन का सारा दोष लालू के मत्थे मढ़ना भी था। लिहाजा रंजन यादव दिल्ली में बैठकों और गोष्ठियों के बहाने शरद यादव और रंजन यादव से मिलने लगे। यह सिलसिला आज भी जारी है। इन बैठकों का मुख्य मकसद लालू के विरूद्ध चरणबद्ध विरोधी अभियान चलाने के लिए गुफ्तगू होना है ताकि मौका आने पर मुकाम पर पहुँचा जा सके। गत अगस्त 2000 में **नीतीश कुमार** के संयोजकत्व में बनी **बिहार विकास समिति** में रंजन यादव एक सम्मानित सदस्य हैं। लालू प्रसाद इस समिति को अपने खिलाफ खोला गया मोर्चा तथा एक गप्प की संज्ञा दे चुके हैं।

अगर दिल्ली में **तहलका प्रकरण** न हुआ होता तो बिहार की राजनीतिक तस्वीर कुछ और ही होती, ऐसा मानना है विक्षुब्धों का। गत चार मार्च को पटना के गाँधी मैदान में लालू प्रसाद द्वारा आहूत **किसान बचाओ देश बचाओ** महारैली का भीड़ के हिसाब से अपेक्षित सफलता न मिलने के कारण लालू खेमें में उदासी का जो माहौल बना हुआ था उसे **तहलका प्रकरण** ने पाट दिया। लालू प्रसाद के समर्थकों के बीच अचानक खुशी की लहर दौड़ पड़ी। लालू प्रसाद ने केन्द्रीय सरकार के विरूद्ध आवाज उठाकर विरोधियों को हत्तोत्साहित करने की कोशिश में लगे। रक्षा सौदें में कथित दलाली के इस प्रकरण में भाजपा-समता के शीर्ष नेता केन्द्र की सरकार बचाने में जुट गए वहीं रंजन यादव की बिहार सरकार को मिटाने की योजना खटाई में पड़ गयी। रंजन यादव की योजना विधान सभा के वर्तमान सत्र में सरकार गिराने का था। तब या तो विधायकगण सर्वसम्मति से अपना नया नेता चुनते। ऐसा नहीं होने पर विक्षुब्ध दल तोड़कर अलग गुट बना लेते। दोनों ही सूरत में रंजन यादव को नेता चुने जाने की परिस्थिति बनायी जाती। फिलहाल रंजन यादव के राजनीतिक अभियान में कुछ समय के लिए ठहराव पैदा हो गया है। लेकिन लालू यादव की परेशानी और बढ़ती जा रही है। **प्रतापपुर** गोली कांड के बाद अधिकतर मुसलमान विधायक भी लालू के विरोधी हो गए है। लालू प्रसाद का माय समीकरण बिगड़ता नजर आने लगा है।

बहरहाल बिहार की जनता को रंजन यादव की संभावित सरकार से भी कोई विशेष उम्मीद नहीं। आम जन का मानना है कि अपराध जगत के कुख्यात नेता जो कल तक लालू के साथ थे वे आज रंजन के साथ हैं इसलिए आने वाली सरकार का चरित्र भी वही होगा जो वर्तमान में है। यह कहना अतिशयोक्तिपूर्ण नहीं है कि सरकार गिराने में अपराधिक नेताओं को मुख्य भूमिका में लाने से रंजन यादव के विकास के मुद्दे को काफी बट्टा लगा है। **शहाबुद्दीन, एजाजुल हक, पप्पु यादव, इलियास हुसैन, ललित यादव** जैसे अपराधिक रिकार्ड वाले नेता रंजन के साथ सरकार गिराने में मुख्य भूमिका निभा रहे हैं। शहाबुद्दीन और एजाजुल हक के मामले में तो भाजपा-समता के चरित्र की कलई खोल भी दी है। भाजपा-समता के खाते में से दोनों कुख्यात अपराधी थे। रंजन के खेमें में आने के बाद ये इनके दुलारे बन गए।

प्रतापपुर कांड(इस कांड में पुलिस मुठभेड़ में शहानुबुद्दीन के आठ समर्थक भाग गए थे) के बाद सरकार ने सहानुभुति दिखाते हुए शहाबुद्दीन पर से गिरफ्तारी वारंट हटा लिया। सरकार की इस कारवाई को भाजपा-समता नेताओं ने भी समर्थन किया वहीं मानवाधिकार आयोग ने प्रतापपुर कांड पर शहाबुद्दीन के आवेदन को खारिज कर दिया। भाजपा-समता के विधायकगण विधानसभा के चालू सत्र में इस्तीफे की मांग की थी। ठीक अगले दिन जब एजाजुल हक शहाबुद्दीन के पक्ष में मंत्रिमण्डल से इस्तीफे की घोषणा की तो विरोधी विधायक निवर्तमान मंत्री की तरफदारी करते नजर आए। उधर रंजन यादव की परेशानी यह है कि विक्षुब्ध मुसलमान विधायक इसके लिए कतई तैयार नहीं हैं कि भाजपा-समता के सहयोग से भावी सरकार बने। वे लोग दल में ही नेता बदलने के पक्ष में हैं। इधर चारा घोटाले के एक और मामले में, बिहार के राज्यपाल द्वारा हरी झड़ी दिए जाने के बाद लालू का सता अपने कुनबे में ही बनाए रखने का सपना टूटता दिख रहा है। सच तो यह है कि लालू सबको साथ लेकर यदि आगे बढ़ते तो शायद लड़लखाते नहीं,लेकिन अच्छी नेतत्व क्षमता के बावजूद निजी स्वार्थ ने उन्हें डिगा दिया। लिहाजा यह कहना जल्दबाजी होगी कि बिहार में लालू प्रसाद की सत्ता की नैया अब डुबने ही वाली है।

सम्पर्कः द्वारा सुशील कुमार सिन्हा
पंचवटी नगर, श्रमजीवी कॉलानी,
पटना- 16

OFFICE OF THE

PEOPLE'S CO-OPREATIVE HOUSE CONSTRUCTION SOCIETY LTD.

KANKARBAGH, PATNA-800020

समिति में निम्न आय वर्ग के कुल 1730 सदस्य हैं जिनमें 1600 सदस्यों को लोहियानगर, कंकड़बाग में स्थित विभिन्न सेक्टरों में भूखंड आवंटित हैं तथा शेष को जगनपुरा में भूखंड आवंटित हैं।

समिति के द्वारा प्रत्येक सदस्य से अभियान चलाकर नौमिनी फार्म भरवाया जा रहा था, परन्तु बहुत से सदस्यों के द्वारा अभी भी नौमिनी फार्म नहीं भरा जा सका है। अतः वैसे सदस्यों से अनुरोध है कि अपना नौमिनी फार्म समिति कार्यालय से प्राप्त कर शीघ्र भरकर जमा कर दें।

समिति अपने सदस्यों के पुत्र-पुत्री, पौत्र-पौत्री, भाई-बहन एवं स्वयं के विवाहोत्सव एवं सम्बन्धित प्रयोजनों के लिये आधे दर पर सामुदायिक भवन प्राथमिकता के आधार पर उपलब्ध करती है।

समिति के सदस्यों की सुविधा के लिये स्ट्रीट लाइट, सड़क मरम्मत एवं मैनहोल सफाई आदि विकास कार्यों को भी निर्धारित नियमानुसार सम्पन्न किया जाता है।

एल० पी० के० राजगृहार	मिथिला शरण सिन्हा	प्रो० एम० पी० सिन्हा
अध्यक्ष	उपाध्यक्ष	सचिव

भ्रष्टाचार के कारण पूरी व्यवस्था अराजकता के मुंहाने पर

मीडिया इंटरनेशनल की पटना में संगोष्ठी

तहलका डॉट कॉम प्रकरण के पश्चात् भारत के विभिन्न नगरों में चले बहस-मुबाहिसों के दौर में पटना भी पीछे नहीं रहा। **मीडिया इंटरनेशनल** के सौजन्य से विगत 2 अप्रील, 2001 को स्थानीय बुद्धमार्ग स्थित आई० आई० बी० एम० सभागार में **सम्पूर्ण राजनैतिक प्रदूषण मुक्ति आन्दोलन** द्वारा आयोजित राष्ट्रीय सेमिनार में **"भारत एवं शेष बिहार के भविष्य, वर्तमान प्रदूषित राजनीति एवं स्वच्छ न्यायपालिका की भूमिका"** विषय पर एक विस्तृत आलेख प्रस्तुत करते हुए **राष्ट्रीय विचार मंच** के महासचिव तथा मुख्य वक्ता **सिद्धेश्वर** ने कहा कि आज देश में राजनीतिक दलों एवं उसके नेताओं के प्रति जनता की अनास्था इतनी गहरी हो गई है कि भविष्य हमारे हाथों से फिसलता नजर आ रहा है क्योंकि भारतीय राजनीति में व्याप्त भ्रष्टाचार की अति ने हमारी पूरी व्यवस्था को एक अराजकता के मुंहाने पर ला खड़ा किया है। सबसे खतरनाक बात यह है कि भारतीय समाज में अब यह भ्रष्टाचार मात्र व्यवहार न होकर एक स्वीकृत मनोवृति बन चुका है यानी लोग भ्रष्टाचार के अभ्यस्त होते जा रहे हैं। किसी भी भंडाफोड़ की जाँच के बाद दोषी पाए गए राजनीतिज्ञों व नौकरशाहों का कुछ नहीं बिगड़ा क्योंकि जाँच के बाद घोटालों पर लिपापोती कर दी गई। इसे नियंत्रित करने के लिए चिन्तक और सर्जक को आगे आकर भ्रष्टाचार रूपी विष-वेल को उखाड़ने का प्रयास करना होगा। **श्री सिद्धेश्वर** ने पुनः कहा कि इस विषम परिस्थिति में चिन्तक और सर्जक का यह दायित्व हो जाता है कि वे प्रत्येक मनुष्य के भीतर के विचार को जगाए ताकि इस संकट से उबरा जा सके। प्रत्येक व्यक्ति को अपना मसीहा स्वयं बनना होगा।

प्रारम्भ में सेमिनार के अध्यक्ष **आचार्य संजय सरस्वती** ने विषय प्रस्तुत करते हुए कहा कि आज भारतीय राजनीति एवं सत्तातंत्र का चेहरा, चरित्र और चिंतन विकृत हो गया है जिसके परिणामस्वरूप उनका उद्येश्य देश का निर्माण करना न होकर अपने स्वार्थ की पूर्ति करना हो गया है। इसके बदलाव के लिए इंकलाव जरूरी है और यह दायित्व समाज के मेहनतकश अवाम एवं विचारक-बुद्धिजीवियों का है। इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुए पटना विश्वविद्यालय, राजनीति विज्ञान के विभागाध्यक्ष **डॉ० एल० एन० शर्मा** ने उच्च शिक्षा में द्रुत गति से आ रही गिरावट के लिए राजनेताओं तथा सत्ता पर विराजमान हुकमरान को ही दोषी ठहराया। देश व राज्य की जनता में साख खो चुकी विधायिका व कार्यपालिका में व्याप्त भ्रष्टाचार तथा उनमें सकारात्मक इच्छाशक्ति के अभाव की वजह से हमारी संसदीय लोकतंत्र प्रणाली भी खतरे में पड़ गई दिखती है जिसके लिए हमें ठोस रूप से आत्म-निरीक्षण एवं गहन चिन्तन करने की आवश्यकता है।

पटना उच्च न्यायालय के वरिष्ठ अधिवक्ता **सिद्धि प्रसाद** ने सेमिनार के विषय पर अपनी बात रखते हुए कहा कि जिन चीजों का जन्म गंदगी से ही हुआ हो उसे प्रदूषित कहना उचित नहीं। भारतीय राजनीति के दमघोटू माहौल को ठीक करने तथा इस भयंकर परिस्थिति का सामना करने के लिए न्यायपालिका ही एक मात्र ऐसी स्तम्भ बची है जिससे देश व राज्य के विकास को उच्च शिखर पर पहुँचाया जा सकता है। सेमिनार में जिन अन्य विचारकों ने अपने विचार प्रस्तुत किए उनमें वयोवृद्ध समाजवादी नेता **कपिलदेव सिंह, शिवशंकर सिंह,** सी० पी० आई(एम० एल०) एकता पहल के नेता **अरविन्द सिन्हा** तथा जद(यू) विधायक दल के नेता **गणेश प्रसाद यादव** का नाम उल्लेखनीय है।

-विचार संवाददाता, पटना से

प्रबन्ध सम्पादक परिणय-सूत्र में बंधे

विचार दृष्टि के प्रबन्ध सम्पादक सुधीर रंजन की शादी विगत 28 जनवरी, 2001 को बोकारो (झारखण्ड) निवासी **योगेन्द्र** एवं **देवयन्ती** की सुपुत्री **सुनीता**

के साथ पटना में सम्पन्न हुई वर-वधु का स्वागत हुआ 31 जनवरी, 2001 को। दोनों अवसर पर नगर के हर क्षेत्र के गणमान्य लोगों के साथ-साथ भारत सरकार के कृषि एवं रेलमंत्री **नीतीश कुमार** ने वर-वधु को उनके सुखमय दाम्पत्य-जीवन के लिए अपनी शुभकामनाएं दीं। उल्लेख्य है कि सुधीर रंजन **विचार दृष्टि** के सम्पादक **सिद्धेश्वर** के एकलौते सुपुत्र हैं जो नई दिल्ली के एक कम्प्यूटर प्रतिष्ठान में नेटवर्किंग इंजीनियर के पद पर कार्यरत हैं।

विचार दृष्टि परिवार की ओर से वर-वधु को हार्दिक शुभ कामनाएं।

निमंत्रण

विचार दृष्टि पत्रिका परिवार के सदस्य **दिलीप कु० सिन्हा** पुत्र श्री वलदेव प्रसाद, ग्राम-भुआपुर, पटना(बिहार) की शादी आगामी 4 मई 2001 को मंलाजखण्ड, जिला-बालाघाट (मध्य प्रदेश) के निवासी **राम प्यारे प्रसाद** एवं **प्रमिला** की सुपुत्री **पिंकी** के साथ निवास मकान नं.- **बी.-3/33, एच.सी.एल. मंलाजखण्ड** में होगी। **इस मांगलिक वेला पर आप सभी आमंत्रित है।** उल्लेख्य है कि **दिलीप कुमार सिन्हा विचार दृष्टि** पत्रिका में साज-सज्जा एवं शब्द संयोजक हैं। साथ हीं नई दिल्ली के एक कम्प्यूटर ज्योतिष प्रतिष्ठान में कार्यरत हैं।

बिहार में 22 वर्षों के बाद पंचायत चुनाव

सत्ता के गलियारे में भटकता ग्रामीण लोकतन्त्र अब गांव की ओर

विचार ग्रामीण संवाददाता

एक लम्बे अरसे से सत्ता का विकेन्द्रीकरण कर पंचायती राज को मजबूत बनाने की बात सत्ता के गलियारे से सुनी जा रही है किन्तु 1992 में ही भारतीय संविधान के 73 वें व 74 वें संशोधन के बाद भी पंचायती राज व्यवस्था अपने वास्तविक गन्तव्य गांव तक नहीं पहुँची। देश के और सभी राज्य तो देर-सबेर अपने पंचायतों का चुनाव सम्पन्न कराकर गांवों की ओर बढ़े हैं पर बिहार में सत्ता का विकेन्द्रीकरण केवल नारों और भाषणों में सिमटकर रह गया है। इतने वर्ष पहले संसद से चला ग्रामीण लोकतन्त्र आज तक सत्ता के गलियारे में भटक रहा है क्योंकि त्रिस्तरीय पंचायतों के गठन के मामले में राज्य सरकार टालमटोल करती आ रही है। दरअसल गांववालों को यह पता भी नहीं चल पाता कि उनके गांव के लिए सरकार ने कितना पैसा दिया है और यह पैसा किस काम के लिए आया। अगर संविधान के 73 वें एवं 74 वें संशोधन को पूरी भावना के साथ लागू किया जाता तो वास्तव में **स्वराज** को गावों तक ले जाने के सपने को साकार किया जा सकता था क्योंकि इन संशोधनों के बाद पंचायतों को प्रारम्भिक शिक्षा, स्वास्थ्य, ग्रामीण विकास सरीखे 29 विभाग या कार्य सौंपने का प्रावधान है।

खैर, जो हो, बहुत हिला-हवाला के बाद बिहार में तकरीबन 22 वर्षों के बाद पंचायत चुनाव की घोषणा की गई है और अब यह कई फेज में अप्रील में सम्पन्न होंगे। बिहार में पिछली बार पंचायत चुनाव 1978 में हुए थे। इसके बाद कई सरकारें आई और गई तथा राज्य की राजनीति ने आमूल बदलाव को देखा पर बिहार की जनता निचले स्तर पर जनतन्त्र का लाभ न उठा सकी। फलत: राज्य में विकास की गति इन्हीं वर्षों में धीमी होते-होते अब प्राय: ठप्प हो गई है तथा ग्रामांचल में सामाजिक तनाव परवान चढ़ने लगे हैं। इतना ही नहीं, पंचायती संस्थाओं के नहीं होने की वजह से प्रति वर्ष कोई 550 करोड़ रुपये से बिहार वंचित हो गया। कृषि पर ध्यान नहीं देने के कारण किसान-मजदूरों की हालत दिन-व-दिन बदत्तर होती गयी। **महात्मा गाँधी** ने **ग्राम स्वराज** की कल्पना अब से 60-70 साल पहले की थी जिसके तहत देश का हर गांव, हर पंचायत एक स्वतन्त्र इकाई बनना था जहाँ अपनी सत्ता हो, निर्णय लेने की क्षमता हो और छोटे-छोटे उद्योग हों, सामूहिक खेती हो। पर अरबों रुपये खर्च कर बड़े-बड़े उद्योग को लगाया गया और उनमें से अधिकांश उद्योग बन्द हो गए या बन्द होने के कगार पर हैं। वे सब सफेद हाथी निकले। इस गलती का खामियाजा ग्रामीण जनता को आज भुगतना पड़ रहा है। आज बैंकों के 51000 करोड़ रुपयों का जो ऋण फंसा हुआ है उसके लिए आखिर कौन जिम्मेवार है? सत्ता से जुड़े दलाल या बड़े-बड़े राजनेता?

बिहार में 22 वर्षों के बाद हो रहे पंचायत चुनावों से राज्य में उमंग का वातावरण तो है पर वसन्ती हवा ने इस चुनावी वयार में और भी मदहोशी ला दी है। कहीं ऐसा न हो कि इस मदहोशी में गांव के लोग अपने होश खोकर इसे रक्त-रंजित न कर दें क्योंकि पंचायत या स्थानीय निकाय के चुनाव भी किसी विधानसभा के चुनाव से कम नहीं दिखते। नामांकन से लेकर अबतक उम्मीदवारों द्वारा प्रचार-प्रसार में जो गाजे-बाजे के साथ वाहनों के काफिले देखने में आ रहे हैं और जिस तरह अंधाधूंध धन का दुरूपयोग हो रहा है, उसने विधानसभा के चुनाव को भी पीछे ठकेल दिया है। मुखिया पद के कुछ उम्मीदवार तो लाखों रुपये का वारा-न्यारा करने पर तुले हैं। जो प्रत्याशी चुनाव मैदान में हैं वे सब के सब अपने **हम किसी-से कम नहीं** आंक रहे हैं। दारू का दौर इस कदर गांवों में चल रहा है कि उसका कुछ कहना ही नहीं। हलांकि दारू का नशा तो केवल रात भर रहता है पर राजनीति का नशा जिस उम्मीदवार पर चढ़ गया वह तो जीवन भर छुटने को नहीं। कुछ असामाजिक तत्व, जो समाज के लिए नासूर हैं, सरदर्द हैं, वैसे भी लोग ताल ठोंककर मुखिया मैदान में अपनी बर्बरता का परिचय दे रहे हैं। पूरा गांव-समाज भयाक्रांत है। आफतों की अटकलों से आवाम परेशान है।

बहरहाल बहुप्रतीक्षित पंचायत चुनाव क्या-क्या गुल खिलाएगा, यह देखना तो अभी बाकी है पर कितने घर आबाद होंगे और कितने बर्बाद यह तो वक्त ही बताएगा। किन्तु यह सच है कि इस चुनाव में कुछ लोगों ने अपनी पुरानी दुश्मनी साधने के लिए भी कुछ लोगों को पंचायत चुनाव लड़ने की सलाह दे रखी है। उन्हें यह मालूम है कि अमूक आदमी चुनाव लड़ेगा तो उसकी हार निश्चित है फिर भी शराब और पैसे ऐंठकर उन्हें बर्बाद करने के चक्कर में लगे हैं। उनके दोनों हाथों में लड्डू हैं। हार गए तो वे बर्बाद और दुश्मनी भी सध गयी और संयोगवश जीत गए तो उनके विश्वासपात्र बने रहेंगे।

गांव के नवनिर्माण की भावनाओं से ओतप्रोत ऐसे भी युवा वर्ग इस दौड़ में हैं, जो कुछ कर दिखाने की तमन्ना रखते हैं पर संकीर्ण तथा भ्रष्ट सोचवाली भारतीय राजनीति का एक बहुत बड़ा वर्ग तथा भ्रष्टाचार में लिप्त प्रशासन उन युवाओं के सपने को कहाँ तक साकार होने देते हैं यह तो चुनाव के बाद ही पता चल पाएगा।

कांग्रेस ममता की गिरफ्त में

विचार संवाददाता, कोलकाता

1996 के प0 बंगाल के विधान सभा चुनाव में 288 उम्मीदवारों को उतारकर 82सीटों

पर विजय प्राप्त करने वाली कांग्रेस को 10 मई 2001 को होने वाले चुनाव में 70 सीटों पर दावा करने के बाद मात्र 57 सीटों से ही संतोष करना पड़ा। इस से यह स्पष्ट है कि राज्य में 24 साल से प्रमुख विपक्षी दल रहने के बावजूद भी कांग्रेस का संगठन इतना लचर हो चुका है कि वह अपने बलबूते चुनाव लड़ने का विश्वास खो चुकी है। **ममता** ने 1996 के विधान सभा चुनाव के बाद 1997 में कांग्रेस से नाता तोड़कर **तृणमूल कांग्रेस** बनायी थी और राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबन्धन से नाता जोड़ा था। पुन: **तहलका प्रकरण** के बाद राजग से अलग होकर **महाजोट** में कांग्रेस को शामिल किया। इन तीन-चार सालों में ममता बनर्जी ने अपनी स्थिति इतनी मजबूत कर ली कि अब 294 सीटों वाली विधान सभा के चुनाव में 200 सीटों पर तो तृमूकां ने अपने प्रस्तावित उम्मीद वारों की धोषणा कर चुकी है और 30 से 40 अन्य सीटों पर अपनी दावेदारी जता रही है। इस प्रकार कांग्रेस उसकी जुनियर पार्टनर की हैसियत से 10 मई को विधान सभा चुनाव लड़ने जा रही है। ऐसा लगता है कि कांग्रेस की एक मात्र अब इच्छा यही रह गयी है कि 24 साल से निरन्तर चले आ रहे वाम मोर्चा की हुकूमत को हर हालत में शिकस्त दिया जाए। इसलिए कांग्रेस को बस इसी पर संतोष करना पड़ रहा है कि प0 बंगाल की विधान सभा में गिनती भर सीटें जीतकर वह अपनी उपस्थिति दर्ज करा सके और वह भी तृमूकां के सहारे। प0 बंगाल की राजनीति में **सोनिया** का बस एक ही नारा है-**बंगाल को वामपंथ से बचाओ।** ममता जी की राजनीति केन्द्रीय न होकर उनकी धूरी प0 बंगाल है और वह उसके मुख्यमंत्री को कुर्सी पर हर हाल में बैठने को बेताव हैं। आखिर तभी तो राजग गठबन्धन की केन्द्र सरकार के मंत्रिमंडल में रहकर कई नाटकों का मंचन कर चुकी हैं। हलॉकि अभी भी प0 बंगाल के कांग्रेसी नेताओं और विधायकों में सीटों को लेकर जो उफान चल रहा है उससे ऐसा लगता है कांग्रेस में आपसी टकराव होगा। वैसे भी पिछले दिनों पार्टी से टूटकर आठ विधायक तथा सैकड़ों कार्यकर्त्ता तृणमूल कांग्रेस में शामिल हो गए थे। दूसरी ओर ऐसा नहीं लगता कि राजग से नाता तोड़कर तृमूकां के लिए आनेवाला दिन बेहतर होगा क्योंकि भाजपा के वहाँ 200 सीटों पर चुनाव लड़ने की स्थिति में न तो वह ममता की सेहत के लिए अच्छा होगा और न कांग्रेस के लिए। हाँ वाम मोर्चा को इससे लाभ मिल सकता है। खैर, अब देखना यह है ममता की गिरफ्त में आकर कांग्रेस राज्य में कितनी असरदार भूमिका निभा पाएगी ।

विधानसभा चुनाव में दिलचस्प मोड़

रा०वि०ब्यूरो, कोलकाता से

देश के जिन पांच राज्यों में आगामी 10 मई को विधानसभा के जो चुनाव होने जा रहे हैं उनमें एकमात्र पश्चिम बंगाल ही ऐसा राज्य है जहां एक-दो-तीन-चार नहीं बल्कि राजनीतिक दलों के छह-छह मोर्चे चुनाव मैदान में बाकायदा ताल ठोक कर आ डटे हैं जिससे चुनावी प्रतिद्वंद्विता दिलचस्प मोड़ लेती दिखाई पड़ रही है।

उल्लेखनीय है कि आजादी के बाद से पश्चिम बंगाल में विधानसभा के जितने भी चुनाव हुए हैं सभी में वामपंथी मोर्चा और कांग्रेस नेतृत्व वाला मोर्चा ही चुनाव मैदान में प्रधानत: दिखाई दिया है। इधर हाल के चुनावों में मुख्यतया लोकसभा चुनावों में बंगाल में तीन मोर्चे बराबर चुनाव मैदान में दिखाई दिए लेकिन इस बार छोटे-छोटे दलों को मिलाकर बने मोर्चे ने मतदाताओं को अजीबोगरीब स्थिति में ला खड़ा कर दिया है। इस समय मोर्चे में शामिल सभी छोटे-बड़े दलों के नेता अपनी-अपनी गोटी बैठाने में सक्रिय हैं मजे की बात तो यह है कि इतनी अधिक मोर्चे के चुनाव मैदान में उतरने से राज्य चुनाव कार्यालय परेशानी में पड़ गया है। क्योंकि मतपत्रों के अलावा बड़ी संख्या में चुनाव चिन्हों की भी व्यवस्था करनी पड़ रही है। चुनाव कार्यालय को हालांकि राज्य के मुख्य चुनाव अधिकारी श्री सव्यसाची सेन ने इस संवाददाता के साथ बातचीत में स्पष्ट कर दिया कि चुनाव कार्यालय हर चुनौती को सामना करने में पुरी तरह तैयार है।

तमिल में उर्वशी-साहित्य

❑ डॉ० तेज नारायण कुशवाहा

प्राचीन तमिल साहित्य में देवांगना उर्वशी विषयक प्रचुर स्थल उपलब्ध हैं। भागवतादि पुराण, रामायण और महाभारत आदि ग्रन्थों में उर्वशी का चित्रण विभिन्न रूपों में हुआ है, किन्तु उन उर्वशी-कथाओं का आधार संस्कृत साहित्य रहा है। उनमें किसी प्रकार की मौलिकता नहीं दिखाई पड़ती। परन्तु महाकवि कम्ब की रामायण में उर्वशी ने तमिल के भावी लेखकों को अवश्य उद्दीप्त किया है। वहां उर्वशी लंका की सर्वश्रेष्ठ नर्त्तकी और रावण की करवाल ढोनेवाली के रूप में चित्रित की गई है। उसे आगे किए हुए अनेक स्त्रियां कलापी के समान चर्ममय वाद्यों (मर्दन आदि) के ताल के अनुरूप अत्युत्तम नृत्य करती थीं, जिसे वह रावण देखता था। (कम्ब रामायण: अरण्यकाण्ड (मारिच पटल) पृष्ठ 390-91)।

तमिल के आधुनिक साहित्य में उर्वशी विषयक प्रमुख दो रचनाएं प्राप्त होती हैं। एक के लेखक हैं एन० चिदम्बर सुब्रह्मण्यम् और दूसरे के प्रोफेसर श्रीनिवास राघवन्। एन० चिदम्बर सुब्रह्मण्यम् उर्वशी एकांकी का हिन्दी अनुवाद श्रीनिवासाचार्य भारद्वाजीय ने किया, जो दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, त्यागराय नगर, मद्रास-96 (अब चेन्नै-96) थे **हिन्दी प्रचारक** वर्ष 15, अंक 11 (अक्टूबर, 1937 ई०) में छपा है।

प्रोफेसर श्रीनिवास राघवन् का **उर्वशी** एकांकी उन्हीं के द्वारा सम्पादित **शिन्दने** (चिन्तना) तमिल मासिक में प्रकाशित हुआ था। लेखक ने 28 मई, 1995 ई० को मद्रास में ही अपनी एक भेंट में **शिन्दने** के अंक की ठीक तिथि को विस्मृत बताया। यहां तक कि उसकी प्रति लेखक सम्पादक के पास भी मुझे उपलब्ध नहीं हो सकी, हालांकि लेखक ने उसे उपलब्ध कराने की भरपूर चेष्टा की। प्रोफेसर राघवन् के **उर्वशी** एकांकी का हिन्दी रूपांतर सर्वप्रथम दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, त्यागराय नगर, मद्रास (चेन्नै) के **दक्षिण भारत** वर्ष आठ अंक 9-10 जुलाई-अगस्त, 1990 में मुद्रित हुआ है। इस दूसरे एकांकी के रूपांतरकार मदुरा कॉलेज, मदुरई के हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रोफेसर ति० शेषाद्रि हैं।

श्री सुब्रह्मण्यम् के **उर्वशी का शाप** और श्रीनिवास राघवन् के **उर्वशी** एकांकी की कथाएं दो प्रकार की हैं। **उर्वशी का शाप** एकांकी की कथा महाभारत के वन पर्व पर आधारित है तथा प्रोफेसर श्रीनिवास राघवन् की **उर्वशी** की कथा रामायण पर। उर्वशी, मेनका, रावण और रावण के महामात्य महोधर श्रीराघवन् की **उर्वशी** के मुख्य पात्र हैं और उर्वशी, अर्जुन, चित्रलेखा और अमृतपान **उर्वशी का शाप** के प्रधान चरित्र हैं। श्रीनिवास राघवन् के उर्वशी एकांकी की घटना का स्थान है लंकानगरी में रावण के अन्त:पुर में अप्सरा **उर्वशी** का सुन्दर कक्ष एवं अशोकवन तथा श्रीसुब्रह्मण्यम् के **उर्वशी का शाप** एकांकी की घटना का स्थान देवलोक का नन्दन विपिन है। दोनों एकांकियों के भाव एवं शिल्प-निधान सौन्दर्य पूरित और मौलिक हैं।

उर्वशी का शाप एकांकी पांच दृश्य संवादों में समाप्त हुआ है:

(1) उर्वशी-चित्रलेखा-संवाद।
(2) अर्जुन-अमृत पान-संवाद।
3) अर्जुन-चित्रलेखा-संवाद।
(4) उर्वशी-अर्जुन-संवाद।

प्रथम में अर्जुन के प्रति आसक्त उर्वशी का तथा तृतीय में उर्वशी के प्रति आसक्त पुरूरवा की आसक्ति का, द्वितीय में एक नूतन लोक के स्वरूप का तथा चतुर्थ में अर्जुन के कर्त्तव्य-बोध और उर्वशी के दारूण शाप का प्रभावशाली वर्णन हुआ है।

एन० चिदम्बरम सुब्रह्मण्यम् और हिन्दी एकांकीकार लक्ष्मी नारायण लाल के उर्वशी एकांकी के सभी पात्र गतिशील दृष्टिगोचर होते हैं। वहां उर्वशी के हृदय में कामना की आंधी उठती है जो पूरे वेग से अर्जुन के अंक में शांत हो जाना चाहती है, किन्तु अर्जुन तो वासनाओं से रहित आनन्दमय शांति पाना चाहता है। उसका चरित्र वासनाशामक है। इन दोनों एकांकियों का उद्देश्य मन और इन्द्रिय निग्रह से आत्मतत्प को ऊपर उठाना है। एन० चिदम्बरम सुब्रह्मण्यम ने अपने **उर्वशी का शाप** को एक विशेष मत का प्रतिवादन करने के उद्देश्य से भी लिखा है। उन्होंने बड़े ही प्रभावशाली ढंग से प्लेटो और **यूटोपियन संसार** का साहित्यिक परिवेश में व्याख्या की है। एन० चिदम्बर सुब्रह्मण्यम् ने स्वयं इस अध्येता के नाम अपने 3 मई, 1995 ई० के पत्र में कहा है-

Indraloka is conceived in the manner of Plato's Utopia, where people get power but not possassions, where there is no law and the people there are law unto themselves, where there is freedom and no family where beauty is governed only by Aesthetic values and not by moral values and Arjuna coming for a world dominated by wordly laws and Dharmas. The conflict is conceived as between and Aesthetic and a Moralist.

प्रोफेसर श्रीनिवास राघवन् की उर्वशी की निम्नलिखित विशेषताएं हैं-

(1) उर्वशी एवं अन्य अप्सराएं रावण के यहां परतंत्र बनाकर रखी गई थीं। उर्वशी रावण की तलवार ढोती थी। मेनका उसको गिलौरियां बनाकर देती थी। तिलोत्तमा उसका पादुका-सेवन करती थी।

(2) अप्सरा(मेनका) अमरता नहीं चाहती। वह कहीं गरीब की झोपड़ी में झोपड़ीवाले के संग रहकर जीवन बिताना और मर जाना चाहती है।

(3) स्वतंत्रता-प्राप्ति के पूर्व लिखित प्रस्तुत एकांकी में समस्त भारतीयों के लिए उर्वशी का संदेश निहित है-**स्वाधीनता का मूल्य जानो!**

सम्पर्क: कुल सचिव, विक्रमशिला हिन्दी
विद्यापीठ, गांधीनगर, ईशीपुर
भागलपुर-813206

नई राष्ट्रीय कृषि-नीति पर गांव में संगोष्ठी

मंच व 'विचार दृष्टि' के क्रांतिधर्मी कार्यक्रम

प्रस्तुति: डॉ० शिवनारायण

बिहार-विभाजन के बाद यहाँ की एकल आय में बढ़ोत्तरी के निमित्त जो संगोष्ठियों का दौर शुरू हुआ, उसमें यह राय सामने उभर कर आयी कि कृषि के विकास पर सरकार का ध्यान नये सिरे से केन्द्रित हो तभी बिहार का भविष्य संरक्षित रह सकता है। सरकारी-गैर सरकारी सभी स्तरों पर कृषि विकास के लिए नये सिरे से सोचने की दिशा पर पहल इस तथ्य का प्रमाण है कि व्यावहारिक एवं वैज्ञानिक दृष्टि से कृषि विकास पर योजनाकारों का ध्यान कम गया है। फिर संसद में पारित नई **राष्ट्रीय कृषि नीति** में ऐसी दिशाएं हैं, जिसके आधार पर शेष बिहार में कृषि-क्रांति का श्रीगणेश किया जा सकता है।

कुछ इन्हीं भावों से प्रेरित होकर **राष्ट्रीय विचार मंच** एवं **विचार दृष्टि** पत्रिका के संयुक्त तत्वावधान में विगत 3 फरवरी, 2001 को **बिहार के नालंदा** जिलान्तर्गत हरनौत प्रखंड स्थित **बसनियावाँ** गांव में एक गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसका विषय था- **नई राष्ट्रीय कृषि नीति एवं बिहार के किसान-मजदूर**। कृषि सम्बधी चर्चा किसान-मजदूरों के बीच हो, यह मंच का उद्देश्य था; इसलिए स्थान का चयन राजधानी से करीब 75 कि०मी० दूर ग्रामीण अंचल में किया गया। पूर्व घोषित कार्यक्रम के अनुसार इस आयोजन का उद्घाटन केन्द्रीय कृषि मंत्री **नीतिश कुमार** को करना था और मुख्य अतिथि के रूप में रेल राज्यमंत्री **दिग्विजय सिंह** को उपस्थित होना था। किन्तु राजधानी में प्रधानमंत्री द्वारा भूकंप के सवाल को लेकर बुलाई गई बैठक में भाग लेने के कारण वे संगोष्ठी में उपस्थित न हो सके जो स्वाभाविक था। फिर भी हजारों की संख्या में ग्रामीणों की सहभागिता से इस संगोष्ठी की उपादेयता काफी बढ़ गयी और बहुत माने में यह गोष्ठी सफल रही। मंच के महासचिव **सिद्धेश्वर** का गांव होने के कारण यों भी पास-पड़ोस के जागरूक बुद्धिजीवियों सहित किसान-मजदूरों ने बड़ी संख्या में अपनी उपस्थिति दर्ज कर आयोजकों का मनोबल बढ़ाया।

संगोष्ठी की अध्यक्षता स्थानीय रामरतन सिंह कॉलेज, मोकामा के हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ०शिवनारायण ने की, जबकि उद्घाटन सुपरिचित गीतकार-चित्रकार **ललित कुमुद व अपराजिता** ने किया। संगोष्ठी प्रारम्भ होने के पूर्व बसनियावाँ गांव के पूर्व मुखिया **श्री इन्द्रदेव प्रसाद** के नाम पर नवनिर्मित अतिथिशाला **इन्द्रायण** का उद्घाटन एक परित्यकता सुशिक्षिता महिला श्रीमती **अपराजिता राजलक्ष्मी** के हाथों सम्पन्न हुआ।

किसानों के मसीहा राष्ट्रनिर्माता लौहपुरुष **सरदार वल्लभ भाई पटेल** के चित्र पर माल्यार्पण के बाद मंच के महासचिव सिद्धेश्वर ने गर्व के साथ उद्घोषणा की कि आज की इस संगोष्ठी का उद्घाटन एक ऐसी परित्यक्ता नारी **अपराजिता** द्वारा होने को है जिससे जाने माने कलाकार ललित कुमुद ने उनकी मांग में सिन्दूर भरकर अपने क्रांतिकारी विचारों का परिचय दिया है। सौभाग्य से उद्घाटन में अपराजिता का साथ वे भी दे रहे हैं। तालियों की गड़गड़ाहट के बीच सम्पन्न उद्घाटन के बाद ललित कुमुद तथा अपराजिता कुमुद को एक साथ अंगवस्त्रम् भेंटकर सम्मानित किया गया; क्योंकि मंच की दृष्टि में श्री कुमुद के विचार व कदम ऐसे क्रांतिकारी कार्य हैं, जिसे बढ़ावा देकर ही समाज में महिलाओं का गौरव-वर्द्धन किया जा सकता है और उसे नीचे गिरने से बचाया जा सकता है।

इसके अतिरिक्त इस अवसर पर **सिद्धेश्वर** जी ने एक और अपनी क्रांतिधर्मिता का परिचय दिया जिसकी उपस्थित जनसमूह ने कल्पना तक नहीं की थी। आमतौर पर नई नवेली दुल्हन मंच पर जाकर बोलने की बात तो दूर घर की चहारदीवारी के अन्दर लोगों के सामने अपनी घूँघट भी उठाने में शर्माती हैं। किन्तु मात्र एक सप्ताह पूर्व सिद्धेश्वर जी के एकमात्र सुपुत्र **सुधीर रंजन** के साथ सम्पन्न **सुनीता** की शादी के बाद पहली बार जब वह गांव आई तो घर की चहारदीवारी को लांघकर इस नई नवेली दुल्हन ने आयोजित संगोष्ठी के विषय-वस्तु को प्रस्तुत किया। कृषि स्नातक श्रीमती **सुनीता रंजन** ने पूरी शालीनता के साथ पुरानी रूढ़िवादी मान्यता को समाप्त कर निश्चय ही उसने एक नई लकीर खींचने का सफल प्रयास किया, जिसका पास-पड़ोस की हजारों की संख्या में आए श्रोताओं के साथ सैकड़ों महिलाओं ने इस विदुषी पुत्रवधू के कदम को मुक्तकंठ से सराहा। विषय को प्रस्तुत करते हुए श्रीमती रंजन ने कहा कि जो किसान देश के लिए अनाज उगाकर लोगों का पेट भरता है, जो किसान का बेटा फौज में भर्ती होने के पश्चात् जान पर खेलकर देश की रक्षा करता है, जो मजदूर धरती का सीना चिरकर नहर निकालता है; आज उसी मजदूर और किसान की हालत दिन-ब-दिन दैयनीय होती जा रही है। किसान एवं मजदूर देश की रीढ़ होते हैं। जब रीढ़ ही कमजोर होगा तो देश कैसे मजबूत होगा। आशा है भारत सरकार की नई राष्ट्रीय कृषि नीति के प्रावधानों को ठीक से लागू करने पर किसान-मजदूरों की अवस्था में गुणातीत सुधार होगा।

प्रारम्भ में मान्य अतिथियों एवं श्रोताओं का स्वागत करते हुए स्वागताध्यक्ष **उमेश्वर प्रसाद** ने सामाजिक क्रांति की आवश्यकता

पर बल दिया। उन्होंने आशा व्यक्त की कि नई राष्ट्रीय कृषि नीति में उत्तम खाद, बीज समय पर उपलब्ध कराने के साथ-साथ हर खेत को पानी पहुँचाने की व्यवस्था होगी। श्री प्रसाद ने पुन: कहा कि नागरिकों में नैतिकता तथा सदाचार की भावना फैलाने हेतु **राष्ट्रीय विचार मंच** सरीखे स्वैच्छिक सामाजिक संगठनों को कमर कस कर आगे आना होगा।

इस अवसर पर **पोआरी** गांव के सुपरिचित चिंतक **राधेरमण उपाध्याय** का मानना था कि किसानों का अपना संगठन नहीं होने के कारण भी उनका शोषण हो रहा है। उन्होंने सहकारी आधार पर गांव के कृषि उत्पादनों के निष्पादन पर बल दिया। बगल के **ममारकपुर** गांव के **अजय सिंह पटेल** ने कहा कि किसान-मजदूरों में आपसी प्रेम का होना आवश्यक है क्योंकि मिल बैठ कर ही समस्याओं का हल हो सकता है। महाने क्षेत्र का प्रतिनिधित्व कर रहे **रामानुग्रह प्रसाद** का मानना था कि नई कृषि नीति में किसानों की लाभ की बातें अपेक्षाकृत कम दिखती हैं। उन्होंने जोर देकर कहा कि कृषि क्षेत्र में बहुराष्ट्रीय कंपनियों को बढ़ावा मिल रहा है जो लाभकारी स्थितियों को खत्म कर देगा। खरथुआ गांव के प्रो० **सुरेन्द्र प्रसाद 'अकेला'** ने किसान-मजदूरों की स्थिति पर चिन्ता व्यक्त करते हुए सरकार से मांग की कि वे शीघ्रातिशीघ्र पंचायत चुनाव सम्पन्न कराकर ग्रामीण लोकतन्त्र की स्थापना करें। उन्होंने **विचार दृष्टि** पत्रिका में **गांव अथवा कृषि स्तंभ** शुरू करने की मांग इसके संपादक से की। अन्य वक्ताओं में सिरसी गांव के किसान **रणजीत प्रसाद सिंह**, बलवापर के **प्रो० रामनन्दन** ने भी किसान-मजदूरों की दयनीय दशा पर अपनी चिन्ता जताते हुए कृषि नीति को लागू करने पर बल दिया।

इस अवसर पर बसनियावाँ गांव में निर्मित अतिथिशाला **इन्द्रायण** के निर्माण में सक्रिय योगदान करने वाले गांव के पांच व्यक्तियों को अंगवस्त्रम भेंट कर सम्मानित किया गया,जिनमें कार्यपर्यवेक्षक **महेश्वर प्रसाद**, मुख्य मिस्त्री **रामबाबू साव**, राजमिस्त्री **श्याम साव**,श्रमिक **प्रताप महतो** तथा सहायक **रवीन्द्र प्रसाद** थे। मंच के महासचिव सिद्धेश्वर ने नवनिर्मित अतिथिशाला के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए घोषणा की कि गांव में किसी प्रकार के सामाजिक कार्यों के लिए यह अतिथिशाला उपलब्ध रहेगा। गांव में पधारे अतिथियों, नेताओं, कर्मचारियों तथा अधिकारियों का यहाँ तहेदिल से स्वागत होगा। इसके रख-रखाव तथा संचालन के लिए एक समिति गठित की जाएगी।

अपने उद्घाटन भाषण में ललित कुमूद ने क्रांतिधर्मी सामाजिक जागरूकता लाने में सिद्धेश्वर के प्रयासों की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुऐ उस गांव को प्रणाम निवेदन किया।

आखिर में अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में **विचार दृष्टि** के कार्यकारी संपादक **डॉ० शिवनारायण** ने कहा कि यह महात्मा बुद्ध की धरती है, जहाँ से अहिंसा, सद्भाव एवं शन्ति का पाठ पूरे विश्व को मिला था, इसलिए बुद्ध की शांति- भूमि में कृषि संगोष्ठी के माध्यम से मंच द्वारा दिया जाने वाला संदेश महत्वपूर्ण तो है ही साथ ही मंच के उद्देश्यों को मूर्त रूप देकर सामाजिक चेतना लाने का प्रयास सराहनीय है। संगोष्ठी का आरंभ **डॉ० अरुण कुमार गौतम** के स्वागत गान से हुआ, जबकि अतिथिओं, श्रोताओं तथा किसान मजदूरों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए **महिमाचक** गांव के संवेदनशील सज्जन **ब्रजनंदन** ने इस सारस्वत एवं विचारोत्तेजक आयोजन की सफलता के लिए विशेष रूप से इस गांव के निवासी सिद्धेश्वर तथा **शैलेन्द्र कुमार वर्मा** उर्फ बबलू और उसके साथियों को उनके सक्रिय योगदान के लिए तहे दिल से धन्यवाद दिया।

कृषि को राजनीति से बचाना जरूरी: बोरलॉग

सुनीता, नई दिल्ली से

नोबेल पुरस्कार पाने वाले सर्वप्रथम कृषि वैज्ञानिक और भारत में हरित क्रांति के जन्मदाता **डॉ० नार्मन बोरलॉग** ने नई दिल्ली में भारतीय कृषि एवं अनुसंधान परिषद द्वारा आयोजित संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा कि कृषि एवं वैज्ञानिक अनुसंधान को नष्ट होने से बचाने के लिए गलत राजनीति से छुटकारा पाना जरूरी है। दस दिनों की भारत यात्रा पर पधारे डॉ० बोरलॉग ने उ०प्र०, हरियाणा तथा बिहार की यात्रा के दौरान किसानों को मक्के की खेती को उन्नत बनाने के तरीकों को सुझाया। उनके साथ परिषद के अध्यक्ष डॉ० आर० एस० परोदा भी मौजूद थे। डॉ० बोर लॉग ने बताया कि आमतौर पर राजनीतिज्ञों को कृषि व तकनीक के बारे में बहुत कम जानकारी होती है और उन्हें नौकरशाहों द्वारा जो बता दिया जाता है उसे ही सच मान लेते हैं। गलत राजनीति व कम समझ की वजह से ही सोवियत संघ-**रूस** के कई महान वैज्ञानिक नष्ट हो गए। इसके विपरीत **चीन** की प्रशंसा करते हुए उन्होंने कहा कि कृषि के महत्व को समझने तथा कृषि में काफी पूंजी लगाने के चलते आज चीन विश्व का सबसे बड़ा उपभोक्ता बाजार तथा काफी मजबूत देश के रूप में उभर पाया है। उन्होंने पर्यावरणविदों की भी खिंचाई की। जैविक खाद की उपयोगिता है रासायनिक खाद केवल हानिकारक है ऐसा कहना उचित नहीं।

वर्ष 2011-12 में हरेक भारतीय को भोजन मुहैया कराने के लिए जरूरी है कि खाद्य उत्पादन में प्रतिवर्ष 3.4 प्रतिशत की बढ़ोतरी होती है। फिलहाल यह दर 1.8 प्रतिशत है। जैविक खाद मिट्टी के लिए उपयोगी होती है, किन्तु हमारे यहाँ के भारी पैमाने के मद्धेनजर वह बहुत कारगर नही होगी। अतएव कृषि के क्षेत्र में जैव-प्रद्योगिकी ही फिलहाल एक विकल्प है। खानेवालों की बढ़ती संख्या को देखते हुए आज इस देश में उपज बढ़ाने की सबसे अधिक आवश्यकता है। ऐसी स्थिति में रासायनिक खाद को रोकना उपज को रोकने के समान होगा।

कीटनाशक से केरल का पाद्रे गांव तबाह

जिला प्रशासन का रवैया अजीबोगरीब

-विचार संवाददाता, तिरूवनन्तपुरम से

केरल के कासरगोड जिले का **पाद्रे** गांव एक कीटनाशक औषधि **एंडो सुल्फान** के प्रयोग की वजह से भयानक रोगों से ग्रस्त है। आस पास के दूसरे गांव भी उन्हीं रोगों की चपेटे में हैं। इस कीटनाशक दवा ने गांव के सुरम्य पर्यावरण में जहर घोल दिया है। इस कारण गांव के गांव मरघट में बदल रहे हैं किन्तु जिला प्रशासन का रवैया अजीबोगरीब है। ऐसी विकट परिस्थिति में वह संवेदनहीन दिखता है क्योंकि उनकी ओर से उन रोगों से बचने-बचाने की कोई कार्रवाई नहीं की जा रही है। उल्लेखनीय है कि पाद्रे तथा आसपास के गांवों के ज्यादातर 25 साल से क्रम उम्र के युवकों-युवतियों को कैंसर जैसी जानलेवा बीमारी के साथ-साथ मिरगी मानसिक रूप से अपंग होने की तरह-तरह की बीमारी हो रही है।

कानपुर आई० आई० टी० की **पद्मा एस वांकर** तथा पाद्रे गांव में पिछले 19 साल से रह रहे **डॉ० वाई एस० मोहन कुमार** के अनुसार विज्ञान एवं विश्लेषण से पता चला कि कीटनाशक दवा एंडोसुल्फान का दुष्परिणाम है कि तरह-तरह के रोग खासकर कम उम्र के लोगों को पकड़ रहे हैं। पाद्रे गांव से लाई गई मिट्टी, पानी, सब्जी, फल, दूध और अन्य नमूनों की जाँच के नतीजे से पता चला कि वह कीटनाशक औषधि कई गुना मात्रा में पर्यावरण में घुल गई है। पशु-पक्षियों के चमड़े, दूध, मनुष्य के खून में उसका जहर अपना असर दिखाने लगा है।

पुराना किस्सा यों है कि सत्तर के दशक में काजू की खेती को अधिक उत्पादक बनाने के लिए उक्त कीट नाशक दवा एंडो सुल्फान का छिड़काव पौधों के बचावे के लिए प्रारम्भ किया गया। उस वक्त 2000 से अधिक हेक्टेयर में 1963-64 वर्ष से राज्य सरकार के एक निगम के तहत शुरू की गयी काजू की खेती में उक्त औषधि का िछिड़काव जहाज से किया जाता रहा है। पाद्रे गांव के डॉ०मोहन कुमार के पास 11 साल पहले जब मानसिक रोगी आने लगे तो उनके कान खड़े हुए। उन्होंने छानबीन शुरू की। 1997 में उन्होंने केरल की एक मेडिकल जर्नल में पत्र लिखा जिसमें यह आशंका जताई कि पानी की खराबी के कारण हो सकता है कि रोग फैल रहा हो। दो हजार की आबादी वाले पाद्रे गांव के लोग अपने फार्म के लिए पानी सीधे नाले से लेते हैं जो पहाड़ों से उतरकर आता है। डॉ० मोहन कुमार के मुताबिक अब तक उस गांव के 51व्यक्ति कैंसर से मर चुके हैं, चार लोग मिरगी, मानसिक अपंगता, विक्षिप्तता जैसी बीमारी से पीड़ित हैं। ऐसा लगता है उक्त दवा ने महिलाओं के खून में जहर घोल दिया है जिसके कारण 16 बच्चे अपंग पैदा हुए हैं।

केरल में थोड़ी हलचल मची है। लोग अदालत का दरवाजा खटखटा रहे हैं। उस राज्य की विधान सभा का चुनाव दस्तक दे रहा है। यही कारण है कि उस इलाके की राजनीतिक पार्टियां इसे मुद्दा बनाने से बचना चाहती हैं क्योंकि प्राप्त जानकारी के अनुसार यह कारोबार करोड़ों का है जिसका फायदा राजनैतिक नेताओं को मिलता है। साफ है कि जिस कारोबार से उन्हें लाभ मिल रहा है उसे वे क्यों छेड़े। कहा जाता है कि कीटनाशक दवाओं का कुल कारोबार तीन हजार करोड़ रुपये से ज्यादा है। इसका दसवाँ हिस्सा एंडो सुल्फान का है।

विदित हो कि हर साल काजू की खेती में दिसम्बर, जनवरी तथा मार्च में दवा का छिड़काव होता है तथा उसके उपयोग के लिए छिड़काव से पहले निगम को कुछ एहतियाती उपाय करने के निर्देश तय हैं। जैसे पानी के स्त्रोतों को पूरी तरह ढक दिया जाना। लेकिन ऐसा नहीं किया जाता। काजू की खेती पहाड़ों के ऊपर होती है। वहीं से झरने फूटते हैं। कीटनाशक दवाओं के छिड़काव की वजह से पानी और दवा दोनों में वह औषधि सालों से घुलती जा रही है। हलांकि पिछले दिसम्बर में वहाँ के लोगों ने विरोध स्वरूप छिड़काव को रोकना चाहा परन्तु उनकी एक न चली। आखिर उन बेसहारों का कौन सहारा होगा यह पता नहीं चलता। शुक्र है केरल सरकार ने पहली बार काजू की खेती को कीटनाशकों से बचाने के बजाय लोगों की जान की परवाह की है। इस गांव की पहाड़ियों पर विशाल क्षेत्र में फैले काजू के बगानों में अब हैलीकॉप्टर से खतरनाक कीटनाशक **एंडो सुल्फान** का छिड़काव नहीं किया जाएगा। इस आशय का एक आदेश राज्य सरकार ने केरल प्लान्टेशन कॉरपोरेशन को दिया है। भविष्य में **पाद्रे** गांव के लोगों को आत्महत्या की प्रवृत्ति को बढ़ानेवाले जहर से अब शायद मुक्ति मिल जाए।

विज्ञान को आम आदमी की जिन्दगी में लाए बगैर ऐसी समस्याएं पहचानी नहीं जा सकती। विश्व स्वास्थ्य संगठन के आकड़े के मुताबिक हर साल दुनिया भर में तीन लाख मामले कीटनाशक जहर पैदा होते हैं। इस समस्या की ओर राज्य व केन्द्र सरकार की नजर जानी चाहिए ताकि उन रोगों से गरीब लोगों को छुटकारा मिल सके।

किसानों के मसीहा 'ताऊजी' अब नहीं रहे

भारत के पूर्व उपप्रधानमंत्री तथा जमीन से जुड़े देवीलाल का देहावसान

विचार कार्यालय, दिल्ली

विगत 6 अप्रील को भारतीय राजनीति के शिखर पुरुष तथा भारत के पूर्व उपप्रधान मंत्री **चौधरी देवीलाल** के देहावसान से किसानें का एक चर्चित मसीहा चल बसा। **ताऊ** के नाम से प्रसिद्ध 86 वर्षीय देवीलाल अपने पीछे तीन पुत्र ओम प्रकास चैटाला,रंजीत सिंह और प्रताप सिंह के अतिरिक्त देश के लाखों किसानों एवं शुभच्छुओं को छोड़ गए हैं। उनकें पुत्र **ओम प्रकाश चौटाला** हरियाणा के मुख्यमंत्री हैं। बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री **लालू प्रसाद** तथा भारत के वर्तमान कृषि एवं रेल मंत्री **नीतीश कुमार** एक समय चौधरी देवीलाल के चहेते थे और उन दोनों को राजनीतिक सीढियां चढनें में सदैव मार्गदर्शन करते रहे। लालू प्रसाद ने इसे स्वयं भी स्वीकारा है। भारतीय राजनीति में एक समय ऐसा भी आया था जब चौधरी देवीलाल के सर पर आई प्रधानमंत्री की टोपी को उन्होंने स्वेच्छा से बी० पी०सिंह को पहराई थी यह कहते हुए कि, **मैं ताऊ ही ठीक हूँ। प्रधानमंत्री तो विश्वनाथ प्रताप सिंह ही बनेंगे**। क्या आज की राजनीति में ऐसा सम्भव है? पूर्व प्रधानमंत्री बी०पी०सिंह ने देवीलाल के निधन पर उन्हें किसानों का **'चैम्पियन'** कहते हुए गहरा दुख प्रकट किया। भारत में देवीलाल के निधन पर तीन दिनों तक शोक मनाया गया । 14 सितम्बर,1914 को हरियाणा के सिरसा जिलान्तर्गत चौटाला गांव में जन्में चौधरी देवीलाल 15 वर्ष की आयु में ही गाँधी जी के आह्वान पर दसवीं कक्षा की पढ़ाई छोड़कर आजादी की लड़ाई में

कूद पड़े थे। वे विश्वनाथ प्रताप सिंह तथा चन्द्रशेखर के मंत्रिमंडल में दो बार भारत के उपप्रधान मंत्री रहे। वह ग्रामीण जनता और किसानों के सदैव हितैषी रहे। उन्होंने राजनैतिक समस्याओं के समाधान में अपने विलक्षण निर्णयों से राष्ट्र को प्रभावित किया। उनके निधन से देश ने एक सच्चा सपूत और समाजबादी आन्दोलन का एक मजबूत स्तम्भ खो दिया है। देवीलाल आम जनता के नेता थे। हरियाणा विधान सभा में 90 में से 85 सीटें जीतने के रिकार्ड भी उन्होंने ही बनाया था। देवीलाल अपने किए पर पछताते नहीं थे। देवीलाल मतदाता की नब्ज जानते थे और चुनाव में नोटों का योगदान भी। ताऊ अपने अंतिम दिनों में अकेले थे, शरीर और मन दोनों से ।

अनाशक्त कर्मयोगी इन्द्रजीत गुप्त का महाप्रयाण

विगत 20 फरवरी को देश में सबसे लम्बे समय तक सांसद रहे वयोवृद्ध कम्युनिस्ट नेता कामरेड **इन्द्रजीत गुप्त** के निधन से भारतीय संसद का एक महान व्यक्तित्व अब नहीं रहा। अपने सादे जीवन के लिए प्रसिद्ध स्व० गुप्त राजनीतिक मतभेद के बावजूद भी वे सदैव संसद की गरिमा के अनुरूप ही विरोधियों के साथ आचरण करते थे।

भारतीय कॉम्युनिस्ट पार्टी के वरिष्ठ नेता इन्द्रजीत गुप्त प० बंगाल के मिदनापुर संसदीय निर्वाचन क्षेत्र से लोकसभा के सदस्य थे। आई० के० गुजराल के प्रधानमंत्रित्व काल में वे भारत सरकार के गृह मंत्री भी रहे। उनका जन्म 1919 में हुआ था। कैम्ब्रीज में शिक्षा प्राप्त करने के बाद वे काम्युनिस्ट आन्दोलन में गरीबों की लड़ाई लड़ते रहे। 1957 में पहली बार लोकसभा के सदस्य हुए तथा 1977 को छोड़ वे हमेशा संसद के सदस्य रहे। 1992 में उन्हें सर्वश्रेष्ठ सांसद के रूप में सम्मानित किया गया। उनकी सहजता व व्यवहार कुशलता भुलाई नहीं जा सकती। वे श्रमिकों व किसानों के हक की हिफाजत के लिए ताउम्र आन्दोलन करते रहे। निसन्देह उनके देहावसान से देश ने न केवल एक दक्ष सांसद खोया है बल्कि उनकी मौत से देश व लोकतन्त्र को भारी नुकसान हुआ है। हमेशा मूल्यों की राजनीति में विश्वास करने वाले इस प्रखर सांसद की कमी लोकसभा में बराबर खलेगी।

विचार दृष्टि पत्रिका परिवार की ओर से ऐसे अनासक्त कर्मयोगी कामरेड गुप्त को हार्दिक श्रद्धांजलि।

-राजकिशोर राजन, कोलकाता से

2001-2002 का रेल एवं आम बजटः एक विश्लेषण

विचार संवाददाता, नई दिल्ली से

फरवरी के अन्तिम सप्ताह में प्रस्तुत 2001-2002 के रेल एवं आम बजट पर एक नजर डालना इसलिए भी आवश्यक है कि पिछले वर्षों की तरह न तो यह सख्त है और न ही क्रांतिकारी या स्वप्न-दर्शी। इस वर्ष के रेल और आम बजट ने जहाँ विश्वास पैदा किया है वहीं इससे आशाएं बंधी हैं।

रेल मंत्री सुश्री ममता बनर्जी द्वारा प्रस्तुत रेल बजट को मात्र यह कहकर टाल देना अच्छा नहीं होगा कि यह प० बंगाल के आसन्न विधान सभा चुनाव को मद्दे नजर रखकर बनाया गया है। सच तो यह है कि इस वर्ष के रेल बजट में मानवीय दृष्टि को मद्देनजर रखा गया है और रेलवे अपने सामाजिक दायित्व के निर्वहन में अग्रसर है क्योंकि रेल भाड़े में वृद्धि न कर रेल मंत्री ने आम आदमी की पीड़ा को और न बढ़ाने के संकल्प को पूरा किया है। उनका यह कहना कि रेल भाड़े में वृद्धि से 250 से 300 करोड़ रुपये की अतिरिक्त आय होने से राजनीतिक नुकसान ज्यादा होता, ममता जी के खुले व्यक्तित्व को दर्शाता है। साल भर में डीजल के दामों में दूने की वृद्धि होने के बावजूद रेल मंत्री को यात्री भाड़ा बढ़ाने में संकोच हुआ। हलांकि रेल को गति देने के लिए हजारों करोड़ रुपये का अनुदान माँगने से अच्छा होता यात्री किराए में थोड़ी वृद्धि करना। आखिर रेलवे में यात्रियों की बढ़ती संख्या को देखते हुए उसके विकास के लिए यात्रियों के कन्धे पर थोड़ा भार देना अनुचित नहीं होता। और आखिर कब तक उसके विकास के लिए कटोरा लिए फिरेंगे? यह भी एक अहम् सवाल है!

यह कहने की आवश्यकता नहीं कि सड़कों पर बढ़ी वाहनों की भीड़ तथा अन्य किसी भी यातायात के मुकाबले रेल यातायात सस्ता होने की वजह से यात्रियों का रुझान रेल की ओर बढ़ा है। इसलिए उसके विकास तथा सुरक्षा की कीमत पर यात्रा किराए में वृद्धि न करना लाजिमी नहीं दिखता। हर हमेशा मतदाता के वोट पर नजर रखना भी उसी मतदाता के खिलाफ चला जाता है। नई रेल लाइनों का विस्तार भी राजनीतिक कसौटी पर होता है। विदित हो कि विगत पच्चास वर्षों में कुल 8 हजार किलोमीटर नई रेल लाइनों का विस्तार किया गया, जबकि अंग्रेजी राज में 48 हजार कि० मी० रेल लाइनें थीं। मात्र मानवीय दृष्टिकोण होने का ही परिणाम है कि रेलवे के आधुनिकीकरण, सिगनलिंग संचार प्रणाली नई रेल लाइनों को बिछाकर पुरानी को हटाने, सुरक्षा सम्बन्धी व्यवस्था, रफ्तार वृद्धि, उर्जाकरण तथा रेलवे दोहरीकरण के सारे कार्यक्रम अपेक्षा के अनुरूप न होकर पीछे हो गए। आत्म प्रसिद्धि के लिए रेल भाड़े मे किसी तरह की वृद्धि न करना दिवालिया सरकार के सामने अनुदान माँगने के लिए खड़ा रहने से अच्छा है कि रेलवे अपने पैरों पर खड़ा हो।

जहाँ तक **आम बजट** का सवाल है इस वर्ष के बजट को आर्थिक सुधार की दिशा में एक ठोस एवं व्यावहारिक बताया गया है। खाद्य प्रसंस्करण के क्षेत्र में फल और सब्जी से बननेवाले पदार्थों को उत्पादन शुल्क से मुक्त कर तथा अनुमानित उत्पादन शुल्क की 35 प्रतिशत दर के अंक को पारकर इस बजट में गेहूँ, चावल, मक्का पर क्रमशः 50 प्रतिशत, 70 से 80 प्रतिशत, 50 प्रतिशत तथा चाय, कॉफी, नारियल, गरी पर 70 प्रतिशत तथा खाद्य तेलों पर 70 प्रतिशत सीमा शुल्क कर देने से किसानों की बढ़ती पीड़ा को महसूस किया गया है। किसानों की स्थिति इससे मजबूत हो न हो, उनकी बदहाली जरूर कमेगी। कृषि हमारी अर्थव्यवस्था क आधार है और अच्छे मानसून के बावजूद इधर उसके विकास दर में भारी कमी दिखती है। खाद पर कर घटना भी शुभ है। भारत में बढ़ती बेरोजगारी के चलते गरीबी बढ़ रही है। इस बजट में जो संकेत दिए गए हैं उससे बेरोजगारी बढ़ेगी। बैंकिग सेवा भर्ती बोर्ड को भंग किए जाने, कर्मचारियों-अधिकारियों की संख्या घटाने से तो बेरोजगारी और बढ़ेगी। हलांकि यह कहा गया है कि **फालतू** घोषित लोगों का पूल बनाने और उन्हें नए कामों में लगाने की तैयारी भी व्यावहारिक दिखती है क्योंकि भले ही कर्मचारियों -अधिकारियों की संख्या उदारीकरण के दौर में न बढ़ी हो पर उनको मिलने वाली कुल रकम दस वर्षों में तीन गुनी हो गयी है

जबकि मूल्य सूचकांक दो गुने पर दी गया है। सम्भवत: सरकार खर्चों में कटौती कर रही है पर उसे अन्य क्षेत्रों में भी कटौती करनी चाहिए। इसके विपरीत संसद सदस्यों के वेतन, भत्ते आदि में लगातार वृद्धि करना कहाँ तक उचित है।

वित्त मंत्री ने छोटे और नई अर्थ व्यवस्था से उभरे क्षेत्रों पर तो कर लगाने की तैयारी की है पर पुरानी और मोटी मछलियों को छोड़ दिया है। फार्म हाउसों की खेती से इतर आमदनी पर भी कर लगाना चाहिए था पर उस पर वित्त मंत्री ने चुप्पी साध ली। बेचारे भविष्य निधि वालों पर छुरी फेरना उन्हें आसान लगा। यही नहीं, डाक दरों में बेहिसाब वृद्धि, स्कूटर-मोटर साइकिल को मंहगा करना सवालों के घेरे में आ सकता है।

राजकोषीय घाटे को 5.1 प्रतिशत की सीमा में रखा गया है जो काबिले तारीफ है। भूकम्प और पेट्रोलियम पदार्थों की मंहगाई ने काफी हिसाब गड़बड़ा दिया था पर अधिक भार नहीं दिया गया है इस बजट में। इसलिए इसे व्यावहारिक और ठोस कहना उचित प्रतीत होता है।

कुल मिलाकर जहाँ ममता बनर्जी के रेल बजट को प० बंगाल के मतदाताओं को ध्यान में रखकर बनाया गया दीखता है वहीं यशवंत सिन्हा के आम बजट से भी राष्ट्र में एक राजनीतिक संकेत जाता है कि अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार आर्थिक सुधार के प्रति प्रतिबद्ध है और सख्त निर्णय लेने में वह कतई नहीं हिचकेगी क्योंकि सरकार ने सरकारी उपक्रमों के निजीकरण, श्रम-कानूनों में सुधार तथा सरकारी-खर्चों में कटौती के लिए दृढ़ संकल्प दिख रही है।

कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा के बजट में कटौती का मामला

विचार संवाददाता, नई दिल्ली से

वित्तीय दिक्कतों की आड़ में वित्त मंत्रालय व योजना आयोग ने जिस तरह से कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा के वार्शिक बजट पर कैंची चलाई है उसका तीव्र विरोधा होना शुरु हो गया है। कृषि सम्बन्धी स्थायी समिति ने इस प्रवृति पर नाखुशीजाहिर करते हुए कहा है कि एक तरफ तो सरकार कृषि उत्पादों की गुणवत्ता सुधार कर विश्व बाजार मे छा जाने के दावे कर रही है लेकिन वहीं दूसरी तरफ कृषि अनुसंधान व शिक्षा के बजट में इतनी ज्यादा कटौती की जा रही है कि इनसे जुड़े संस्थानों का चल पाना ही मुश्किल होता जा रहा है।

सरकार की इस दोहरी नीति से बेहद नाराज कृषि सम्बन्धी स्थायी समिति ने साफ-साफ शब्दों में सरकार को चेताया है कि देश में चाहे हरित क्रान्ति हो, श्वेत या फिर नीली सभी क्रान्तियां अनुसंधान एवं शिक्षा के बल पर ही आई हैं, इस लिए सरकार को इस ओर पूरा ध्यान देना चाहिए। जबकि स्थिति यह है कि सरकार इस तरफ से लगातार अपना हाथ खींच रही है। और तो और संसद में इस क्षेत्र के लिए जो बजट पास हो जाता है वित्त मंत्रालय व योजना आयोग उसमें भी कटौती कर दे रहे हैं। इससे नाराज समिति ने इसे संसद की सर्वोच्चता को चुनौती तक करार दे दिया है। समिति ने वित्त मंत्रालय व योजना आयोग की इस प्रवृति पर तीखा विरोध जताते हुए कहा है कि जब एक दफा संसद ने बजट पारित कर दिया है तो फिर उसमें किसी प्रकार की कटौती भी संसद की मंजूरी के बिना नहीं होनी चाहिए।

वित्त मंत्रालय व योजना आयोग को को कोई अधिकार हासिल नहीं है कि वह संसद में पारित बजट में किसी प्रकार का संशोधन कर सके।

शेष महाकाल बोल रहा................

देख लिया, तब मित्रों, हमें **मानव मात्र एक समान, जाति वंश सब एक समान** वाला उस महात्मा का नारा शत-प्रतिशत सत्य-प्रत्यक्ष दर्शन दे गया। हमारी आँखों से तब धाराएं चू पड़ीं, कि उस मसीहे-फरिस्ते की बातें जानते हुए भी कई-कई भारतवासी आज भी मानने में क्यों हिचकिचा रहे हैं। आखिर जनता ऐसे सच्चे नेतृत्वों के उत्पीड़नों को अनुभव करने में अक्षम्य देर क्यों कर देती है!?

अरे, आज न केवल गुजरात की, विश्व के कई देशों-प्रदेशों की धरा काँपने डोलने-डिगमगाने लगी है और विश्व भर में पारस्परिक सहायता-सहयोग देने-लेने की दौड़ मच गई है। पाषाण प्रतिमाएं व निष्प्राण दीवारें-ध्वजाएं ध्वस्त होने लगी हैं। मानव को मानव के निकट लाने, ऐक्य बढ़ाने, अदृश्य सत्ता लाल आँख करके भ्रष्ट-भ्रमित मानवता के सामने आ उपस्थित हो गई है, तब भी हम विलासी-विकारी फिल्मों-मनोरंजनों में ही उलझे रहेंगे.......क्या महाकाल की उपस्थिति को व उसकी कुपित वाणी व हलचल को अब भी नहीं समझेंगे?! आईए-दोहराइए उन पंक्तियों को-**यह बोल रहा है महाकाल......यह बोल रहा है महाकाल........**

सम्पर्क: सम्पादक, **युग चिन्तन,** मजेवडी-362011, जूनागढ़, गुजरात

जब हाथी हथिनी को रिझा कर ले भागा

संवाददाता, नई दिल्ली

फाल्गुन मास के वातावरण में मदमस्त हुआ एक बिगड़ैल टस्कर हाथी राजाजी राष्ट्रीय पार्क से निकलकर चीला वन विश्राम गृह में आ ही नहीं घुसा, अपितु मदमस्त गजराज वन विभाग की एक प्रशिक्षित पालतू मादा हाथी चंचल कली को रिझा कर घने जंगल की ओर ले जाने में सफल भी हो गया। वन कर्मियों द्वारा बमुश्किल तमाम हवाई फायरिंग कर जबरन ले जाई गई। चंचल कली को मदमस्त हुए टस्कर हाथी के चंगुल से छुड़ाकर जैसे-तैसे वापिस लाया गया। वन कर्मियों के अनुसार टस्कर हाथी चीला वन विश्राम गृह में होली के अगले दिन दोपहर को आ धमका। उस समय विश्राम गृह में वन विभाग की तीन पालतू मादा हाथी, एक युवा नर हाथी राजा मौजूद थे। अपने समीप जंगली हाथी को देखकर तीनों मादा हाथियों तथा राजा हाथी ने असामान्य महसूस कर चिंघाड़ना शुरू कर दिया, परन्तु पालतू हाथियों की चिंघाड़ से बेखबर टस्कर हाथी ने मादा हाथियों को रिझाने का प्रयास शुरू कर दिया।

दो मादा हाथियों ने तो टस्कर हाथी के प्रणय प्रस्ताव को ठुकरा दिया, परन्तु युवावस्था की दहलीज पर कदम रख चुकी मादा हाथी चंचल कली टस्कर पर रीझ गई। देखते ही देखते चंचल कली अपने को बंधन मुक्त कर टस्कर हाथी के साथ लम्बे-लम्बे डग भरती घने जंगल में जा छुपी।

पालतू मादा हाथी को जंगली हाथी के साथ जाता देख राजाजी राष्ट्रीय पार्क के वन कर्मियों में हड़कम्प मच गया। रेंज अधिकारी जगमोहन शर्मा, वन्य जीव रक्षक एस० एस० नेगी, हबीब खान तथा महावत महबूब अन्य वन कर्मियों के साथ टस्कर हाथी तथा चंचल कली के पीछे दौड़ पड़े। वन कर्मी काफी अंदर जंगल में जाकर टस्कर हाथी तथा चंचल कली को घेर पाने में सफल हुए।

वन्य जीव रक्षक हबीब खान ने साहस का परिचय देते हुए टस्कर हाथी के अत्यंत समीप जाकर हवाई फायरिंग शुरू कर टस्कर हाथी को घने जंगल में खदेड़ा, तब कहीं जाकर घंटों की भागदौड़ के पश्चात चंचल कली को वापिस वन विश्राम गृह में लाया जा सका। टस्कर हाथी द्वारा रिझाने तथा वन विश्राम गृह में लाया जा सका। टस्कर हाथी द्वारा रिझाने तथा वन कर्मियों द्वारा वापिस लाए जाने के प्रयास में चंचल कली के शरीर पर कई जगह घाव भी हो गए हैं।

उल्लेखनीय है कि दो माह पूर्व भी वन विभाग की एक पालतू मादा हाथी किसी जंगली हाथी की प्रणय पुकार सुनकर विश्राम गृह से भाग निकली थी, जिसे अथक प्रयासों के पश्चात भीमगोड़ा बैराज से वापिस लाया गया था।

तिब्बत को लेकर भारत की बढ़ती हिचक

-विचार प्रतिनिधि दिल्ली से

भारत और चीन के बीव जिन मुद्दों पर खटास रही है, उनमें तिब्बत पर भारतीय नीति भी एक है। भारत अपने सैद्धान्तिक पक्ष का सम्मान बचाते हुए कैसे अपने व्यावहारिक हितों को भी रक्षा करे, यह चुनौती अक्सर हमारे विदेश राजनय को उलझाती रही है। भारत के पूर्व प्रधान मंत्री एच० डी० देवगौड़ा ने जब चीन को यह आश्वासन दिया था कि दलाईलामा का भारत में राजनैतिक गतितिधियाँ चलाने की इजाजत नहीं दी जाएगी तो वे असल में इसी व्यावहारिकता का रास्ता टटोल रहे थे। इन दिनों व्यावहारिकता को मूलमंत्र माननेवाली एक जमात ऐसी उभरी है जो सीधे-सीधे यह मानती है कि भारत को तिब्बत में हस्तक्षेप की नीति अपनानी चाहिए क्योंकि चीन से दुश्मनी मोल लेने का कोई अर्थ नहीं है। यह बात हर को समझनी होगी कि यदि चीन से दुश्मनी मोल लेते हैं तो वह पाकिस्तान के साथ सड़क बनाने का समझौता कर सकता है या उसे आणविक मदद कर भारत की बराबरी मे खड़ा कर सकता है।

तिब्बत को लेकर भारत की बढ़ती हिचक दरअसल एक कमजोर होते राष्ट्र की हिचक है जो अन्दरूनी अराजकताओं और चौत रफर संकटों से घिरा है और कोई नई मुश्किलें उठाने से घबराता है। पिछले साल सत्रहवें करमापा के चुपके से भारत चले आने के बाद भारतीय सरकारी तंत्र में पैदा सकपकाहट सच में इसी कमजोरी प्रमाण थी। आज भी जब भारत ने अन्तत: करमापा को अन्तत: शरण देने का फैसला कर लिया है तो इस बात का ध्यान अवश्य रखा जाना चाहिए कि चीन के साथ कोई अनावश्यक विवाद पैदा न हो। इस क्रम में करमापा के भारत निवास या भ्रमण में भी कोई उत्तेजना भरा माहौल पैदा करने की जरूरत नहीं है। हाल ही में भारत आए ली फंग ने उन कई मुद्दों को रेखांकित किया था जिनमें भारत और चीन के बीच साझा संवाद और उपक्रम सम्भव हैं। यह बात ठीक है कि तिब्बत के सन्दर्भ में भारत की नीति का अपना एक सांस्कृतिक ऐतिहासिक महत्व है किन्तु बाद के वर्षों में तिब्बत के प्रति हमारी उदासीनता ने ही तिब्बती समुदाय को पश्चिमी देशों का मुखापेक्षी होने को बाध्य किया है। दरअसल देलाईलामा या करमापा को राजनैतिक शरण और घूमने-फिरने की आजादी देने का सवाल हमारे लिए एक शक्तिशाली पड़ोसी को भी कारण नाराज न करने के सवाल से भी जुड़ा हुआ है। इसलिए तिब्बत के सवाल पर कोई कदम उठाने के पूर्व हमें काफी सावधानी बरतने की आवश्यकता है।

रेणु के उपन्यासों में आँचलिकता

❑ सिद्धेश्वर

साहित्य की समस्त सर्जनात्मक विधाओं में उपन्यास सबसे अधिक प्रिय और सशक्त विधा है। कारण कि उपन्यास में मनोरंजन का तत्व तो अधिक रहता ही है, साथ ही जीवन को बहुमुखी छवि के साथ व्यक्त करने की शक्ति होती है। उपन्यास का अर्थ है कथा के माध्यम से व्यक्त होने वाला जीवन चित्र जो स्थान विशेष से सम्बद्ध होकर सर्वदेशीय मानव संवेदनाओं और मूल्यों की प्रतिष्ठा करे।

सच कहा जाय तो प्रेमचन्द के आगमन से उपन्यास-युग आरम्भ होता है क्योंकि उपन्यास-साहित्य का सृजन जिस उद्येश्य को लेकर हुआ था उस उद्येश्य की पूर्ति प्रेमचन्द के पूर्व उपन्यासों द्वारा नहीं हुई। प्रेमचन्द ने पहली बार उपन्यास के मौलिक क्षेत्र, स्वरूप और उद्येश्य को पहचाना तथा उसे भव्य समृद्धि प्रदान कर काफी उँचाई तक ले गए। प्रेमचन्द ने अपने उपन्यास के माध्यम से वैविध्यपूर्ण कथा-क्षेत्रों के उद्घाटन के साथ-साथ शिल्प के अनेक प्रयोग किए। उनके परवर्ती कथाकारों में जैनेन्द्र, अज्ञेय, यशपाल आदि ने उसे नए आयाम दिए, पर प्रेमचन्द की परम्परा से अलग हटकर सूक्ष्म ऐन्द्रिकता और कलात्मकता के साथ कथा शिल्पी फणीश्वर नाथ रेणु अपने आँचलिक उपन्यासों के माध्यम से अंचल विशेष के सामाजिक जीवन की बारीकियों के उदगाता हुए।

इसके पूर्व कि रेणु के उपन्यासों की आँचलिकता पर विस्तार से चर्चा करें, आँचलिकता के स्वरूप तथा उसकी विशेषताओं पर हम प्रकाश डालना चाहेंगे। जहाँ तक उसके स्वरूप का सवाल है आँचलिक उपन्यास की सृष्टि के लिए पहली शर्त है- समष्टि मूलक जीवन दृष्टि। दूसरा उसके केन्द्र में कोई विशिष्ट समाज होता है, व्यक्ति विशेष नहीं। समाज के ही विविध पहलुओं का चित्रण आँचलिक उपन्यास में होता है। तीसरा यह कि आँचलिक उपन्यास की यथार्थता प्रादेशिकता से भिन्न प्रकार की होती है।

इसी प्रकार चरित्र-चित्रण की दृष्टि से आँचलिक उपन्यास की सबसे पहली विशेषता है-पात्र बहुलता। समाज-जीवन के विभिन्न पहलुओं को चित्रित करने के लिए अनेक पात्रों की आवश्यकता होती है। दूसरी विशेषता है-अनायकता। आँचलिक उपन्यास में समाज की नायकता होती है, कोई पात्र विशेष नायक नहीं होता। समाज की नायकता में ही सभी पात्र उपस्थित होते हैं। सच कहा जाय तो आँचलिक उपन्यासों में कोई पात्र क्लासिक रूप में उभर नहीं पाता है। जिस प्रकार प्रेमचन्द के सामाजिक उपन्यास-**'गोदान'** में होरी, धनिया, 'रंगभूमि' में सूरदास, 'कर्मभूमि' में अमरकान्त, 'निर्मला' में निर्मला आदि मुख्य नायक, नायिका के रूप में उभर कर आए हैं आँचलिक उपन्यास में ऐसा देखने को नहीं मिलता है क्योंकि यहाँ उपन्यासकार का ध्यान पात्र पर न होकर समाज तथा अंचल विशेष की समग्रता की संस्कृति को उभारना होता है। इसकी तीसरी विशेषता है पात्रों का प्रतिनिधि स्वरूप। आँचलिक उपन्यास के पात्रों में व्यक्ति वैचित्र्य का तत्व गौण रूप से होता है। प्रजातीय तत्व की प्रमुखता के कारण वे वर्गपात्र अधिक होते हैं। आँचलिक उपन्यासों में देश काल का तत्व विशेष रूप से उभर कर सामने आता है। इसमें भौगोलिक परिवेश के चित्रण पर अतिरिक्त बल नहीं दिया जाता क्योंकि उसका उद्येश्य तो समाज जीवन का चित्रण करना होता है। इसी प्रकार आँचलिक उपन्यास की भाषा शैली अनूठी होती है। इसमें स्थानीय रंग और कचराही बोली की प्रमुखता होती है।

इस आधार पर अब हम देखें कि फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यासों में आँचलिकता कहाँ तक परिलक्षित होती है। यों तो मुख्य रूप से रेणु के पाँच उपन्यास उनके जीवनकाल तक आए-**मैला आँचल**(1954), **परती परिकथा**(1957)

विगत 4 मार्च को राष्ट्रीय विचार मंच की ओर से पटना में रेणु की 80 वीं जयंती के अवसर पर आयोजित विचार संगोष्ठी में सिद्धेश्वर जी ने रेणु के उपन्यासों में आंचलिकता विषय पर एक आलेख का पाठ किया, जिसे यहाँ पाठकों के अवलोकनार्थ प्रस्तुत किया जा रहा है। उल्लेखनीय है कि इसी विषय को लेकर सिद्धेश्वर जी की एक वार्ता कथा लेखिका चित्रा मुद्गल तथा डॉ० शिवनारायण के साथ पिछले 28 फरवरी को दिल्ली दूरदर्शन-1 पर रेकर्डिंग हुआ, जिसका प्रसारण संभवतः 17 अप्रैल को संध्या छः बजे 'पत्रिका' कार्यक्रम के तहत डी० डी०-1 पर किया जा सकेगा।

-कार्यकारी सम्पादक

दीर्घतपा(1963), **जुलूस**(1965) और **कितने चौराहे** (1966) किन्तु 11 अप्रैल, 1977 को रेणु के निधन के बाद **पलटू बाबू का रोड** नामक उपन्यास प्रकाशित हुआ। इन उपन्यासों में **मैला आँचल** और **परती परिकथा** को सर्वाधिक प्रसिद्धि मिली। इसलिए इन्हीं दो उपन्यासों की आँचलिकता पर अपने विचार केन्द्रित करेंगे।

मैला आँचल में बिहार के पूर्णिया जिला स्थित **मेरीगंज** अंचल की जिन्दगी का वैविध्यपूर्ण चित्रण करने में रेणु ने कोई कोर कसर नहीं छोड़ रखा है। उस अंचल विशेष के जन-जीवन को सूक्ष्मता से परखकर एवं अपनी तूलिका से स्थानीय रंग भरकर रेणु ने ऐसा वर्णन किया है कि मिथिला व अंगिका की मिट्टी बोल उठी है, वहाँ का लोक-जीवन मुखर हो उठा है। लोकगीत, लोकनृत्य, तुकबन्दियाँ, किस्से, गालियां, भजनगीत, स्थानीय मुहाबरे, टोने-टोटके ये सब रेणु के इन उपन्यासों में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होते हैं। रेणु के आँचलिक उपन्यास टूटते हुए भारतीय जीवन की आन्तरिक लय को पकड़ते हैं क्योंकि नागरिक जीवन से सम्बद्ध उपन्यासों में जिन्दगी की सच्ची धड़कन महसूस नहीं होती। रेणु अपने आँचलिक उपन्यासों में उन जनपदों का ही जीवन व्यक्त करते हैं जिनको उन्होंने स्वयं अपने भीतर जिया है। पूर्णिया के **औराही हिंगना** गांव में 4 मार्च, 1921 को जन्में रेणु ने काशी विद्यापीठ से शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् अपने उसी गांव को अपना कर्म क्षेत्र बनाया। काशी विद्यापीठ में शिक्षा प्राप्ति के दौरान वहां के कुलपति तथा समाजवादी आन्दोलन के अग्रणी आचार्य **नरेन्द्र देव** तथा **जयप्रकाश नारायण** के सान्निध्य में रहने का प्रभाव रेणु के जीवन पर काफी पड़ा। यही कारण है कि रेणु के इन उपन्यासों में आँचलिकता की झलक के साथ-साथ उस अंचल के तत्कालीन सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, धार्मिक सभी पक्षों का सफल चित्रण दिखाई देता है। अंचल विशेष की प्राचीन मान्यताओं की सहज धारा के बीच आधुनिक विचारों की ज्वार-भाटा का भी चित्रण हुआ है रेणु के आँचलिक उपन्यासों में, जो आँचलिकता की एक शर्त भी है। उनके उपन्यासों में पात्र-विशेष को कथानक में महत्व विशेष रूप से नहीं दिया गया है। **मैला आँचल** में लगभग दो सौ पात्र हैं पर किसी भी पात्र का विशेष महत्व नहीं दिखता। नगर से आया डॉ० प्रशान्त भी गांव में जाकर वहाँ की संस्कृति में रस-बस जाता है तथा वहाँ के लोगों की पीड़ा और दु:ख-दर्द को आत्मसात कर लेता है। फिर भी वह उपन्यास के नायक के रूप में उभर नहीं पाता है।

ग्रामीण क्षेत्र-विशेष की कथा-वस्तु, पात्र, संवाद, दृश्य-योजना, देशकाल तथा भाषा शैली का सजीव चित्रण जिस ढ़ंग से रेणु के उपन्यासों में हुआ है वह उसे आँचलिकता की पंक्ति में सहज भाव से ला खड़ा करता है। **मैला आँचल** में कचराही बोली यानी कचहरी की खिचड़ी भाषा का इस्तेमाल किया गया है किन्तु अंगिका के स्पर्श से युक्त कचराही बोली का प्रयोग होते हुए भी गीतों की भाषा पूर्णत: अंगिका है। **परती परिकथा** में श्रीमती गीता मिश्र की अनपढ़ नौकरानी शिवेन्द्र मिश्र के जेल से छूटकर आने के बाद सूचना देती है-"**दूल्हा बाबू आविगेल ....हमर बात ठीक भेल**।" इस तरह के एक आध वाक्य यत्र-तत्र स्वाभाविकता को बनाए रखते हुए बोधगम्यता को क्षति नहीं पहुँचाते । याद रहे कि किसी भी भाषा के साहित्य में भाषा के प्रयोग की पहली शर्त बोधगम्यता होती है। रेणु के प्राय: सभी आँचलिक उपन्यासों की भाषा में सरलता, रोचकता और प्रवाह है।

दीर्घतपा को छोड़कर रेणु के सभी उपन्यासों का घटनास्थल अंगिका का मेरीगंज अंचल है। कारण कि रेणु अंगिका में जन्मे ही नहीं अपितु मन से इस अंचल के साथ जुड़े रहे। वस्तुत: रेणु हिन्दी के पहले उपन्यासकार हैं, जो उस अंचल में रहकर प्राणों में घुले हुए रंग और मन के रंग को, यानी मनुष्य के राग-विराग और प्रेम को, दु:ख और करुणा को, हास-उल्लास और पीड़ा को अपने उपन्यासों में एक साथ लेकर **आत्मा के शिल्पी** के रूप में उपस्थित होते हैं। रेणु का मन मानों सरसों की पोटली है। इन्हीं विशेषताओं के कारण उनके उपन्यास आँचलिकता की श्रेणी में सीधे उतरते हैं। यही वजह है कि '**अज्ञेय**' ने रेणु को '**धरती का धनी**' कहा है। **निर्मल वर्मा** रेणु की **समग्र मानवीय दृष्टि** का उल्लेख करते हुए उन्हें समकालीन कथाकारों के बीच संत की तरह उपस्थित करते हैं।

फणीश्वरनाथ रेणु के व्यक्तित्व में गांव के खेत-खलिहान से लेकर राजधानी के कॉफी हाउस तक की एक आश्चर्यजनक संगति मिलती है। उनके अनुभव की दुनिया बहुवर्णी और बहुआयामी है। उनकी दुनिया है-धूल, शूल और फूल से भरी हुई। **मैला आँचल** के प्रारम्भ में ही सुमित्रानन्दन पंत की **भारत माता ग्राम वासिनी** कविता की दो पंक्तियाँ उद्धृत हैं-

खेतों में फैला है श्यामल
धूल भरा मैला-सा आँचल"

रेणु ने अपने **परती परिकथा** उपन्यास को भैया महेन्द्र को समर्पित किया है जिसने उनके गांव के निकट सिमराहा की सपाट धरती को हरी-भरी देखने का सपना देखा था। इसी सपने का सजातीय सपना इस उपन्यास के पात्र **जितेन्द्र** ने देखा है। इसी सपने के कारण औराही हिंगना के समाजवादी लेखक रेणु को जितेन्द्र प्रिय लगता है। इस सपने के अतिरिक्त लोक संस्कृतिमूलक समाज के गठन का स्वप्न रेणु के समान जितेन्द्र ने देखा है। रेणु की

जन्मभूमि बंगाल, पाकिस्तान और नेपाल के निकट है। इसलिए देश-विदेश का प्रभाव उनके व्यक्तित्व पर भरपूर पड़ा है। उनके **जुलूस** उपन्यास की नायिका बंगाली है। इस उपन्यास के लगभग आधे पात्र बंगाली हैं। मिट्टी का प्यार रेणु के उपन्यासों में उत्कृष्ट रूप में व्यक्त हुआ है। इस प्यार में कहीं मोहग्रस्तता नहीं है, इसलिए अन्य अंचलों के प्रति कहीं उपेक्षा का भाव नहीं है। 1954 में प्रकाशित **मैला आँचल** का कथानक 1942-52 से सम्बन्धित है। उनके आँचलिक उपन्यास प्रेमचन्द के गोदान, रंगभूमि, कर्मभूमि, त्याग-पत्र आदि सामाजिक उपन्यासों की परम्परा में नहीं रखे जा सकते। इसका स्थान आचार्य शिवपूजन सहाय के **देहाती दुनिया** के बाद आता है। प्रेमचन्द के उपन्यास में जहाँ सामाजिक यथार्थ देखने को मिलता है वहीं रेणु के उपन्यासो मे समाजवादी यथार्थ परिलक्षित होता है। इसलिए रेणु के उपन्यास सामाजिक, ऐतिहासिक और मनोवैज्ञानिक उपन्यासों से भिन्न आँचलिक उपन्यास कहलाए।

यों तो रेणु ने जिन महान कथाकारों से प्रेरणा ग्रहण की उनमें रूसी कथाकार **मिखाइल शोलोखोव**, बंगला कथाकार **ताराशंकर बंद्योपाध्याय** और **सतीनाथ भादुड़ी** तथा हिन्दी के कथा सम्राट **मुंशी प्रेमचन्द** का नाम आता है किन्तु मुख्य रूप से अपने साहित्यिक गुरु सतीनाथ भादुड़ी से वे सर्वाधिक प्रभावित हुए क्योंकि 1942 के आन्दोलन में भाग लेने की वजह से वे दोनों भागलपुर जेल में एक साथ थे। भादुड़ी के दो उपन्यास-**जाग री** और **ढोढ़ाई चरितमानस** का प्रभाव रेणु के लेखन पर अधिक पड़ा। इन चारों का मिलाजुला प्रभाव भी रेणु के आँचलिक उपन्यासों में स्पष्ट झलकता है। रेणु जहाँ प्रेमचन्द द्वारा निर्मित किस्सा गोई को ग्रहण करते हैं वहीं शोलोखोव की तरह सांस्कृतिक गरिमा को अपने उपन्यासों में मंडित करते हैं। इसी प्रकार सतीनाथ भादुड़ी की तरह शिल्प में नवीनता और आधुनिकता तथा ताराशंकर वंद्योपाध्याय की तरह स्थानीय रंगों को विभूषित करते हैं। यही कारण है कि खेत-खलिहानों वाले भारतवर्ष के सामंती बेड़ियों में जकड़े लाखों स्त्री, पुरुषों, बच्चों,बूढ़ों और नौजवानों के दु:ख-दर्द, हर्ष-विषाद आदि को रेणु ने अपनी कृतियों में उभारा है। मेरीगंज अंचल के हर रस्म-रिवाज, धार्मिक बिडम्बना, संस्कृति, आर्थिक व्यवस्था, राजनीतिक पार्टियों की गतिविधि, महात्मा गाँधी के अहिंसक आन्दोलन को बड़े सजीव ढंग से रेणु ने **मैला आँचल** में दर्शाया है। उनके उपन्यासों में पुरानी मान्यताएं, पुराने विचारों, अंधविश्वासों और लोककथाओं तथा समाजवादी धारा का चित्रण बखूबी हुआ है। दरअसल जिस जिन्दगी की धारा में जीवनभर रेणु डूबे रहे, यह आँचलिक उपन्यास उस जिन्दगी और उसमें जीने-मरने वाले लोगों का दबाव था कि उनके चित्रण के लिए उन्हें विवश होना पड़ा।

फणीश्वरनाथ रेणु का अन्तिम उपन्यास **कितने-चौराहे** है। इस उपन्यास में सन् 1942 में **बापू** की **करो या मरो** पुकार को सुनकर **भारत छोड़ो आन्दोलन** में कूद पड़नेवाले किशोरों की कहानी है। किशोरावस्था जीवन का महत्वपूर्ण चौराहा होती है। इस अवस्था में व्यक्ति के भटकने की सम्भावनाएं अधिक होती हैं। रेणु जी ने इस उपन्यास में देश का काम करते हुए अपने गन्तव्य स्वधर्मपथ पर अग्रसर होते समय प्रलोभनों के चौराहों पर न मुड़ते हुए आगे बढ़ने का संदेश पाठकों को दिया है। **कितने चौराहे** राष्ट्रीय गीत का उपन्यास रूप है। राष्ट्रीयता की इस भावना में कहीं भी घृणा, विद्वेष, प्रतिशोध आदि का लवलेश नहीं है। इसमें माखनलाल चतुर्वेदी की **एक फूल की चाह** कविता की तरह बलिदान की भावना अनुस्यूत है।

एक बार जब लोठार लुट्से ने स्वयं रेणु से उनके द्वारा प्रयुक्त **आँचलिक** विशेषण का रहस्य जानना चाहा, तो रेणु ने उत्तर दिया-**मैंने जिन शब्दों का इस्तेमाल किया, जैसी भाषा लिखी, क्या पता उसको लोग कबूल करेंगे या नहीं करेंगे-इसलिए मैंने उसे (मैला आँचल को) आँचलिक उपन्यास कह दिया। उसके बाद से लोगों ने एक खाँचा बना दिया आँचलिक का।**

इस प्रकार रेणु के पूरे उपन्यासों की विवेचना के बाद हम पाते हैं कि उनके पास अनुभव की एक बड़ी पूंजी थी जिसका उपयोग उन्होंने अपने आँचलिक उपन्यासों में तो किया ही, अपने सम्पर्क के अनेक लोगों के बीच इसे खुलकर वितरित भी किया। रेणु जी की इस उदारता से इसके लेखक सहित वे सब लोग परिचित हैं, जो उनके सम्पर्क में आए थे। मुझे अच्छी तरह आज भी याद है कि पटना के कॉफी हाउस में प्रतिदिन घंटों बैठकर कॉफी की चुस्की के साथ उनकी प्यारी-प्यारी बातें को हम सब सुनते रहते थे। उनकी प्रतिबद्धता सामाजिक सरोकारों के प्रति ज्यादा रही। पटना के सामाजिक जीवन में वे इस प्रकार रच-बस गए थे कि समाज का हर वर्ग उनका आदर करता था। यही कारण है कि तीन पीढ़ियों को उन्होंने एक साथ जोड़ा। पुरानों का स्नेह, समब्यस्कों का सम्मान तथा नई पीढ़ी के लोगों का आदर उन्हें प्राप्त था।

आधुनिक हिन्दी साहित्य में किसी भी नए लेखक को अपनी प्रथम कृति के प्रकाशित होते ही सम्भवत: इतनी शोहरत, इतनी प्रशस्ति और इतना यश नहीं मिला है जितना रेणु को उनकी पहली कृति **मैला आँचल** के प्रकाशन के बाद मिला। विश्वास है हिन्दी साहित्य में आँचलिक उपन्यासों का प्रवाह जब तक प्रवाहित होता रहेगा तब तक रेणु उस गंगा के लिए सदा गंगोत्री तथा मानसरोवर के रूप में श्रद्धास्पद बने रहेंगे।

सम्पर्क: **दृष्टि**, 6, विचार विहार,
यू-207, शक्करपुर, दिल्ली-92

रेणु साहित्य के विविध रंग-गंध और बिंब

❑ रंजनीकांत

फणीश्वर नाथ रेणु की रंग-गंध और बिंब वाली दुनिया में किसी एक विषय पर लिखना साहित्यिक बेमानी होगी क्योंकि रेणु की दुनिया गांवों के खलिहानों से लेकर पटना कॉफी हाउस तक पसरी थी। ऐसी स्थिति में उन पर कलम चलाने का प्रथम बिन्दु कहाँ हो सकता है, कहना मुश्किल। उनकी जीवन साथी श्रीमती लतिका जी से उलझ कर ढूंढा जा सकता है। साक्षातकारों के समक्ष कुछ भी कहना उनके लिए एक उलझन थी। वह कहती हैं कि **"मुझे समझ में नहीं आती, कितना और क्या कहूं। उनके व्यक्तित्व के किस पहलू की गांठ खोलूं-उनके लेखक, सखा, मित्र, पति, राजनैतिक योद्धा, उनकी बाल सुलभ चपलता और जिंदा या मरीज होने की। मेरे लिए उनके जीवन का कौन-सा पहलू महत्त्वपूर्ण रहा है? यह सब संक्षेप में ही कहना हो तो फिर उनतींस नहीं, तैंतीस वर्ष पहले से ही शुरू करना होगा।"**

उनके पाठकों, मित्रों और आलोचकों के समक्ष उनकी धूप, फूल और काँटों की दुनिया एक ओर और **तीसरी कसम** के **राजकपूर** और **वाहीदा रहमान** जैसे कलाकारों की दुनिया थी तो दूसरी ओर उनके गंबई ग्रामिणों की थी। तीसरी ओर युवा पीढ़ी के नवोदित रचनाकारों की थी जिनके बगैर उनकी दिनचर्या अधूरी होती थी। **उनके नश-नश में गांवों की मिट्टी की सौंधी गंध, फूलों का महकता सुगंध और मनुष्य में लुप्त होती मनुष्यता की सूखती धारा प्रवाहित होती रहती थी।** युवा लेखकों के वे फैन थे जिनके लिए पटना कॉफी हाउस का रेणु कॉर्नर के इर्द-गिर्द के कहकहे आज उनके मन को मर्माहत करने वाला याददाश्त है।

देहावासान रेणु का समूची संवेदना का महाप्रयाण था। तीसरी कसम एक जीता-जागता मानवीय दुनिया की एक विलक्षण अभिव्यक्ति है। रेणु का बहुआयामी व्यक्तित्व मानव समाज का एक ऐसा अलबम था जिसमें पूरी दुनिया समाहित थी। रेणु का पूरा जीवन दुःख भरा था। लेकिन रेणु ने अपने दुःख का अहसास किसी को नहीं होने दिए और चले गये। उनके जुझारू व्यक्तित्व में हार मानने की कोई गुंजाइश नहीं थी। रेणु एक साधन विहीन रचनाकार थे। ऐसी स्थिति में भी उनकी कलम रुकी नहीं। उनके भीतर रस और संगीत लबालब भरे थे।

आजादी के बाद जीवन के हर आयाम में भारी परिवर्तन आया। रेणु ने इस बदलाव को भी एक क्रांति माना। इसलिए उनका साहित्य भी ठीक आजादी के बाद उस भंयकर क्रांति को चीरते हुए पस्त पड़ गयी साहित्यिक धारा में कई नये आयाम जोड़ दिया। प्रेमचन्द आजादी पूर्व के रचनाकार थे। रेणु स्वातन्त्र्यो के रचनाकार थे। यानी दोनों एक दूसरे के पूरक थे। यदि रेणु जी प्रेमचन्द के पूरक नहीं होते तो प्रेमचन्द की साहित्यिक साधना समय पाकर धीरे-धीरे फीकी होती चली जाती। यह जितना अनुमान है उतना ही सत्य भी। क्रांति की चपेट में कौन -कहां, कैसे लुप्त हो जाते हैं यह एक अमूक पहेली है। आजादी के बाद हर देश के साहित्यिक ताने-बाने तेजी से बदल गये। प्रकृति की सुन्दरता, गीत, स्त्रियों की सुन्दरता के गुणगान की सीमा को तोड़कर दुनियाभर की रचना धर्मिता मनुष्य के दुःख-दर्द की अभिव्यक्ति वाली धर्मिता बन गयी, किन्तु शाश्वत शक्तियों का पराजय होता जो अस्वाभाविक होता। मनुष्यता के प्रति प्रतिबद्ध न होकर किसी दल के प्रति प्रतिबद्ध होकर सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक ढांचे को मजबूत बनाये नहीं रखा जा सकता है। रेणु ने इस सत्य को समझा और कम से कम उपन्यासों और कथाओं को लिखकर पूरी दुनिया के प्रथम पंक्ति में बैठे रचनाकारों की श्रेणी में आ धमके। रेणु की इसी साहित्यिक सामर्थ्य ने उन्हें तानाशाही के विरुद्ध खड़ा किया और अपने जानलेवा रोग-ग्रस्त काया के साथ तानाशाही के खिलाफ आन्दोलन में कूद पड़े रेणु इस आन्दोलन की अगली कतार में खड़े हो गये। इस काल में रेणु ही सबसे खरे सिद्ध हुए। उन्होंने **पद्म श्री** उपाधि और 300/-बजीफे को एक झटके में सरेआम को वापस ही नहीं किया, आजीवन ऐसे अलंकार अलग-थलग हो गये। ऐसे योद्धाओं में रेणु अकेले रहे और वही उन्हें भारतीय रचनाकारों के बीच सबसे असरदार रचनाकार बना दिया। ऐसा था रेणु का व्यक्तित्व। उन्होंने जीवन पर्यन्त स्वतत्रंता पेंशन की ओर ताके भी नहीं, आर्थिक बदहाली जीना उन्हें ज्यादा अच्छा लगा।

सम्पर्क :- हिमाचल प्रेस, कदमकुआँ
पटना -3

दौलत

❑ कृष्ण कुमार राय

बहुत बड़ी बला है यह निगोड़ी दौलत। जिसके पास है वह भी परेशान जिसके पास नहीं उसकी परेशानी का आलम तो पूछना ही क्या। दौलत नहीं तो सारा सुख-चैन सपना और दौलत है तो नींद हराम। दौलत की चिन्ता में निर्धन परेशान, उसकी नींद हराम। अधिक दौलत बटोरने की फिक्र में धनवान हैरान और उसकी भी नींद हराम। राजा हो या भिखारी, पुरुष हो या नारी, ब्रह्मचारी हो या व्यभिचारी, योगी हो या भोगी, मंत्री हो या दरबारी, व्यापारी हो या सरकारी कर्मचारी, राजपत्रित अधिकारी हो या चतुर्थ श्रेणी का कर्मचारी, सभी दौलत के भूखे होते हैं। सभी दौलत के पीछे भागते हैं। सभी दौलत के नीचे बसते हैं।

दौलत है तो जोरू भी गुलाम है। दौलत नहीं तो खुद पुरुष जोरू का गुलाम है। दौलत से ही सुयोग्य वर की खरीदारी की जाती है, दौलत नहीं तो बिटिया कुँआरी भी रह जाती है। दौलत है तो जर-जमीन की भरमार है, कोठियों की कतार है। दौलत नहीं तो गन्दे नाले के किनारे झोपड़-पट्टी भी मुहाल है। दौलत है तो दीवाली की द्युति और दमक है, पटाखों और फुलझरियों की बहार है, दौलत नहीं तो सब बंटाधार है। दौलत है तभी तक द्यूत-क्रीड़ा भी सुहाती है, दौलत नहीं तो द्रुपद-सुता तक दाँव पर लग जाती है। दौलत है तो दारू है, दोस्त हैं, आगे-पीछे लगा दरबार है। बिना दौलत के सब सूना और बेकार है। दौलत है तो दुनिया भर की सुख-सुविधाएँ और ऐशो-आराम है। दौलतमन्द के ही आगे-पीछे सब मँडराते हैं। गाड़ी-घोड़े का सुख भी दौलतवाले को ही मयस्सर है। निर्धन का कोई पुछवैया नहीं। चारो तरफ दौलतमन्द का ही राज है। निर्धन तो रोटी, कपड़ा और मकान को भी मुहताज है।

दौलतमन्द की हविस कभी पूरी नहीं होती। जो दौलत तिजोरियों में बन्द है उसकी सुरक्षा की चिन्ता दौलत वाले को हर दम सताती है। चोर-डाकुओं और लुटेरों का भय भी उन्हीं को आतंकित किये रहता है। सरकारी अमलों के छापों का भूत उन्हीं के सिर पर सवार रहता है। फिर भी और अधि

दौलत जोड़ने की हवस और ललक ज्यों की त्यों बनी रहती है। उसके लिए हर तरह के जोड़-तोड़ में दौलतमन्द दिन-रात लिप्त रहता है।

राजनीति के अखाड़े में भी दौलत की महिमा अपरंपार है। दौलत से चुनाव जीते जा सकते हैं। राजनीति में दबदबा बनाये रखने के लिए दौलत से ही गुण्डे पाले जाते हैं। अपने देश के लोकतन्त्र में तो दौलत के बल-बूते पर अल्प-मत वालों की भी सरकारें बन जाती हैं। बहुमत की सरकारें अल्प-मत में आने पर भी बची रह जाती हैं और दौलत के बल पर चलती जाती हैं।

दौलत के लिए क्या नहीं होता इस धरती पर। दौलत की ही खातिर चोरी-डकैती और लूट-पाट होती है। दौलत वाले का ही फिरौती के लिए अपहरण होता है। दौलत के लिए ही कत्ल होते हैं। दौलत वह सब कुछ करवाने की ताकत रखती है जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। दौलत नामुमकिन को भी मुमकिन बना सकती है। दौलत में वह दम है जो दोस्त को भी दुश्मन और ईर्ष्यालु बना देती है। दौलत की ही बदौलत लोग दूर-दूर से रिश्ता जोड़ने चले आते हैं। लेकिन वही दौल्त कभी-कभी अपनों को भी पराया बना देती है। दौलत में जहाँ परिवारों को जोड़कर रखने की क्षमता है, वहीं दौलत परिवारों को तोड़ने में भी अहम भूमिका निभाती है। दौलत कभी तो रिश्तों को मधुर बनाये रखने में सहायक होती है तो कभी उन्हें तोड़-मरोड़कर निर्जीव भी बना देती है। दौलत में वह दमक है जो सभी को समान रूप से प्रभावित करती है। कंगाल दौलत के लिए तरसता रहता है लेकिन उसके हाथ नहीं लगती, उसके पास नहीं फटकती। कभी ऐसा भी दिन आता है जब वही दौलत बड़े-बड़े दौलतमन्दों और धन-कुबेरों को भी धूल चटाकर दिवालिया बना देती है। उनके खजानों से रूठकर मुँह मोड़ लेती है। दौलत की यह विशेषता है कि वह कभी किसी को शान्ति और सन्तोष नहीं प्रदान करती। दौलत वालों को भी कभी चैन से जीने नहीं देती।

दौलत की देवी लक्ष्मी भी बड़ी चपला और चंचला है। स्थिर होकर कहीं एक स्थान पर बैठना नहीं चाहतीं। कभी इनसे रूठी तो कभी उनसे प्यार कर बैठी। कभी यहाँ घुटने टेककर बैठ गयी तो कभी वहाँ जाकर डेरा डाल दिया। कभी इनको दगा दे दिया तो कभी उनका आलिंगन कर लिया। बड़ी अनोखी अदा और निराली चाल है उप चपला की। कब किसपर आसक्त होकर नाता जोड़ ले और कब किससे विरक्त होकर मुँह मोड़ ले, नाता जोड़ ले, इसका अनुमान लगाना टेढ़ी खीर है।

दौलत कभी किसी को तृप्त नहीं कर सकती। बिना तृप्ति के दुनिया भर की दुश्चिन्ताओं और भव-बन्धन से मुक्ति नहीं मिल सकती। यदि संसार में सुख-चैन से जीने की चाहत है तो दौलत की दुनिया और दमक से दूर रहना होगा। दौलत के मोह-पाश से अपने को मुक्त कर जीना होगा। सन्तोष की गठरी को ही सबसे बड़ी दौलत मानकर उसे हँसी-खुशी के साथ ढोना होगा।

दौलत कभी किसी को तृप्त नहीं कर सकती। बिना तृप्ति के दुनिया भर की दुश्चिन्ताओं और भव-बन्धन से मुक्ति नहीं मिल सकती। यदि संसार में सुख-चैन से जीने की चाहत है तो दौलत की दुनिया और दमक से दूर रहना होगा। दौलत के मोह-पाश से अपने को मुक्त कर जीना होगा। सन्तोष की गठरी को ही सबसे बड़ी दौलत मानकर उसे हँसी-खुशी के साथ ढोना होगा।

सम्पर्क: एस० 2/51-ए, अर्दली बाजार,
वाराणसी(उ० प्र०) 221002

तमिलनाडु हिन्दी अकादमी का तृतीय वार्षिकोत्सव

तमिलनाडु के साहित्यकारों, पत्रकारों, शिक्षाविदों, राजभाषा अधिकारियों और हिन्दी प्रेमियों की प्रतिनिधि संस्था **तमिलनाडु हिन्दी अकादमी** का तृतीय वार्षिकोत्सव पिछले 31 दिसंबर को सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। इस समारोह का आयोजन "ट्रिपल हेनिक्स ऑडिटोरियम", केंद्रीय चर्म अनुसंधान संस्थान में किया गया। जिसकी अध्यक्षता सुप्रसिद्ध विद्वान **आचार्य विष्णुकांत शास्त्री**, राज्यपाल, उत्तरप्रदेश ने की। अकादमी के अध्यक्ष, **डॉ० बालशौरी रेड्डी** ने स्वागत भाषण दिया। अकादमी

के महासचिव, **ईश्वर करुण** ने अकादमी का वार्षिक प्रतिदवेदन प्रस्तुत करते हुए कहा कि अकादमी तमिलनाडु में रचे जा रहे हिन्दी साहित्य को राष्ट्रीय स्तर पर लोकप्रिय बनाने एवं यहाँ के साहित्यकारों को राष्ट्रीय स्तर पर स्थापित करने के उद्देश्य से कार्यरत है। श्री करुण ने कहा कि तमिलनाडु में बड़ी मात्रा में हिन्दी साहित्य जगत को उपयुक्त जानकारी दिया जाना आवश्यक है।

हिन्दी और भारतीयता विषय पर अपने विद्वतापूर्वक भाषण में आचार्य विष्णुकांत शास्त्री ने हिन्दी को भारतीयता का पर्याय बताते हुए कहा कि भाषा किसी भी संस्कृति को सही तरह से प्रस्तुत कर सकती है। पश्चिम के अंधानुकरण पर कटाक्ष करते हुए उन्होंने इस बात पर बल दिया कि हमें अपनी भाषा और संस्कृति को बचाए रखने के लिए सदैव सचेष्ट रहना पड़ेगा। इस दिशा में उन्होंने अकादमी के कार्यो की सराहना की। इस समारोह के अध्यक्ष, तमिलनाडु सरकार के भूमि-सुधार निदेशक **श्री मोहन प्यारे** थे। इस अवसर पर समकालीन साहित्य सम्मेलन के महासचिव, **डॉ० महेन्द्र कार्तिकेय** उपस्थित थे। अकादमी की ओर से **कुशल प्रशासक एवं सारस्वत व्यक्तित्व पुरस्कार** आचार्य विष्णुकांत शास्त्री को, **भाषा प्रेमी दक्ष प्रशासक पुरस्कार** मोहन प्यारे, आई० ए० एस० को तथा दक्षिण भारत में समग्र लेखन के लिए अकादमी का पुरस्कार डॉ० सुब्रहमण्यम **विष्णुप्रिया** मधु धवन(उपन्यास), डॉ० के० रामानायडु(समीक्षा), डॉ० पी०के० बालसुब्रमण्यन(अनुवाद)तथा रमेश नीरद(काव्य) को दिया गया।

तमिलनाडु से प्रकाशित सर्वश्रेष्ठ **राजभाषा पत्रिका पुरस्कार** दक्षिण रेलवे की राजभाषा पत्रिका **दक्षिण ध्वनि** को दिया गया। राजभाषा कार्यान्वयन के लिए **सेंट्रल बैंक,** अंचल कार्यालय को एवं **एस० बी० आइ० ओ० ए०** को दिया गया। हिन्दी पत्रकारिता के लिए चेन्नै से प्रकाशित **चिंतामणि** (संपादक श्री नरपतमल मेहता) को दिया गया। भाषा प्रेमी समाजसेवा सम्मान **ललित गोयल** एवं **महेश खंडेलवाल** को दिया गया। इस अवसर पर अखिल भारतीय कवि सम्मेलन का आयोजन भी किया गया, जिसका संचालन **ईश्वर करुण** ने किया। कवि सम्मेलन में डॉ० भीखी प्रसाद वीरेंद्र (सिलिगुरि), डॉ० हरिमोहन (श्रीनगर), डॉ० महेन्द्र कार्तिकेय(मुंबई), ईश्वर करुण, डॉ० मधुधवन, रमेश नीरद, डॉ० विष्णुप्रिया (चेन्नै) आदि ने काव्यपाठ किया। वार्षिकोत्सव में **ईश्वर करुण** की पुस्तक **एक और दृष्टि** का विमोचन आचार्य विष्णुकांत शास्त्री, राज्यपाल, उत्तरप्रदेश द्वारा किया गया, जिसकी प्रथम प्रति सुप्रसिद्ध समाजसेवी **शोभाकांत दास** ने प्राप्त की।

प्रस्तुति: आर० एस० रमेश, **ए-7/343, सिडको नगर, चेन्नै-49**

डॉ० रामदरश मिश्र की रचनावाली का लोकार्पण

जो लेखक जीवन को नजदीक से देखता है वही उसका सही विश्लेषण कर सकता है। यह बात प्रख्यात लेखक **विष्णु प्रभाकर** ने **डॉ० रामदरश मिश्र** की रचनावाली के लोकापर्ण समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में कही। 76 वर्षीय डॉ० मिश्र की 14 खंडों में प्रकाशित रचनावाली नमन प्रकाशन ने छापी है। श्री प्रभाकर ने कहा कि **इनके लेखन में एक बात जो मुझे अन्य साहित्यकारों से भिन्न लगी वह है इनका प्रतिवादों में नहीं पड़ना।** उन्होंने कहा कि इनकी कविता में तीखापन भी है, लेकिन आराम से।

अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कथाकार **कमलेश्वर** ने कहा कि रामदरश मिश्र लोक संस्कृति के पैरोकार हैं। उन्होंने कहा कि बहुत सूरज उगते हैं और डूब जाते हैं लेकिन रामदरश मिश्र उन लेखकों में नहीं हैं। कमलेश्वर ने यह भी कहा कि रामदरश मिश्र की रचनाएं किसी प्रशस्ति से नहीं छपी हैं। यों मिश्र को कुछ लोग वामपंथी लेखक भी मानते हैं। मार्क्स का प्रभाव इनके ऊपर है। मेरा मानना है कि मिश्र जी ब्रामपंथी नहीं, बामधर्मी लेखक हैं। मार्क्स ने भी कहा था कि मैं खुशनसीब हूं कि मैं मार्क्सवादी नहीं हूं।

प्रसिद्ध लेखक महीप सिंह ने कहा कि जाति व्यवस्था और दलितों के प्रति प्रतिबद्धता ही डॉ० रामदरश मिश्र के साहित्य की विशेषता है। आलोचक **विश्वनाथ त्रिपाठी** ने कहा कि मिश्र जी अपनी रचनाओं से संतुष्ट हैं। यह संतोष बड़ा सुख देता है। अन्य वक्ताओं में **विष्णु चंद्र शर्मा** तथा **डॉ० नित्यानंद तिवारी** भी थे। रचनावली का लोकार्पण विष्णु प्रभाकर ने किया। कार्यक्रम 8 मार्च को कन्स्टीट्युशन क्लब में संपन्न हुआ।

कल जो छूट गया सपनों का गांव.......

दिल्ली वि०वि०में काव्य संध्या

प्रस्तुतिः ब्रजेश, जुबिली हॉल छात्रावास

विगत 24 मार्च, 2001 को सन्ध्या छः बजे दिल्ली विश्वाविद्यालय के जुबिली हॉल छात्रावास में आयोजित **काव्य सन्ध्या** में दिल्ली दूरदर्शन के कार्यक्रम अधिशासी तथा सुप्रसिद्ध गीतकार **अमरनाथ 'अमर'** के गांव की मिट्टी की सुगन्ध लिए गीत-**कल जो छूट गया सपनों का गांव......**ने जो काव्य सुधा-रस का पान सुधि श्रोताओं को कराया वह सचमुच न केवल उनके मन को झंकझोर गया बल्कि गीत की पक्तियों ने गांव के हरे-भरे खेतों की मेड़ पर चलने को मन मचल गया। इस गीत के सस्वर पाठ के पूर्व अमर जी की संघर्ष के दौर की कई कविताएं-**हमारा भविष्य कभी तो मुस्कराएगा इस रूदन के बाद, इस भीड़ की तन्हाई में क्या कोई अपना भी है?, मेरी फूलवारी की सुबह खामोश है** तथा **यह प्यार ही तो है।** लोगों के मन पर एक अमिट छाप छोड़ गईं।

इस अवसर पर उपस्थित **विचार दृष्टि** के सम्पादक **सिद्धेश्वर** ने कहा कि **अमर जी** की तरह वे भी अपनी पत्रिका को पठनीय बनाने हेतु नई प्रतिभाओं की खोज के क्रम में महानगर मुंबई से दिल्ली की इस काव्य संध्या में आए हैं। कविता पाठ के पूर्व जापानी **हाइकु** और **सैन्यूं** विधा पर आधारित हिन्दी में लिखी जा रहीं हाइकु और सैन्यूं कविताओं की विशेषताओं एवं नियमों पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने बताया कि 5-7-5 वर्णों के क्रम में त्रिपदी-सत्रह वर्णी **हाइकु** एवं **सैन्यूं** ऐसी विधा है जिसमें कम से कम शब्दों में पाठकों के समक्ष अपने भाव को व्यक्त कर दिया जाता है। इस काव्य सन्ध्या में विशेष रूप से उपस्थित **सिद्धेश्वर** ने पुनः कहा कि जहाँ हाइकु प्रकृति और जीवन के कार्य व्यापारों की भावात्मक अभिव्यक्ति है वहीं उसके दूसरे रूप **सैन्यूं** मनुष्य की दुर्बलताओं अथवा दुर्बल क्षणों पर व्यंग्य है, जिसमें व्यापक मानवीय सम्बन्धों की पीड़ा-आह्लाद, हास-रूदन, उतार-चढ़ाव, संगति-विसंगति, निष्ठुरता-संवेदना तथा समाज, धर्म एवं राजनीति की विद्रुपताओं-विडम्बनाओं को समाहित किया जाता है। उनकी निम्न कविताएं हंसती-बोलती-सी, बतियाती-सी मालूम पड़ती हैं और साथ ही पाठक-मन को आन्दोलित भी करती हैं, देखें आप भी- **खाता आदमी/ अपने आपको भी/ भेंड़िए-सा ही, छला गया है/ बार-बार देश में/ आम आदमी, भूल चुके हैं/ रास्ता दिखाने वाले/ स्वयं ही रास्ते, ख्वाब टूटे तो/ मायूस मत होना/ जगाएगा वो, खरीद लिया/ नेताओं का ईमान/ खरीदारों ने, कितनी नीदें/ जिन्हें पाने में खो दी/ खोटा निकला, नेता के लिए/ कुर्सी ही माई-बाप/ जनता सिक्का, डूबेगा कल/ बुद्धिजीवी वर्ग भी/ तटस्थता से।** सुप्रसिद्ध कवयित्री तथा सत्यवती कॉलेज की अंग्रेजी प्राध्यापिका **अनामिका** ने **अंग्रेजी यों भेजती बम वर्षक विमान, चुटपुटिया बटन, सार्वजनिक चौका** तथा **होम वर्ष** शीर्षक कविताओं का पाठ कर श्रोताओं का मन मोह लिया।

इस अवसर पर उपस्थित विशिष्ट अतिथि तथा **दैनिक भास्कर** के राधेश्याम तिवारी ने **इस बीच गंड़ासा उठा है गर्दन पर गिरने के लिए, बूरे समय के लिए हमने बचा रखा, बहुत कुछ खो चुकने के बाद जो बचा है वह तुम हो, बाकी सब भूल गया,** कविताओं की छाप छोड़ने के बाद अपने गीत-संग्रह **सागर प्रश्न** के गीत **टहनी-टहनी गले मिलेंगी, पत्ती-पत्ती डोलेंगी** प्रस्तुत कर काव्य सन्ध्या की उपादेयता को सिद्ध किया।

भारत के विभिन्न क्षेत्रों से आए तथा दिल्ली विश्वविद्यालय के विविध विषयों पर शोध कर रहे **एम० फिल, डी० लिट्** तथा **पीएच० डी** के शोध कर्त्ताओं में **प्रदीप, संजीव राय, ब्रजेश, सुनील तिवारी** तथा **नरेश जी** ने अपनी-अपनी स्तरीय कविताओं का पाठ कर यह साबित कर दिया कि दूरदर्शन, आकाशवाणी तथा पत्र-पत्रिकाओं की इच्छाशक्ति के अभाव में ये प्रतिभाएं मुखरित नहीं हो पाती हैं। संजीव राय की पक्तियाँ-**मुझे पूरी दुनिया बचानी है, मैं खेलना चाहता हूँ,** ब्रजेश के **उस शहर में, युगल बंदी का सौन्दर्य शास्त्र, बस में लड़की, तुम्हारा जाना** तथा **पिता** शीर्षक कविताएं, सुनील तिवारी के काव्य-संग्रह **गढ़े हुए घरौंदे खिड़की, खतरे की नहीं, सहमी आशंकाएं, खामोशी का राज, किस पर हसूँ?** आदि शीर्षक की कविताएं तथा नरेश जी की **यों बार-बार घर को सजाना फजूल है** कविताओं का मूल स्वर प्रायः एक जैसी संवेदना, कल्पना और संतुलनशीलता से सराबोर था। उनकी अनुभूतियाँ श्रोताओं के मन के आकाश में इस कदर बेहिचक तैरने लगी कि अभिव्यक्ति के लिए शब्दों की कसरत का सवाल ही नहीं उठता। काल के निरन्तर प्रवाह में से वर्तमान क्षण की सम्पूर्ण अनुभूति, उसकी समस्त जीवन्त संभावनाओं को इन नयी पीढ़ी के कवियों ने शब्दबद्ध करने का सफल प्रयास किया। आखिर तभी तो इनके भावों-अभिव्यक्तियों से आकृष्ट होकर दूरदर्शन नई दिल्ली के **अमरनाथ 'अमर'** ने एक माह के भीतर ही इन प्रतिभावान कवियों को दूरदर्शन के लिए न्योता देने का आश्वासन दे डाला। दिल्ली वि० वि० के श्याम लाल कॉलेज, शहादरा के हिन्दी प्राध्यापक प्रो० **अंगद तिवारी** ने अपने सफल संचालन से इस काव्य सन्ध्या को जीवन्त बनाया। आयोजन के सक्रिय कार्यकर्त्ता ब्रजेश द्वारा, अतिथि कवियों एवं सुधि श्रोताओं के प्रति आभार व्यक्त करने के पश्चात् इस काव्य संध्या का समापन हुआ।

सुरसाम्राज्ञी लता को 'भारत रत्न'

सुर साम्राज्ञी **सुश्री लता मंगेशकर** को देश का सर्वोच्य असैनिक सम्मान **'भारत रत्न'** से सम्मानित किया गया। भारत के राष्ट्रपति के के० आर० नारायणन ने एक समारोह में इस वर्ष के पद्म सम्मानों से सम्मानित किया। सुप्रसिद्ध सरोद वादक **अमजद अली** को **पद्म विभूषण** तथा लोक संगीत के चितेरे **भूपेन हजारिका** को **'पद्म भूषण'** से

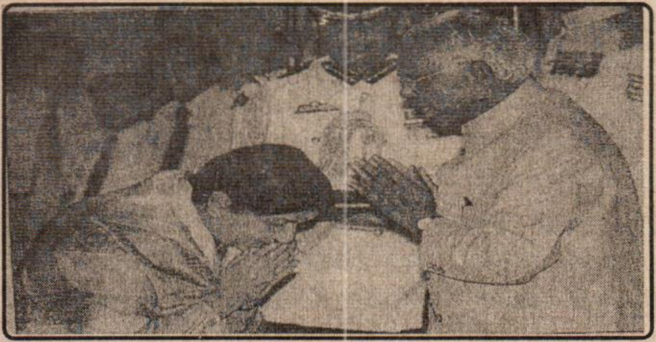

सम्मानित किया गया। अन्य सम्मान पाने वालों में उद्योगपति **राहुल बजाज** फिल्म अभिनेता **प्राण, तथा अमिताभ बच्चन** स्वतंत्रता सेनानी **मोहन राणा** के, पत्रकार **अरुण पुरी** जाने माने हृदयरोग विशेषज्ञ **नरेश त्रेहन** तथा **विश्वनाथन आनन्द** का नाम उल्लेखनीय है। इस वर्ष कुल 110 विशिष्ट व्यक्तियों को दूसरे पुरस्कारों से सम्मानित किए जाने की घोषणा की गई है। देश के सर्वोच्च नागरिक सम्मान **'भारत रत्न'** से स्वर साम्राज्ञी **लता मंगेशकर** को, सम्मानित करके सरकार ने उन लाखों करोड़ों श्रोताओं की भावनाओं को सम्मान किया है जो लता के मुँह से निकले एक-एक शब्द, एक-एक पंक्ति को सुनने के लिए व्याकुल रहते हैं। गीत-संगीत की समृद्धि के लिए सम्पन्न इस देश में अच्छा गानेवालों की कमी कभी नहीं रही लेकिन लता से तुलना करने लायक कोई दूसरा नाम ढूढ़ना मुश्किल हो जाता है। बेमिशाल हैं लता जी।

हिन्दी अकादमी का शलाका सम्मान कृष्णा सोबती को

वर्ष 2000-2001 का हिन्दी आकादमी साहित्कार एवं कृति सम्मान 31 मार्च को वरिष्ठ रंगकर्मी जोहरा सहगल द्वारा लेखकों, साहित्कारों एवं पत्रकारों को प्रदान किया गया। इस वर्ष का **शलाका सम्मान** वरिष्ठ कथाकार **कृष्णा सोबती** को दिया गया। साहित्कार सम्मान पाने वालों में प्रो० निर्मला जैन, सत्येन्द्र शांत, डॉ० मैनेजर पांडेय, डॉ० धर्मेन्द्र गुप्त, प्रेम कपूर, महेन्द्र भल्ला तथा डॉ० सोहन पाल सुमनाक्षर थे। साहित्य सेवा के लिए डॉ० कमल कुमार हिन्दी सेवा के लिए डॉ० रमेश दत्त शर्मा और वीरेन्द्र सोंधी तथा रवीन्द्र त्रिपाठी को पत्रकारिता क्षेत्र में सेवा के लिए सम्मानित किया गया। हास्य-व्यंग्य कविता के लिए डॉ० सरोजनी प्रीतम को काकाहाथरसी सम्मान प्रदान किया गया। वर्ष 1999-2000 का विशिष्ट कृति सम्मान स्व० महावीर त्यागी (मरणोपरान्त) को उनकी कृति **''आजादी का आन्दोलन हँसते हुए आँसू''** के लिए प्रदान किया गया। इसके अलावा साहित्यिक कृति सम्मान पाने वालों में प्रो० रामशरण जोशी, चित्रा मृदगल, डॉ० मभवन लाल शर्मा, भगवान सिंह, भगवान दास मोरवाल, प्रताप सहगल, रुप सिंह चंदेल, डॉ० रमेश चन्द्र मिश्र, देवेन्द्र राज अंकुर, डॉ० राज बुद्धिराजा तथा गौहर रजा शामिल हैं।

डॉ० शम्भुनाथ को देवीशंकर अवस्थी पुरस्कार

हिन्दी आलोचना के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रतिवर्ष दिया जाने वाला वर्ष 2000 का **देवीशंकर अवस्थी पुरस्कार** सुप्रसिद्ध आलोचक **डॉ० शम्भुनाथ** को उनकी कृति संस्कृति की **उत्तरकथा** के लिए सम्मानित करने का निर्णय लिया गया है। विखंडन प्रणाली तथा उत्तर आधुनिकवाद के विचार विन्दुओं का भाष्य उनके विवेचन को प्रमाणित करता है।

सांस्कृतिक समन्वय हिन्दी के माध्यम से करें।

- प्रो० विष्णु नारायण नंपुतिरि

वर्तमान भारतीय समाज में बढ़ती अलगाव की प्रवृतियों को रोकने तथा देश के सांस्कृतिक समन्वय के क्षेत्र में तीव्रता लाने के लिए हिन्दी ही माध्यम बन सकती है। ये उद्गार हैं मलयालम के प्रमुख कवि एवं पर्यावरण कार्यकर्त्ता **प्रो० विष्णुनारायण नंपुतिरि** के जिसे उन्होंने हिन्दी युवजनोत्सव के प्रति भागियों के चयनार्थ 24 मार्च, 2001 को केरल के विविध केन्द्रों में चलायी गयी प्रारम्भिक प्रतियोगिताओं का उद्घाटन करते हुए व्यक्त किए। उल्लेखनीय है कि यह प्रतियोगिता भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के सहयोग से केरल हिन्दी प्रचार सभा के तत्वावधान में आयोजित हिन्दी युवजनोत्सव के लिए की गयी थी। उन्होंने पुन: कहा कि हिन्दी के फिल्मी अभिनेताओं का अनुकरण छन्द, लय, ताल में ही नहीं बल्कि भाव में भी हिन्दी के इतर भाषाओं के फिल्मी अभिनेताओं ने काफी मात्रा में किया। यहाँ की वेशभूषा और केश -सज्जा में भी अनुकरण हुआ। प्रो० नंपूतिरि ने पुनः कहा कि हिन्दी का दायित्व भारत की सामाजिक संस्कृति का समन्वयन कर उसे प्रतिबिम्बित करना है, इसलिए उसे चाहिए कि इन सारी विशेषताओं को भी आत्मसात करते हुए वह अपने को विकसित करे। उन्होंने इस बात पर चिन्ता जाहिर की कि केरल के विभिन्न विश्व विद्यालयों में आयोजित युवजनोत्सव में राष्ट्रभाषा हिन्दी को उचित स्थान नहीं दिया जाता। इस कार्यक्रम में मलयालम साहित्यकार डा० एषुभट्ट्रूर राजराज वर्मा, केरल हिन्दी प्रचार सभा के मंत्री एम० के० वेलायुधन नायर, अध्यक्ष प्रो० के० केशवन नायर और उपाध्यक्ष के०जी० बालकृष्ण पिल्लै ने भी भाग लेकर इसे गौरवान्वित किया।

विचार प्रतिनिधि, तिरुवनन्तपुरम से

शैलेन्द्र सागर को कथा सम्मान

विचार संवाददाता, मुंबई

वर्ष 2000 के **विजय वर्मा कथा** सम्मान के लिए चयनित मुंबई के चर्चित युवा कथाकार एवं कथाक्रम के सम्पादक **शैलेन्द्र सागर** को उनकी पुस्तक **माटी** के लिए मुंबई में **विजय वर्मा मेमोरियल ट्रस्ट** द्वारा आयोजित समारोह में मुख्यअतिथि **गिरिराज किशोर** के हाथों सम्मानित किया गया।

श्री किशोर ने अपने उद्गार में साहित्य की सर्जनात्मकता पर जहाँ बल दिया वहीं समारोह के अध्यक्ष वरिष्ठ साहित्यकार **काशीनाथ सिंह** ने कहा कि बड़े-बड़े पुरस्कार उपलब्धियों को दिए जाते हैं लेकिन इस तरह के पुरस्कार संभावनाओं के होते हैं, जो लेखक को आगे बढ़ाने की प्रेरणा देते हैं। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि एवं निर्णायक **विभूति नारायण राय** ने कहा कि **माटी** कहानी संग्रह की कहानियों में छोटे-छोटे अनुभवों को विस्तार मिला है। इस अवसर पर **डॉ० रोहिताश्व** ने पुस्तक की दस कहानियों की समीक्षा प्रस्तुत करते हुए कहा कि **माटी** के पात्रों की तुलना प्रेमचन्द के **होरी** और **धनिया** से की जा सकती है। निर्णायक मंडल के सदस्य **भारत भारद्वाज** ने पुरस्कार की पारदर्शी विधा की प्रस्तुत की।

-मुकेश गौतम, मुंबई से

युवा रचनाकार अरुण कुमार भगत को जुनियर फेलोशिप अवार्ड

महाकवि आरसी साहित्य परिषद् के संस्थापक महासचिव **अरुण कुमार भगत** को भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय द्वारा **आपातकाल और हिन्दी कविता** पर शोध कार्य करने के लिए **जुनियर फेलोशिप अवार्ड** प्रदान किया गया है। युवा रचनाकार-पत्रकार श्री भगत ने बताया कि आपातकाल की कविताओं पर अभी तक शोध नहीं हुआ था। 1975 में आपातकाल लागू होते ही अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता खंडित हो गयी थी। लाठी-गोली के बल पर रचनाकारों की बोलती बंद कर दी गयी थी। उन रचनाकारों में से विवर गोपी, वल्लभ सहाय, सत्यनारायण बाबूलाल मधुर सरीखे अनेक महत्वपूर्ण हस्ताक्षर आज भी उसके प्रत्यक्ष गवाह हैं जिनकी उनदिनों की कविताएं केवल कालिक नहीं बल्कि प्रत्यक काल की मानवीय संवेदना पर निरंकुश प्रहार का दंश भी थी।

विश्वास है युवा पत्रकार श्री भगत इस चुनौती भरे शोध कार्य को सम्पन्न कर न केवल हिन्दी में इस निर्धारित विषय पर अनुसंधान के अभाव की पूर्ति करेंगे बल्कि अपनी क्षमता की सार्थकता सिद्ध करेंगे।

विचार संवाददाता, नई दिल्ली से

ब्यूरो प्रमुख चन्द्रशेखर को गणेश शंकर विद्यार्थी पुरस्कार

कर्नाटक के वरिष्ठ हिन्दी/कन्नड़ पत्रकार श्री चन्द्रशेखर को पत्रकारिता में उल्लेखनीय सेवाओं के लिए **गणेश शंकर विद्यार्थी** पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा। केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा द्वारा जारी एक पत्र में भी चन्द्रशेखर को वर्ष 2000 के लिए **'हिन्दी सेवी सम्मान योजना'** के अन्तर्गत यह पुरस्कार प्रदान किया जाएगा। उल्लेखनीय है कि कर्नाटक में पहली बार गणेश शंकर विद्यार्थी पुरस्कार दिया जा रहा है।

पी०एस०चन्द्रशेखर विगत 50 वर्षों से हिन्दी एवं कन्नड़ पत्रकारिता से सम्बद्ध हैं। उनकी मातृभाषा कन्नड़ होने के साथ ही राष्ट्रभाषा हिन्दी में सर्वप्रथम देवनागरी लिपि में तार द्वारा संवाद प्रेषित करने का श्रेय इनको ही जाता है। हिन्दी तथा कन्नड़ के अनेक पत्र-पत्रिकाओं में आपके लेख बराबर छपते रहे हैं। आप अनेक हिन्दी संस्थानों से सम्बद्ध हैं जिनमें कन्नड़ साहित्य परिषद्, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, पत्रकार संघ, रिपोर्टस गिल्ड प्रमुख हैं। सम्प्रति स्वतंत्र पत्रकार के रूप में सक्रिय हैं। श्री चन्द्रशेखर को महामहिम राष्ट्रपति के हाथों सम्मान स्वरूप निर्धारित राशि, शाल एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किया जाएगा।

प्रस्तुतिः संजय प्रकाश, शेषाद्री प्लाजा अक्किपेट मेन रोड, बैंगलूर

पुस्तकालय-विज्ञानी का अभिनन्दन

प्रस्तुतिः आरती सिंह

'जिस समाज के बुद्धिजीवियों पर से लोगों का विश्वास खत्म हो जाय,उस समय को क्षत-विक्षत होने से कोई नहीं बचा सकता; इसलिए समय रहते रामशोभित बाबू की तरह बुद्धिजीवियों को अपनी सार्थक भूमिका के लिए तैयार रहना चाहिए।' ये विचार हैं मद्रास उच्च न्यायालय के पूर्व मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति **प्रभाशंकर मिश्र** ने विगत 15 मार्च, 2001 को पाटलिपुत्र की एक विद्वत् सभा द्वारा सिन्हा लाइब्रेरी के सभागार में आयोजित पुस्तकालय विज्ञानवेत्ता, एवं साहित्य-साधक **डॉ०रामशोभित प्रसाद सिंह** के नागरिक अभिनंदन समारोह में कही।

इस अवसर पर न्यायमूर्ति श्री मिश्र ने समीक्षक **डॉ० शिवनारायण** द्वारा संपादित एक **अभिनंदन ग्रंथ** का लोकार्पण भी किया। यह ग्रंथ डॉ० रामशोभित प्रसाद सिंह के समग्र व्यक्तित्व एवं रचनाकर्म पर केन्द्रित है। इसके बाद पाटलिपुत्र की पच्चीस से भी अधिक प्रतिष्ठित संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने माल्यार्पण कर डॉ० सिंह का अभिनंदन किया।

अभिनंदन समारोह की अध्यक्षता कर रहे पटना उच्च न्यायालय के पूर्व मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति **एस० सरवर अली** ने कहा कि डॉ० सिंह इस सम्मान के उचित हकदार हैं। विशिष्ट अतिथि के पद से अन्तर्विश्वविद्यालय बोर्ड के अध्यक्ष डॉ० **शैलेन्द्रनाथ श्रीवास्तव** ने कहा कि रामशोभित बाबू का सम्मान कोई व्यक्ति-पूजा नहीं है, बल्कि यह अक्षर की साधना का सम्मान है। ग्रंथ संपादक डॉ० शिवनारायण ने कहा कि मूल्यों एवं संवेदना के क्षरण के इस युग में रामशोभित बाबू जैसे एकांत साधक का भाव-सम्मान बताता है कि समाज में अक्षर एवं विचार को बचाए रखने की चिंता शेष है।

पटना उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश जस्टिस **आर० एन० लाल** ने इस अवसर पर बोलते हुए जहाँ डॉ० सिंह को पुस्तकालय विज्ञान के संदर्भ कोश के रूप में प्रतिष्ठित किया, वहीं इतिहासविद् प्रो० बी० पी० सिन्हा ने कहा कि सिन्हा लाइब्रेरी एवं डॉ० सिंह एक-दूसरे के पर्याय हो गए हैं। आरम्भ में स्वागत गान **डॉ० शांति जैन** ने किया तथा स्वागत भाषण करते हुए **डॉ० रंगी प्रसाद सिंह 'रंगम'** ने कहा कि साहित्य का लेखन केवल कविता, कहानी, नाटक आदि में सीमित न कर कृषि, चिकित्सा विधि, इंजिनियरिंग जैसे चिंतन एवं ज्ञान की अन्य शाखाओं में भी विस्तृत करना चाहिए, तभी रामशोभित बाबू का सम्मान पूर्ण माना जाएगा। इस सारस्वत अभिन्दन समारोह का संचालन **विजय अमरेश** ने किया, जबकि **'विचार दृष्टि'** के संपादक **सिद्धेश्वर** द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ ही इस यादगार समारोह का समापन हुआ।

सम्पर्कः द्वारा-श्री उमा प्रसाद, 1/सी, अशोक नगर, पटना-20

भूमंडलीकरण और स्त्री-विमर्श

❑ सुशीला झा

भारत भूमंडलीकरण के पाश में बंध चुका है। भारत का कृषि प्रधान अर्थ तंत्र अब उद्योग प्रधान अर्थ तंत्र की प्रक्रिया में प्रवेश कर गया है। अब हम भूमंडलीकरण और नारी के विषय में कुछ जानने समझने के लिए सबसे पहले नारी की स्थिति और भूमंडलीकरण के बीच के अन्तर संबंधों को जानना समझना होगा।

हमारी सरकार महिलाओं पर भूमंडलीकरण के नकारात्मक प्रभाव को स्वीकार नहीं रही है। 5 से 9 जून तक न्यूयार्क में हुए लैंगिक समानता विकास और शान्ति महासभा के अधिवेशन में भारत सरकार के रिर्पोट के अनुसार भारत में भूमंडलीकरण से वैसे दुष्प्रभाव नहीं दिखते जैसे कि लातिनी, अमेरिकी या अन्य देशों में देखे गये।

हमें जानना होगा 'विश्व सुन्दरी' का ताज पहनाने का राज। महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए उन्हें सम्पूर्णता में देखना होगा और उनकी शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, शासन-प्रशासन में भागीदारी सक्रिय रूप से सुनिश्चित करनी होगी।

यह सही है कि भूमंडलीकरण के दौर में भारत की अर्थव्यवस्था सुधरी है। भारत के सकल घरेलू उत्पाद की दर 3 प्रतिशत से बढ़कर 6.5 प्रतिशत हो गयी। प्रति व्यक्ति आय भी बढ़ी। लेकिन इस वृद्धि से महिलाओं पर कोई अनुकूल असर पड़ा हो ऐसा नहीं दिखता। आर्थिक, राजनैतिक और सामाजिक हर क्षेत्र में भूमंडलीकरण का महिलाओं पर प्रतिकूल असर ही पड़ा है। वे पुरुषों पर और ज्यादा निर्भर हो गयी हैं। सच तो यह है कि भूमंडलीकरण के कारण गरीबी का महिलाकरण हो गया है।

शिक्षा के क्षेत्र में प्रतिशत बढ़ा है लेकिन अभी भी महिलाओं की जनसंख्या का आधा हिस्सा साक्षर नहीं हो पाया है। महिलाओं के हाथ में मात्र 19.6 प्रतिशत रोजगार है। जिस अनुपात में शिक्षा में बढ़ोतरी हुई है उस अनुपात में उन्हें जो स्थान मिलना चाहिए था वह नहीं मिला। भूमंडलीकरण की सबसे अधिक दंश भारतीय महिला ही भोग रही है। आज देश में बेरोजगार युवकों की संख्या इक्कीस करोड़ के आस-पास है तो फिर महिलाओं के लिए रोजगार कहाँ? वास्तविक स्थिति तो यह है कि उच्चशिक्षा प्राप्त लड़कियों को पार्ट टाइम जॉब था प्राइवेट स्कूल शिक्षिका जैसी नौकरियों में, पर उनकी मेहनत मुनाफाखोरों द्वारा कौड़ियों के मोल खरीदी जा रही है। इतना ही नहीं, भूमंडलीकरण के कारण भारतीय स्वसंस्कृति से प्रेम, सद्भाव सहिष्णुता, दया, ममता मानव हृदय से लुप्त होता जा रहा है। क्योंकि इसका कोई बाजार भाव नहीं है। और इन मानवीय गुणों के अभाव में परिवार में टूटन और एकांकीकरण महिलाओं के लिए नयी अनिश्चिन्तताएं और मुसीबतें पैदा कर रहा है। भारत सरकार महिला विकास के नाम पर, महिला विभाग, राष्ट्रीय महिला आयोग का गठन किया। विकास के लिए कई कार्यक्रम शुरू किये गये। लेकिन इन विकास योजनाओं में सरकार का जोर नीतिगत उपायों, संसाधनों का आवंटन या विकास की अवधारणाओं को फिर से परिभाषित करने पर नहीं बल्कि वर्ग-विभेद पर ज्यादा जोर दिया। वर्गीय मसले लिंग आधारित मसलों के आगे तुच्छ हो गये। तथाकथित महिला विकास कार्यक्रमों में ठोस कार्य योजना व वित्तीय संसाधनों का अभाव रहा। महिला नीति की भी यही हालत रही है। समस्त योजनाएं सदिच्छाओं की घोषणा मात्र साबित हो रही हैं। सरकार महिला और पुरुष समानता की बात करती है। लेकिन जब तक दोनों के साथ एक जैसा व्यवहार नहीं किया जाता है तबतक यह बराबरी की बात थोथी ही है।

आज भूमंडलीकरण के दौर में महिला मात्र उपभोग की वस्तु बना दी गयी है। ब्रह्माण्ड सुन्दरी, विश्व सुन्दरी, वर्ष का सौन्दर्य जैसी प्रतियोगिताओं ने उपभोक्तावाद को बढ़ावा ही दिया है। मिस फेमिना प्रतियोगियों ने तो हद कर दी। औरत के खंडित शरीर के तहत सुन्दर बाल, सुन्दर त्वचा, सुन्दर मुस्कान सुन्दर आँखें, पतले टखने चुसने की पहल हुई। लगता है इस भूमंडलीकरण के तहत हमारे देश की सरकार अब थाईलैंड और मैक्सिको की तरह नारी देह की लालच देकर विदेशी पूँजी को आमंत्रित कर रही है पर्यटन उद्योग में बढ़ावा के लिए। जिस तेजी से नाटकीय परिवर्तन हो रहे हैं उससे भारतीय संस्कृति को अक्षुण्ण रखना, महिलाओं के अस्तित्व की रक्षा करना बहुत मुश्किल लगता है। पूँजीवाद की प्रवृत्ति के कारण देश की व्यापारिक और औद्योगिक प्रतिष्ठान बंद हो रहे हैं। पैसे की संस्कृति के चलते दहेज हत्याएँ और मादाभ्रूण नष्ट करने की घटनाएँ लगातार बढ़ रही हैं। बलात्कार, छेड़छाड़, अपहरण, अश्लील प्रदर्शन आदि तेजी से बढ़ रहे हैं। बाजारवाद के आतंक और उपभोक्तावाद के प्रलोभनों से महिलाओं को मुक्त करना होगा। विकसित पश्चिमी देशों के अंधाधुंध प्रचार प्रसार के खतरों से हमें सावधान होना होगा। हमें जानना होगा **'विश्व सुन्दरी'** का ताज पहनाने का राज। महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए उन्हें सम्पूर्णता में देखना होगा और उनकी शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, शासन-प्रशासन में भागीदारी सक्रिय रूप से सुनिश्चित करनी होगी। कोई भी मानवीय एवं सामाजिक विकास तब तक अपूर्ण एवं अन्यायपूर्ण रहेगा, जब तक कि महिलाओं के सर्वांगीण विकास को उसमें शामिल न किया जायेगा क्योंकि महिलाओं का अधिकार अन्ततः मानवाधिकार है।भारत जैसे विकासशील देशों में आर्थिक विकास की ऐसी रणनीति बननी चाहिए जो उच्च आर्थिक संवृद्धि दर के साथ रोजगार के समुचित अवसर सृजित करे । खासकर रोजगार प्रदान करके ही महिलाओं को निर्धनता, परनिर्भरता, अशिक्षा, कुपोषण, कुरीति-नीति,आदि के मकड़जाल से बाहर निकाला जा सकता है।

सम्पर्क: -संजय गांधी नगर, रोड न०१,
पत्रालय-हनुमान नगर, पटना-20

कैक्टसों के बीच खिला गुलाब

❑ डॉ० विद्या शर्मा

चैन्नई महानगरी की भीड़ भरी सड़के उमस भरे दिन रोजी-रोटी की तलाश में भटकते मानव. ....उन सभी की ओर टकटकी लगाए अपनेपन की तलाश.. अजनबी चेहरों में अनजानी और कभी जानी पहचानी मुस्कान... और कभी समस्याओं के जाल में उलझती व्यथाएँ... और अचानक उन उलझनों को काटने के लिए बढ़ा हुआ स्नेहमय व्यक्तित्व.... अपरिचितों में अतिपरिचित चेहरा.... घोर अंधकार में शीतल चाँद का आभास दिलाता, जी हाँ **"डॉ० मधु धवन** जी.. .. 1991 में युनीवर्सिटी पेपर-वेल्यूवेशन के समय उनसे मुलाकात हुई थी, और अचानक ही मैं वाल्लियॉम्माल कॉलेज से निकल कर अन्नानगर के पास अपनी सहकर्मियों के बीच बातें करते हुए सड़क पार कर रही थी कि एक लम्बा-सा हार्न सुनाई दिया। प्राण बचाने की गरज से फुटपाथ पर जा चढ़ी। तब मेरी सहयोगी **हेमा जी** ने कहा-कहाँ भाग रही हो? कोई कारवाली मैडम तुम्हें पुकार रही हैं। पलटकर देखा चिरपरिचित त्रिभुवन मोहिनी मुस्कान के साथ **डॉ० मधु धवन** मुझे पुकार रहीं थी। कुछ दूर ही उनका आवास स्थान था (के-3) जहाँ आने की दावत दे रही थीं। सौभाग्यवश मेरा घर था उनके सामने वाली सडक पर (ई-42)। जब तक हामी नहीं भरा ली छोड़ा नहीं, कहा-**मैं कब से हार्न दे रही थी और आप हैं कि भागी चली जा रहीं हैं।** मैंने कहा-**प्राणों का मोह किसे नहीं होता?** सोचा! कहीं भीड़ भरी सड़क पर मुझ पर कोई गाड़ी ही न चढ़ा दे। बाद में स्नेह की कड़ियां जुड़ती चली गईं। कवि सम्मेलनों से सेमिनार, और **अनुभूति** की सदस्या से लेकर ज्वाइन्ट सेकेक्ट्री और बाद में **तमिलनाडु महिला लेखिका समिति** की सहसचिव तक की यात्रा.... यहीं पड़ाव नहीं आता. ....**दर्पण, दक्षिण हिन्दी प्रचार सभा, तमिलनाडु हिन्दी साहित्य अकादमी, कादम्बनी क्लब, साहित्यअनुशीलन समिति, वर्ल्ड पोयट गार्डन** आदि साहित्यिक समितियों ने सदस्यता प्रदान कर मान बढ़ाया और मेरी अनुभूतियों को साकार करने में सहयोग प्रदान किया। मैं यहाँ के प्रत्येक स्नेही जनों की आजन्म ऋणी रहूँगी किन्तु **डॉ० मधु धवन** जी के सहयोग से ही मैंने दक्षिण की साहित्यिक-यात्रा की चैन्नई से कन्याकुमारी तक और चेन्नई से तिरुपति युनिवर्सिटी के सेमिनार तक!

राजस्थान रत्न शांतिलाल जैन एवं प्रकाशमल भंडारी, बालशौरी रेड्डी, डॉ० रविन्द्र कुमार जैन, ईश्वर करुण, डॉ० विष्णु प्रिया, डॉ० निर्मला मौर्या, रमेश गुप्त नीरद, ज्ञान जैन, गोविंद मूंदड़ा, डॉ० कोकिला कहाँ तक नाम गिनाऊँ इन सभी साहित्यिक बन्धु एवं भगिनियों से परिचित कराने का श्रेय डॉ० मधु जी को जाता है और इन सभी का प्रोत्साहन और स्नेह पाकर सचमुच मैं धन्य हो गई और हृदय का मौन मुखरित हो उठा-

"हजारों साल जब गरल के घूँट
तब कहीं जाकर "मधु" पीते हैं।

अनंत साहित्यिक यात्रा करते हुए, अथक प्रत्यनों के द्वारा-सांस्कृतिक चेतना नव-युवाओं में भरते हुए अपने प्रेम के अजस्त्र स्त्रोत से दीन दुखियों के दुःख हरते हुए आगे बढ़ रही हैं स्नेह-स्त्रोतवाहिनी!

उनके कुशल वक्ता के गुणों से मैं अविंभूत थी ही जब उनकी सुमधुर कविता सुनी तो हृदय गद्गद् हो उठा! जैसे-जैसे उनके करीब आती गई लगा महाकाव्य के पृष्ठ-पर-पृष्ठ खुलते चले गए। नेतृत्व के गुणों से भरपूर स्नेहिल ममतामयी माँ प्यारी बहू एवं कदम-कदम पर साथ देने वाली जीवन संगिनी के साथ ही सात राजकुमार जैसे भाइयों की प्यारी **'बहना'** दोस्तों का दोस्त ही नहीं दुश्मनों का भी दोस्त है। सामाजिक कार्यक्रम हो अथवा धार्मिक, सभी जगह कुशल संगठनकर्ता के रूप में विराजमान रहती हैं। घमंड तो उन्हें छू तक नहीं गया है किन्तु अपने स्वाभिमान की रक्षा करने में सदैव तत्पर रहती हैं। धर्म, भाषा, गरीबी-अमीरी के भेद-भावों से ऊपर उठकर वे सबकी अपनी हैं और सब उनके हैं। हाल ही में **डॉ० मधु धवन** जी को **विक्रमशिला विद्यापीठ** से सम्मानित किया गया है। हिन्दी की संत भाव से सेवा करने वाली **डॉ० मधु धवन** किसी पुरस्कार एवं सम्मान की मोहताज नहीं हैं किन्तु चैन्नई को गौरवान्वित करने वाला सम्मान "**विद्या सागर** की मानद उपाधि **डॉ० मधु जी** के करकमलों पाकर धन्य हो गई। आप राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त ही नहीं हैं अपितु अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त महिला हैं।

भारतीय सांस्कृतिक चेतना का सशक्त स्वर उनकी रचनाओं में उजागर हुआ है चाहे एकांकी हो या कहानी अथवा उपन्यास। प्रकृति सौन्दर्य की झलकियाँ आपके काव्य में अपनी इन्द्रधनुषी रंगों की छटा बिखेरती हैं।

आधुनिक महाकाव्य में विप्रलभ्य श्रृंगार विषय पर पीएच० डी० की उपाधि प्राप्त हुई है। आपकी कृतियों की छटा भारत की लगभग सभी पत्र-पत्रिकाओं में देखने को मिलती है-**"मैंने कब चाहा"-"भूल" हो, 'त्रास' मिले!**

"भगत सिंह" की "आहुति"
"अंधेरी पगडंडियाँ" बन जाए।
आपकी "आकांक्षा"करवट लेता वक्त थी।
"शिखरों से ऊँचा" सागर का शंख
"प्यार भरे दादा जी" के हाथ था
मैथिली शरण गुप्त का "नहुष"
नरेश मेहता की "शबरी"
"हुतात्मा" की आत्मा ने,
रचा आपका स्वाप्निल संसार था।

अनंत साहित्यिक यात्रा करते हुए, अथक प्रत्यनों के द्वारा-सांस्कृतिक चेतना नव-युवाओं में भरते हुए अपने प्रेम के अजस्त्र स्त्रोत से दीन दुखियों के दुःख हरते हुए आगे बढ़ रही हैं स्नेह-स्त्रोतवाहिनी!

दुःख-भरी कथा का,
सुख-भरा अनुवाद।
मिटता है अवसाद।
"सम्प्रेषण" के साथ
अनेक विडियों फिल्मों का निर्देशन-लेखन,
कहाँ तक बखान करूँ मैं भावहीन -अकिंचन।
फिर भी हर दुःख-सुख की अनुभूतियों
की हैं मेरी अंतरंग मीत
उनके साथ रहने से ही थिरक उठते हैं
गमगीन होठों पर मधुर गीत।
मेरी आँखों की व्यथा उनकी आँखों में झिलमिलाती है।
ढाई-अक्षर के गुल खिलाती है।

सम्पर्क: विभागाध्यक्षा, हिन्दी-विभाग
गुरू श्री शांति विजय जैन कॉलेज
तपेरी, चेन्नै-7

महाकाल बोल रहा है......

❑ अशोक जोषी

"निश्चय ही दुनिया बदलेगी,
निश्चय ही परिवर्तन होगा
नव भव्य भावना जागेगी
जन-जन में सद्वर्तन होगा.
अब खड़ा हो उठा जन-मानस
क्रान्ति की कर में ले मशाल
यह बोल रहा है महाकाल.
यह बोल रहा है महाकाल"

शंख-मृदंग ध्वनियों सहित जब गीत की ये पंक्तियाँ, उत्तरप्रदेश के हरिद्वार स्थित शांतिकुंज आश्रम के मंच से हमने सूनी थी, लिए, अस्थि-पिंजर बनी धराशायी-सी मानवता को संजीवनी देकर पुनर्जीवित करने, कोई-न-कोई मसीहा, कोई संस्कृति पुरुष समय-समय पर आता रहता है, पर हम भारतीयों की अविचल श्रद्धा-आस्था रही है। **महात्मा गांधी** व **महामना मदनमोहन मालवीय** जी जैसे महानुभावों से प्रेरणा लेती हुई एक नयी युवा प्रतिभा उन्हीं दिनों उभर कर सामने आने लगी थी, आजादी के मतवाले युवक **राम मत्त** के नाम से, जिसने न केवल स्वातंत्र्य संग्राम में भाग लिया, न बैठ कर किये। बाद में हिमालय की दुर्गम पहाड़ियों-झाड़ियों के पार किसी अगोचर स्थान में उसी दिव्य गुरू के प्रत्यक्ष मार्गदर्शन में उग्र तपश्चर्या भी की। गायत्री मंत्रजाप के पुरश्रवण भी किये। वेदों- वेदान्तों-उपनिषदों-पुराणों-दर्शनों आदि हमारे वाङमय का न केवल गहन अध्ययन-अध्यापन किया, उन सभी दुर्लभ ग्रंथों के युगानुरूप रहस्य-बोध को परख कर भाष्य-भाषान्तरों के रूप में सुलभ कराने का अविरत ज्ञानयज्ञ भी चलाया। अश्वमेधादिक यज्ञों के माध्यम

आज जब गुजरात के भीषण भूकम्प के बाद बड़ी-बड़ी हवेलियों के मालिकों को हमने बे-घर-बेचारा की हालात में खुले आसमान तले भूतल पर सोते हुए देख लिया, दो रोटियों के लिए लम्बी-लम्बी कतारों में खड़े पसीनों से तरबतर प्रतीक्षा करते हुए देख लिया, अरे एक करोड़पति को देर रात किसी दीनजन के साथ ठंड से बचने के लिए जलाए गए कचरे के ढेर के समीप आग सेंकते हुए देख लिया, तब मित्रों, हमें मानव मात्र एक समान, जाति वंश सब एक समान वाला उस महात्मा का नारा शत-प्रतिशत सत्य-प्रत्यक्ष दर्शन दे गया।

तो खून हमारा खौल उठा था। 'देवत्त्व का धरती पर अवतरण, मानव में देवत्त्व का जागरण, जन-मानस का परिवर्तन, समूचे विश्व व युग के परिवर्तन का एक व्यापक आन्दोलन.....' ये बातें तब कुछ नयी-सी लग रही थीं, पर वर्षों बाद, आज जब उस अभियान के व्यापक विस्तार व प्रभाव को सर्वत्र देखते हैं, तो देखते ही रह जाते हैं। सचमुच, उस दिन देखे-सूने उस आश्रम के नेतृत्व ने, आज विश्व-चेतना को हिला कर रख दिया है, यह बात मानने में आज हमारे मन में कोई शक या संकोच नहीं रह गया है!

विश्व-वसुधा पर बार-बार फैलती रहने वाली अव्यवस्था-अंधतमिश्रा को मिटाने, संस्कृति माता को व्यापक विकृतियों से उबारने, दलित-पठित अवस्था-दुर्दशा को प्राप्त होकर कुचली जानेवाली सद्भावनाओं को मर मिटने से-ध्वस्त होने से बचाने के केवल स्वाधीनता की कविताएं लिखीं, न केवल क्रान्ति की मशाल थामे दलितों-किसानों की तरफदारी करते हुए गाँव-गाँव, गली-गली घूम कर उनके अधिकारों के लिए धूम

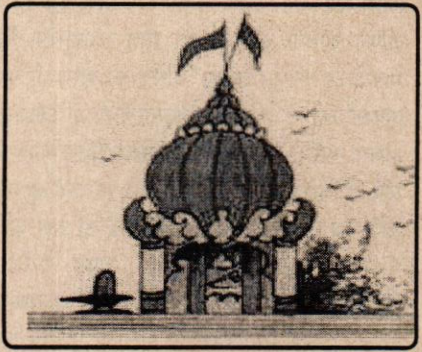

मचाई, वरन् छोटी-सी उस आयु में **अखण्ड ज्योति** मासिक पत्रिका चलाने के स्वप्न को भी साकार कर दिखाया था।

दीप की अखण्ड ज्योति के माध्यम से युवक राम ने हिमालय स्थित अपने दिव्य गुरू के दर्शन, अपने पूजा-पाठ के कमरे में से, सड़ी-गली-प्रदुषित प्रथा-परंपराओं को बदल कर रख देने वाली दिव्य शक्ति-उर्जा का प्राकण्य भी एक **युग शक्ति** रूप में आपने करवाया। विश्वभर में शक्तिपीठों का निर्माण भी करवाया।

इस महान विभूति द्वारा कई वर्ष पूर्व लगवाया गया, **मानव मात्र एक समान, जाति वंश सब एक समान** का नारा सुनने वालों को कुछ-कुछ अजीब-सा लगा होगा, किन्तु आज जब गुजरात के भीषण भूकम्प के बाद बड़ी-बड़ी हवेलियों के मालिकों को हमने **बे-घर-बेचारा** की हालात में खुले आसमान तले भूतल पर सोते हुए देख लिया, दो रोटियों के लिए लम्बी-लम्बी कतारों में खड़े पसीनों से तरबतर प्रतीक्षा करते हुए देख लिया, अरे एक करोड़पति को देर रात किसी दीनजन के साथ ठंड से बचने के लिए जलाए गए कचरे के ढेर के समीप आग सेंकते हुए

शेष पृष्ठ-33 पर.........

रेकी : चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में एक अभिनव प्रयोग

❑ **शशि भूषण**

जीवन से निराश, थके हारे, रोग ग्रस्त लोगों के लिए उम्मीदों का चिराग है **रेकी।** अगर इसे २१ वीं सदी का जादुई चमत्कार कहा जाये तो शायद गलत नहीं होगा। जहां औषधियां भी व्यक्ति को पूर्णरूपेण रोग मुक्त करने में विफल साबित हो रही हैं, वहीं **रेकी** स्पर्श की ताकत से रोग ग्रस्त लोगों का इलाज करने का एक प्रभावी और सशक्त माधयम बनकर उभरी है।

स्पर्श से लोगों का इलाज विस्मयकारी तो है ही, लेकिन इससे इन्कार भी नहीं किया जा सकता कि बहुत सारे रोगियों को अनुसंधान स्तर पर इस चिकित्सा पद्धति के जरिये रोग मुक्त किया जा चुका है। इस स्पर्श चिकित्सा विज्ञान ने जहां उनके जीवन में आशा का संचार एवं नव स्फूर्ति का सृजन किया है, वहीं चिकित्सा विज्ञानियों को भी प्राकृतिक चिकित्सा विज्ञान की एक विधि **स्पर्श चिकित्सा** की ओर सोचने को बाधय किया है। **खुर्रम नगर** स्थित **बोधित्व रेकी क्लीनिक** एक ऐसा स्वास्थ्य केन्द्र है जो रोगियों को शारीरिक एवं मानसिक सहयोग प्रदान कर उन्हें पूर्णरूपेण रोग मुक्त होने की ऊर्जा प्रदान करता है। इस स्वास्थ्य केन्द्र की स्थापना वर्ष १९९५ में **डा. अंजलि पाठक** द्वारा की गयी थी।

इस केन्द्र ने यहां आने वाले रोगियों को मानसिक एवं आधयात्मिक शान्ति तो प्रदान की ही है साथ ही विश्व मानवता की सेवा में खुद का उत्सर्ग भी किया है। **रेकी स्नेहसिक्त स्पर्श के माधयम से उपचार की एक नयी प्रक्रिया है जो भारत और तिब्बत के प्राचीन एवं प्राकृतिक उपचार का नव विकसित संस्करण है।** डा. मिकाओ उसुई के स्तर पर इसे वर्ष १८०० में विकसित किया गया था। **रेकी अपने आप में एक जापानी शब्द है। जिसका अर्थ है युनिवर्सल लाइफ इनर्जी।** संस्कृत में प्राण शक्ति भी कहते हैं। वर्ष १९८९ में रेकी का आरम्भ किया गया था। अंजलि पाठक ने लखनऊ में इस कार्य को आगे बढ़ाया। अगर यह कहा जाये कि राजधानी लखनऊ में रेकी को आगे बढ़ाने वाली वे प्रथम भारतीय महिला हैं तो शायद यह गलत नहीं होगा। उन्होंने न केवल उपचार की इस विधा को इस्तेमाल कर अनेक रोगियों का ध्यान धारणा, उपासना से जोड़ा है बल्कि उन्हें एक नयी दिशा भी दी है। भारत और भारत के बाहर भी उन्होंने अपने इस ज्ञान के प्रचार प्रसार के लिए विद्यार्थियों की एक बड़ी टीम तैयार की है।

डा. अंजलि का यह विश्वास है कि वे अपने इस उपचार के साथ–साथ अन्य गम्भीर उपचारों में भी इसका इस्तेमाल कर सकती हैं। रेकी उपचार के चमत्कारों के घटना क्रमों की व्याख्या करना ही पर्याप्त नहीं समझती, बल्कि इसके प्रचार प्रसार एवं प्रदर्शन के लिए भी समय–समय पर रेकी परिवार इस बात का द्योतक तो है ही कि रेकी से रोगियों को व्यापक स्तर पर लाभ हुआ है। डा. अंजलि मानती हैं कि रेकी उस समय तक काम करती है जब तक अभ्यास करने वाला इसका उपयोग करे, विश्वास करे। उन्होंने रेकी जागरूकता की चुनौती को स्वीकार किया है तथा बिना किसी औषधि के उपचार करती हैं। देखा जाये तो यह उन लोगों के लिए कठिन कार्य है जिन्होंने रेकी के संबंध में गम्भीरता से विचार नहीं किया है। डा. अंजलि मानती हैं कि पहाड़ों पर जाकर भी रेकी के अनुयाइयों को इस आधयात्मिक एवं भौतिक उपचार के लिए अपना जीवन समर्पित करना चाहिये। जिससे आम जनमानस को स्नेही स्पर्श चिकित्सा पद्धति के माध्यम से उचित निदान प्राप्त हो सके। डा. अंजलि पाठक, क्षीणकाय, मृदुभाषी और आधयात्मिक गुणों से ओत–प्रोत महिला हैं। जो अपने व्यक्तित्व से रोगियों को सहज ही आकृष्ट कर लेने वाली रेकी की पूर्ण गुरू हैं,। इसमें कोई शक नहीं कि उन्होंने ५ से ८५ वर्ष तक की आयु के व्यक्तियों का चमत्कारिक इलाज किया है तथा २१ दिनों के भीतर रोगियों को ठीक भी किया है। उनका मानना है कि मानव उपचार के अतिरिक्त भी सभी जीवधारियों, पेड़–पौधों, जन्तुओं और मछलियों आदि के उपचार भी इस विधि द्वारा किये जा सकते हैं। उनकी दृष्टि में रेकी क्षेत्र असीमित है।

जिसके पास विश्वव्यापी शक्ति पद्धति है। गौरतलब है कि दिन में दो चरणों में खुलने वाले इस क्लीनिक में अस्थमा, गठिया, पार्किंस, किडनी, लीवर और दिल के रोगियों की तादाद किसी भी क्षण देखी जा सकती है। इस चिकित्सा पद्धति में नाड़ी का अनुप्रवर्तन तथा समग्र विश्वास ही जीवन रक्षक औषधि का काम करती है।

रेकी के लिए सर्व प्रतिभावान समर्पित डा. अंजलि पाठक की देखरेख में लखनऊ में एक रेकी समूह का भी गठन किया गया है जो प्रशन्सनीय कार्य कर रहा है, रोगियों का स्पर्श कर रेकी चिकित्सा समूह जहां उन्हें चिकित्सकीय लाभ प्रदान करता है वहीं एक सत्र के लिए रोगीं को १०० रुपये मात्र की छोटी धनराशि रोग के निदान पर खर्च करनी पड़ती है। उपचार की अन्य पद्वतियों की तुलना में इस धनराशि का कोई महत्व नहीं है। रेकी समूह में **पूर्णिमा मुखर्जी जे. सी. उप्रेती, मेखला मजूमदार, भारती झुरनी, गुरूदीप सिंह तथा नन्दनी नारायण** आदि के सक्रिय सहयोग से स्पर्श चिकित्सा प्रक्रिया को गतिमान स्वरूप प्रदान किया जा रहा है। डा. अंजलि का अभिकथन है कि आधुनिक भारत के अधिकांश जन धन संग्रह में लिप्त हैं, वहीं वे केवल धन बटोरने तक ही सिमट कर रह गये हैं। वे देना नहीं जानते। आज की समस्याओं की यही प्रमुख जड़ है। उनका मानना है कि बिना दक्षिणा के उपचार का कोई सुखद परिणाम नहीं होगा, कुल मिलाकर यह चिकित्सा पद्धति के काफी नजदीक है। एक्युपन्चर चिकित्सा पद्धति के अन्तर्गत रोगी को स्नेहसिक्त हाथों से स्पर्श कर उसे लड़ने की शक्ति प्रदान की जाती है। अगर इस प्रयोग को बढ़ाया जा सके तो यह विश्वमानवता की सबसे बड़ी सेवा होगी।

सम्पर्क: कुमारटेक कम्प्यूटर्स
यू-208, शकरपुर, दिल्ली-92

दिल्ली में भारतीय राजनीति के भ्रष्टाचार पर विचार संगोष्ठी

भ्रष्टाचार मिटाने के लिए जेहाद छेड़ना होगा

प्रस्तुतिः सुधीर रंजन

राष्ट्रीय विचार मंच, दिल्ली की ओर से विगत 25 मार्च, 2001 को 11 बजे पूर्वाह्न मंच के शकरपुर स्थित कार्यालय प्रांगण **दृष्टि** में एक विचार संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसका समसामयिक विषय था **भारतीय राजनीति भ्रष्टाचार के भयंकर भंवर में।** संगोष्ठी के मुख्य वक्ता **सोमदत्त शर्मा 'सोम'** ने इस विषय पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि सरकार के प्रायः सभी अंगों - कार्यपालिका, न्यायपालिका तथा विधायिका में भ्रष्टाचार व्याप्त है जिसे मिटाने के लिए देश को आजाद करने जैसा जेहाद छेड़ना होगा, आज के बच्चों को अच्छाई-बुराई का भेद बताकर उन्हें अच्छी शिक्षा प्रदान करनी होगी। भ्रष्टाचार मिटाने के लिए उसके जड़ में तेजाब डालना होगा, श्रेष्ठ तथा ईमानदार लोगों का सामाजिक संगठन बनाकर भ्रष्टाचार मिटाने का ईमानदारी से संकल्प लेना होगा।

सरकार के प्रायः सभी अंगों-कार्यपालिका, न्यायपालिका तथा विधायिका में भ्रष्टाचार व्याप्त है जिसे मिटाने के लिए देश को आज़ाद करने जैसा जेहाद छेड़ना होगा, आज के बच्चों को अच्छाई-बुराई का भेद बताकर उन्हें अच्छी शिक्षा प्रदान करनी होगी। भ्रष्टाचार मिटाने के लिए उसके जड़ में तेजाब डालना होगा, श्रेष्ठ तथा ईमानदार लोगों का सामाजिक संगठन बनाकर भ्रष्टाचार मिटाने का ईमानदारी से संकल्प लेना होगा।

अपने अध्यक्षीय भाषण में चिन्तक व विचारक **जे० एन० पी० सिन्हा** ने संगोष्ठी के समसामयिक विषय की सराहना करते हुए भारत सरकार के सबसे महत्वपूर्ण और संवेदनशील रक्षा मंत्रालय में कथित व्याप्त भ्रष्टाचार तथा उस ओर उठाई जा रही उंगलियों पर चिन्ता व्यक्त की। उन्होंने भी भ्रष्टाचार को समाप्त करने के लिए सामाजिक और सामासिक क्रांति छेड़ने की आवश्यकता पर बल दिया।

प्रारम्भ में मंच के महासचिव व **विचार दृष्टि** के सम्पादक **सिद्धेश्वर** ने विषय प्रवर्तन करते हुए कहा कि **तहलका डॉट कॉम** की एक बेबसाइट ने रक्षा सौदों की दलाली का मामला उजागर कर न केवल पूरे भारतीय राजनीति में एक तहलका मचा दिया है बल्कि रक्षा सौदों में भ्रष्टाचार की पोल खोलकर यह सिद्ध कर दिया है कि भारतीय राजनीति में भ्रष्टाचार गहरी पैठ बना चुका है जो चिन्ता का विषय है। संसार के सबसे बड़े गणतन्त्र का दावा करनेवाली भारतीय राजनीति जब भ्रष्टाचार के भयंकर भंवर में फंस जाए तो लोकतंत्र का खतरे में पड़ना स्वाभाविक है।

इस अवसर पर अपने विचार प्रस्तुत करते हुए जे० एन० यू से डाक्ट्रेट किए **डॉ० मेदिनी राय** ने राज्य के गठन की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि राज्य का उद्देश्य हमें सुरक्षा प्रदान करना था किन्तु आज वही खोखला और असहाय हो गया है। जिसके पास दक्षता है वह सड़क पर और जो निकम्मा, भ्रष्टाचारी और अपराधी है वह संसद तथा विधानसभाओं में चला जा रहा है। आखिर इसी का प्रतिफल है कि करोड़ों रुपये की परवाह न कर लगातार दस-दस दिनों तक संसद की कार्यवाही ठप्प रहती है। इसलिए समय की माँग है कि हम सब अपने आप को मजबूत कर समाज को जागृत करें। पुष्प विहार से आए **डॉ० बद्रीकान्त झा** ने रक्षा मंत्रालय सहित हर क्षेत्र में व्याप्त घोटाले व भ्रष्टाचार के बोलबाले पर अपनी चिन्ता जाहिर करते हुए **नमामि नेता बारंबारम** और **देखो मंत्री जी का खेल** शीर्षक से दो कविताएं सुनाई जिसे सभी लोगों ने सराहा।

झारखंड राज्य के बोकारो से पधारे **सुरेश कुमार** ने विषय पर अपनी बात रखते हुए कहा कि देश के शीर्ष नेता सतारूढ़ पार्टियों के अध्यक्ष जब लाख-दो-लाख रुपये में बिक सकते हैं तो अब जनता किस पर भरोसा करे। प्रारम्भ से ही भ्रष्टाचार में आकंठ डूबी क्रांग्रेस न तो संसद में बहस चाहती है न ही तहलका प्रकरण की जाँच, जो अलोकतान्त्रिक है और देश हित के सर्वथा विपरीत। मंच की दिल्ली शाखा के सचिव **सीताराम सिंह** ने कहा कि रक्षा सौदों में हेराफेरी से देश की सुरक्षा खतरे में पड़ सकती है। बोफोर्स कांड का खामियाजा हमें कारगिल युद्ध में देखने को मिला है। इसलिए यदि सरकार ने अपने लोगों को बचाने-छिपाने और मामले को रफा-दफा करने की कोशिश की तो दूरगामी रूप से इसका दुष्प्रभाव मर्मांतक हो सकता है।

पालम के महावीर इन्क्लेव से आए **संदीप स्नेह** ने भी आज के विषय पर अपनी बातें रखते हुए जनता को अब चौकन्ना होने की जरूरत पर बल दिया। मंडावली के प्रो० **दिलीप कुमार** ने कहा कि राजनीति आज बदनाम क्षेत्र है। इसमें ईमानदारी के चमकने और स्वीकृति की बड़ी संभावना है। इसलिए ऐसे समय में समाज के प्रबुद्ध व संवेदनशील जनों को अपनी तटस्थता त्याग कर मागदर्शन करना होगा, लोगों में चेतना लानी होगी तथा राजनेताओं के प्रति चौकस रहना होगा। संगोष्ठी में और लोगों के अलावा **उदयशंकर, राजीव कुमार मिश्रा, अजीत कुमार, सुजीत सागर, अजीत कुमार सिन्हा तथा जितेन्द्र कुमार** ने भी में भाग लिया।

अंत में **विचार दृष्टि** के प्रबन्ध संपादक **सुधीर रंजन** ने अतिथियों एवं वक्ताओं के साथ-साथ उपस्थित श्रोताओं के प्रति आभार व्यक्त करते हुए राजनीतिक भ्रष्टाचार को समाप्त करने के लिए कठोर कदम उठाने की आवश्यकता बताई।

रेणु के आंचलिक उपन्यासों पर संगोष्ठी

प्रस्तुतिः मनोज कुमार, संयुक्त सचिव(सहित्य)

राष्ट्रीय विचार मंच की ओर से रेणु की जयंती के अवसर पर **रेणु के उपन्यासों में आंचलिकता** विषयक संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता मंच के अध्यक्ष एवं प्रसिद्ध साहित्यकार जियालाल आर्य ने की।

विचार दृष्टि के संपादक श्री सिद्धेश्वर ने उपर्युक्त विषय पर अपने आलेख का पाठ करते हुए कहा कि ग्रामीण क्षेत्र-विशेष की कथा-वस्तु,पात्र, संवाद, दृष्यियोजना, देशकाल तथा भाषा शैली का सजीव चित्रण जिस ढंग से रेणु के उपन्यासों में हुआ है वह उसे आँचलिकता की पंक्ति में सहज भाव से ला खड़ा करता है। अंचल विशेष मेरीगंज की प्राचीन मान्यताओं की सहज धारा के बीच आधुनिक विचारों की ज्वार-भाटा का भी चित्रण हुआ है रेणु के सबसे अधिक चर्चित अपन्यास **मैला आँचल** में, जो आँचलिकता की एक शर्त भी है। रेणु के उपन्यासों में आंचलिकता की प्रतिष्ठा के मूल में दलित समाज के आम लोगों का सर्वांगीण विकास है। साहित्यकार **जियालाल आर्य** ने कहा कि रेणु ने अंचल विशेष के जीवन की समग्रता को अपने उपन्यासों में चित्रित कर सामाजिक आंदोलन को आम आदमी से जोड़कर नई दिशा दी।

इस संगोष्ठी में सर्व श्री बाबूराम सिंह लमगोड़ा, डॉ० शिवनारायण, बलभद्र कल्याण, हरीन्द्र विद्यार्थी, रवि घोष, प्रो० बी० एन० विश्वकर्मा, डॉ० शाहिद जमील, विपिन विप्लवी, वंशीधर सिंह, मनोज कुमार आदि ने भी रेणु की रचनाधर्मिता पर विस्तार से प्रकाश डाला। गोष्ठी में इस बात पर आम सहमति हुई कि रेणु के परिवार की आर्थिक स्थिति अत्यन्त जर्जर है, अतः समाज और सरकार द्वारा उनकी सहायता के लिए पहल की जानी चाहिए। मंच के सक्रिय सदस्य **रवीन्द्र प्रसाद सिन्हा** के धन्यवाद ज्ञापन से इस विचारोत्तेजक गोष्ठी का समापन हुआ।

मंच की प० बंगाल शाखा, कोलकाता की कार्यकारिणी की बैठक सम्पन्न

विगत 23 फरवरी, 2001 को संध्या छः बजे हावड़ा के अधिकारी विश्रामालय में राष्ट्रीय विचार मंच की प० बंगाल शाखा, कोलकाता की कार्यकारिणी की बैठक अध्यक्ष जितेन्द्र धीर की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई जिसमें कवि कमलेश कुमार, राजकिशोर राजन, मो० मुमताज, यमुना प्र० राय, अनिल सिंह पटेल, बद्रीमंडल, हंसनाथ यादव तथा संजय श्रीवास्तव आदि के अलावा मुख्य रूप से मंच के राष्ट्रीय महासचिव श्री सिद्धेश्वर उपस्थित हुए। शाखा की ओर से सचिव राजकिशोर राजन के आग्रह पर **विचार दृष्टि** के सम्पादक सिद्धेश्वर ने प० बंगाल के रचनाकारों से वहाँ की राजनैतिक, सामाजिक तथा साहित्यक-सांस्कृतिक गतिविधियों के समावेश हेतु कम-से-कम दो पृष्ठ विचर दृष्टि में आवंटित करने का आश्वासन दिया। मंच के उद्देश्यों को अमलीजामा पहराने हेतु मंच के सदस्यता-शुल्क के 90 प्रतिशत अंश को खर्च करने की स्वीकृति महासचिव ने प्रदान करते हुए शाखा की ओर से अलग से संसाधन जुटाने का अनुरोध किया। शाखा की ओर से बनाए गए पत्रिका के ग्राहकों को नियमित रूप से उसकी प्रतियाँ भेजने का आश्वासन सम्पादक ने दिया।

सर्वसम्मति से केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद के प० बंगाल शाखा के संयोजक यमुना प्र० राय को मंच की प० बंगाल शाखा के संगठन सचिव तथा अनिल सिंह पटेल को कोषाध्यक्ष पद के लिए मनोनीत किया गया। अन्त में अध्यक्ष जितेन्द्र धीर ने अध्यक्षीय भाषण प्रस्तुत करते हुए आश्वासन दिया कि वे मंच तथा पत्रिका के सदस्यता अभियान में तेजी लाने के साथ-साथ मंच के उद्देश्यों के अनुरूप गोष्ठियाँ, परिचर्चा, काव्य सन्ध्या आदि का आयोजन कर लोगों में राष्ट्रीय चेतना जागृत करने का संकल्प दुहराया।

प्रस्तुतिः राजकिशोर राजन, कोलकाता

मंच की महाराष्ट्र शाखा मुंबई की नई कार्यकारिणी गठित

विगत 16 मार्च, 2001 को संध्या 18:30 बजे छत्रपति शिवाजी टर्मिनल (सी० एस०टी०), मुम्बई के विश्रामालय में महाराष्ट्र के प्रबुद्धजनों की एक बैठक **राष्ट्रीय विचार मंच** के राष्ट्रीय महासचिव तथा उसके मुख-पत्र **विचार दृष्टि** के सम्पादक **सिद्धेश्वर** की उपस्थिति में हुई जिसकी अध्यक्षता मध्य रेलवे के वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी के० पी० सत्यानन्दन ने की।

महासचिव **सिद्धेश्वर** ने प्रारम्भ में बैठक की पृष्ठभूमि प्रस्तुत करते हुए **राष्ट्रीय विचार मंच** तथा राष्ट्रीय भावनाओं पर आधारित त्रैमासिकी **विचार दृष्टि** के उद्देश्यों पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि देश के लोगों में जिस प्रकार राष्ट्रीयता की भावना तेजी से लुप्त होती जा रही है और भारतीय राजनीति में जितनी द्रुत गति से गिरावट हो रही है ऐसी भयावह स्थिति में देश के लोगों में राष्ट्रीय चेतना जागृत करने की अत्यन्त आवश्यकता है और इस पुनीत कार्य में संवेदनाशील प्रबुद्धजन यथा साहित्यकार, पत्रकार, कलाकार, चित्रकार, अधिकारी-कर्मचारी तथा सामाजिक कार्यकर्त्ता अपनी अहम भूमिका अदा कर सकते हैं। कुछ इसी भाव से प्रेरित होकर **राष्ट्रीय विचार मंच** की स्थापना की गई है जिसकी शाखाएं तमिलनाडु, कर्नाटक, केरल, प० बंगाल तथा बिहार के महानगरों, नगरों एंव कस्बों में कार्यरत हैं और तथा अपने मुख-पत्र **विचार दृष्टि** के माध्यम से उसके उद्देश्यों को कार्यान्वित करने की दिशा में अग्रसर है। सिद्धेश्वर ने उपस्थित प्रबुद्धजनों को सूचित किया कि **विचार दृष्टि** पत्रिका भारत सरकार के सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय द्वारा अनुमोदित तथा पंजीकृत है। समय की माँग है कि महाराष्ट्र में पिछले वर्ष से चल रही मंच की तदर्थ समिति को अत्यधिक कारगर बनाने हेतु विधिवत इसकी नई कार्यकारिणी गठित की जाय तथा **विचार दृष्टि** पत्रिका के ब्यूरो प्रमुख का चयन किया जाए।

इस अवसर पर मध्य रेलवे के प्रदीप ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि मानव एक सामाजिक प्राणी होने के कारण अपने परिवेश में होने वाली गतिविधियों से अलग नहीं रह सकता। इसीलिए अन्य प्राणियों से भिन्न होने की वजह से भोजन की तलाश के अलावा वह जीवन की सार्थकता पर विचार करता है जिसके लिए **राष्ट्रीय विचार मंच** एक उत्कृष्ट माध्यम बन सकता है तथा महाराष्ट्र के प्रबुद्धजन भी उसकी पत्रिका के माध्यम से अपने विचार व्यक्त कर सकते हैं।

तत्पश्चात् श्रीकान्त चौबे ने भी मंच तथा **विचार दृष्टि** पत्रिका को विस्तार देने की आवश्यकता पर बल देते हुए प्रत्येक संवेदनशील प्रबुद्ध जन को अपने विवेक की उपादेयता को बताया। बुद्धिराम यादव तथा सुप्रसिद्ध हास्य कवि मुकेश गौतम ने कहा कि प्रत्येक नागरिक में आज विचार और दृष्टि की आवश्यकता है जिसके लिए एक अच्छा मंच तथा विचारों के आदान-प्रदान के लिए **विचार दृष्टि** पत्रिका का फैलाव जरूरी है। राजभाषा अधिकारी विश्वामित्र तथा सुरेन्द्र कुमार ने कहा कि हमें मौलिक दृष्टि पैदा करनी चाहिए और सतत सत्यान्वेषण की तलाश में लगे रहना चाहिए। सत्यानन्दन ने अपने अध्यक्षीय भाषण में जीवन मूल्यों, जिसका सम्बन्ध विचार और कर्म से है, की सार्थकता को रेखांकित करते हुए सिद्धेश्वर जी के प्रयासों को सहयोग करने की आवश्यकता बताई तथा **मंच** एवं **विचार दृष्टि** पत्रिका को हर संभव सहयोग करने का आश्वासन दिया।

बैठक में सर्वसम्मति से राष्ट्रीय विचार मंच की महाराष्ट्र शाखा, मुंबई की नई कार्यकारिणी का गठन हुआ जिसके निम्नलिखित पदाधिकारी तथा सदस्य निर्वाचित हुए:-

संरक्षक

श्रीमती रेणुनाथ, कथा लेखिका

अध्यक्ष

एस०एस० धुत्रे, उपनिदेशक, राजभाषा

उपाध्यक्ष

श्रीमाली

सचिव

विश्वामित्र, राजभाषा अधिकारी

संयुक्त सचिव

के० पी० सत्यानन्दन

कोषाध्यक्ष

मुकेश गौतम, हास्य कवि

कार्यकारिणी सदस्य

विजय तिवारी, के.एस. बेसेकर, डॉ०डी.पी. सिंह, श्रीमती सरस्वती अय्यर तथा प्रदीप

सलाहकार

डॉ० राजेन्द्र कुमार गुप्ता तथा जगन्नाथ

इस बैठक ने इस कार्यकारिणी को अधिकृत किया कि वह विभिन्न क्षेत्रों से आवश्यकतानुसार सक्षम सदस्यों को मनोनीत कर ले।

बैठक में सर्वसम्मति से बैंक अधिकारी तथा हिन्दी साहित्य के सशक्त हस्ताक्षर वीरेन्द्र याज्ञिक **विचार दृष्टि** पत्रिका के ब्यूरो प्रमुख, मुंबई के पद के लिए निर्वाचित हुए। उन्हें मुंबई महानगर तथा महाराष्ट्र के अन्य नगरों के विचार संवाददाता मनोनीत करने के लिए अधिकृत किया गया। बैठक में उपस्थित विद्वतजन विशेषकर सिद्धेश्वर जी की गौरवपूर्ण उपस्थिति के लिए प्रदीप ने उनके प्रति आभार व्यक्त किया।

विचार दृष्टि

समाचार पत्र रजिस्ट्रेशन (केन्द्रीय कानून 1956 नियम 8) के अनुसार **विचार दृष्टि** से सम्बन्धित विवरण:

प्रपत्र -4

1	प्रकाशक का नाम	:	सिद्धेश्वर
2	प्रकाशन का स्थान	:	दिल्ली
3	प्रकाशन- अवधि	:	त्रैमासिक
4	मुद्रक का नाम	:	सिद्धेश्वर
	राष्ट्रीयता	:	भारतीय
	पता	:	ई-50,एफ०एफ०सी०, झंडेवालान, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-55
5	प्रकाशक का नाम	:	सिद्धेश्वर
	राष्ट्रीयता	:	भारतीय
	पता	:	ई-50,एफ०एफ०सी०, झंडेवालान, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-55
6	सम्पादक का नाम	:	सिद्धेश्वर
	राष्ट्रीयता	:	भारतीय
	पता	:	'बसेरा', पुरन्दरपुर, पटना-1
7	मालिक का नाम व पता	:	सिद्धेश्वर, 'बसेरा', पुरन्दरपुर, पटना-1

मैं **सिद्धेश्वर** यह प्रमाणित करता हूँ कि मेरी जानकारी और विश्वास के अनुसार उपर्युक्त विवरण सही है।

तिथि : 20 मार्च, 2001

ह० सिद्धेश्वर
प्रकाशक

ग्लेडियर को आस्कर अवार्ड

हालीवुड की भाषा में ***अंकल आस्टर*** के नाम से चर्चित **आस्कर अवार्ड** रोमन पृष्ठभूमि पर बनी युद्धकथा रिडले स्कॉट की **ग्लेडियेर** को सर्वश्रेष्ठ फिल्म के अतिरिक्त चार अन्य आस्कर अवार्ड भी प्राप्त हुए। अमेरिका के खुशनुमा शहर **लास एंजिल्स** में आयोजित 73 वें वार्षिक आस्कर अकादमी समारोह में हालीवुड की सबसे महंगी अभिनेत्री **जूलिया राबर्टस** को **एरिन ब्रोकोबिच** में उनके सशक्त किरदार के लिए सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री व **रसेल क्रोव** को सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का **आस्कर पुरस्कार** मिला।

पुरानी शैली के काले मखमली परिधान में मंच पर **परी** की तरह उतर कर **जुलिया** ने आस्कर ग्रहण किया जिसे पूरी दुनिया में इन्टरनेट स्क्रीन और दूरदर्शन चैनलों के आगे टकटकी लगाए 1.5 अरब से अधिक दर्शकों ने देखा। पुरस्कार के रूप में प्लास्टर ऑफ पेरिस की प्रतिमा का आस्कर अवार्ड ग्रहण करने बाद जुलिया ने खिलखिलाकर कहा- **मैं पूरी दुनिया से प्यार करती हूँ, मैं बेहद खुश हूँ।**

अमिताभ सबसे दमदार अभिनेता

विचार फिल्म संवाददाता, मुंबई

बेवसाइट फोब्स कॉम ने एक विशेष फॉर्मूल के आधार पर पाँच सर्वाधिक दमदार भारतीय फिल्म अभिनेताओं-अभिनेत्रियों की सूची जारी की है, जिसके अनुसार बॉलीवुड के सबसे दमदार अभिनेता हैं अपने जमाने के सुपरस्टार **अमिताभ बच्चन। 58** वर्षीय अमिताभ बच्चन के बाद दूसरे और तीसरे नम्बर पर क्रमशः **रितिक रोशन** और **अमीर खान** हैं। अभिनेत्री **ऐश्वर्या राय** और **माधुरी दीक्षित** क्रमशः चौथे और पाँचवे नम्बर पर हैं। फोर्ब्स कॉम ने अपने फार्मूले को लागू करने के दौरान विभिन्न अभिनेता-अभिनेत्रियों द्वारा लिए जाने वाले पारिश्रमिक, मीडिया में खबरों की संख्या और अन्य चीजों पर गौर किया।

आखिर कहां चूक हुई खुफिया एजेन्सियों से ?

दिलीप, रा०वि०ब्यूरो, दिल्ली

भारत-बंगलादेश सीमा पर भारतीय सीमा सुरक्षा बल के तैनाती के बावजूद बंगलादेश राइफल्स के सुरक्षाकर्मी पूर्वोत्तर राज्य असम के सीमांत पिर्डीवाह गांव पर कब्जा जमा लिया साथ ही वहीं के करीब 800 खासी जनजातीय ग्रामीणों को आतंकित कर भगाकर यहां बंगलादेशी नागरिकों को बसा दिया। अब भारतीय खुफिया अधिकारियों एवं सभी सुरक्षा एजेन्सियों को इस मसले पर गंभीर मंथन करने की आवश्यकता है कि कारगिल की तरह की चूक इस बार फिर कैसे दुहरायी गई और बंगलादेशी सैनिक बिना किसी अवरोध के हमारे भूभाग में कैसे घुस आए।

आखिर बीएसएफ वाले सीमा पर क्या कर रहे थे? क्या वे बीडीआर के इरादे को भांपने में नाकाम रहे या फिर उनका खुफिया नेटवर्क पिलपिला साबित हुआ? क्या इसके लिए हमारे गृहमंत्री, प्रधानमंत्री, रक्षामंत्री, विदेशमंत्री भी दोषी नहीं हैं जो सिर्फ पड़ोसियों से अपनी दोस्ती बढ़ाने शेखी बघारते थकते नहीं बल्कि उनके करारे तमाचे पर भी चुपचाप आंख मूंदे बैठे रहते हैं। आखिर तभी तो बंगलादेश की प्रधानमंत्री ने इस सम्बन्ध में प्रधानमंत्री से इस घटना पर दुख तो व्यक्त किया परन्तु इस घटना के लिए खेद व्यक्त करने से साफ मना कर दिया और इसके लिए बंगलादेश राइफल्स को भी जिम्मेदार नहीं ठहराया। बल्कि उन्होंने तो इसके लिए भारतीय सुरक्षा बलों पर हीं आरोप थोपा कि इन्होंने ही पहले उकसाने वाले गोलीबारी की जिसमें वे सभी मारे गये।

राज्यसभा में रक्षामंत्री जसवंत सिंह की यह टिप्पणी कि बीएसएफ की ओर से किसी भी तरह की खुफिया चूक नहीं हुई सभी भारतीयों के गले से नीचे नहीं उतरती। मेघालय के गृहमंत्री पी.एच. रंगद ने कहा है कि बीएसएफ को यह स्पष्ट करना चाहिए कि सीमा पर क्या हुआ और यह सब कैसे हुआ। जबकि वास्तविकता यह है कि पिर्डीवाह गांव के स्थानीय लोगों ने बीडीआर के संभावित हमले से बीएसएफ वालों को आगाह किया था। ऐसी चेतावनी एक बार नहीं बल्कि तीन-तीन बार दी गई। बीएसएफ ने इस चेतावनी को पूरी तरह नजरअंदाज कर आखिर सीमा पर क्या कर रहे थे?

भारत सरकार भारत-बंगलादेश सीमा की सुरक्षा को सिर्फ यह कहकर नजरअंदाज नहीं कर सकती है कि बंगलादेश से उसका दोस्ताना सम्बन्ध है। हमारी जवानों को जिस बेरहमी से मारा गया है उससे हमें अपनी सुरक्षा पर हर कोने से सतर्क रहने की आवश्यकता है क्योंकि आईएसआई की गतिविधियां हर जगह हर क्षेत्र में घुसपैठ कर गई है।

तालिबान या हैवान?

डॉ०योगेश कौशल

अफगानिस्तानी खालिस्तान से
तुमने बुद्ध की प्रतिमा खाली नहीं करवाया,
बल्कि भरमाया,
अपनी इबादतगाह को उजाड़ा है
कुरान को फाड़ा है
भंग का जहर पिया,
अरे ओ उमर! शेर बनने की कोशिश में
चूहा बना बिल से फतवा जारी किया-
तुम्हारे अन्दर का इंसान,
मर गया रे तालिबान!
इसलिए धर्म की आड़ में
इबादत की दीवार ढाते हो
मंदिर नहीं, मस्जिद को मिटाते हो
अतीत को मिटा सकते नहीं
राम-रहीम हर दिल में है कहीं-न-कहीं
भगवान बुद्ध की घाटी,
वह अफगानिस्तान नहीं,
हिन्दुस्तान की है माटी
पहले इन प्रतिमाओं को औरंगजेब ने क्षतिग्रस्त किया,
लेकिन तालिबान तुमने तो
बामियान के इतिहास को ही पस्त कर दिया
तुमने भारत के अंग को नहीं काटा,
बल्कि अपनी राष्ट्रीय विरासत के गाल पर लगाया है चाटा
किसी का घर उजाड़ने से पहले,
घर बसा सकते,
काश! अपने हृदय से नफरत को मिटा सकते
अपनी ताकत आदमी पर नहीं आजमा सके,
तो पत्थर पर आजमाया
अरे ओ हिजड़े, दम था,
तो बुर्के से बाहर क्यों नहीं आया?
तुम्हारी हरकत से शर्मशार है,
धर्म और ईमान।
जन्नत क्या? दोजंख में भी नहीं मिलेगा स्थान,
रे तालिबान!

सम्पर्क: निदेशक, कौशल कला केन्द्र
ईशीपुर: भागलपुर-813206

मौन रह अपनी कहानी खुद कहूँगी!

❑ वन्दना 'सरल'

मौन रह अपनी कहानी खुद कहूँगी!
चिर पुरातन पथ कभी मुझको न भाया
कुछ करूँ नूतन सदा मन में ये आया
नित नये ही अर्थ में जीवन को पाया
मैं नये विश्वास का आधार ले जीवन समर में
कर निमन्त्रित हर चुनौती को गहूँगी
मौन रह अपनी कहानी खुद कहूँगी!
क्या मुझे संसार के दुख तोड़ देंगे
या निराशा से ये नाता जोड़ देंगे
क्या मेरे विश्वास को विच्छिन्न कर यूँ
मेरे जीवन लक्ष्य को ही मोड़ देंगे
पर पलायन मार्ग तो मेरा नहीं था, न ही होगा
रह अटल मैं हर विपत्ति को सहूँगी
मौन रह अपनी कहानी खुद कहूँगी!
मैं विजय के भाल पर सीकर बनूँगी
अमरता का नाद विष पी चंद्रिका
मैं अमा का नाश जीवन भर करूँगी
बाँध पायेगा न कोई बन्धनों में
मैं तटों से मुक्त निर्झर सी बहूँगी
मौन रह अपनी कहानी खुद कहूँगी!

सम्पर्क: बी-11 इन्कमटैक्स फ्लैट,
नवरंगपुरा, अहमदाबाद-380009

आज का इंसान

❑भोला पासवान

वाह रे इंसान,
वक्त है हैरान।
प्रकृति का करता बलात्कार,
यही है इसकी शान।
पृथ्वी के सारे जीव-जंतु हैं,
इससे परेशान।
एक दूसरे का हाड़ मांस नोचना,
है इसकी पहचान।
तीनों लोक का विनाश
करने की मंशा, होगा इसका अंजाम,
यही है आज का इंसान।

सम्पर्क: एन० एस० वर्क शॉप
डाकघर-लोदना, धनबाद

हाथी दादा चले बाजार

❑रजनीकांत कुमार'वास्तव'

घर से होकर के तैयार,
हाथी दादा चले बाजार।
चश्मा पहने काले रंग का, लाल रंग का सूट
हरी कैप थी सर पर उनके, पाँव में भूरे बूट।
आलू और बैगन की सब्जी, लेने चले उधार।
हाथी दादा चले बाजार.....
लेकिन ज्योंहि घर से निकले, माथा थोड़ा ठनका
बिल्ली मौसी ने आकर जब रास्ता काटा उनका।
सूंढ़ झटक कर बड़े जोर से मारी, तब हुंकार।
हाथी दादा चले बाजार......
आगे-आगे बिल्ली मौसी, दादा पीछे-पीछे
बिल्ली हाथ न आयी, उनके रौंदे बाग-बगीचे।
सब्जी उनको मिल न पायी, बंद हुआ बाजार।
हाथी दादा चले बाजार.....।

सम्पर्क: छात्र, नवम् वर्ग, ग्राम-मानपुर,
पत्रा०-अमावां(नालन्दा)

क्षणिकाएं

राजकिशोर राजन

बच्चों जैसा काम करते हैं-
क्या जनाब!!
क्या करते हैं-
ज्यादातर लोग मुझसे यही कहते हैं-
अब कैसे समझाऊँ उन्हें
इस दौर में बच्चा रहना
बच्चों का खेल नहीं है
साधने में
जीवन सध गया
पाया बहुत कम
ज्यादा बह गया
पता चला बरसों बाद
कितना अच्छा होता
अगर पहले ही
बहक गया होता

संपर्क: राजभाषा अनुभाग, पूर्व रेलवे मुख्यालय, 17, नेताजी सुभाषमार्ग, कोलकाता

नहीं जानते दो दृष्टिकोण

कृष्ण कुमार विद्यार्थी

लिहाफ़ में देर तक सोनेवाले
नहीं जानते;
उगते सूरज की अरुणाभा
कितनी मोहक होती है।
दसवीं मंजिल पर जीनेवाले
नहीं जानते;
दूब की मखमली छुवन
पैरों को कितना
प्राणवन्त बना सकती है!
महानगरों में भागनेवाले
नहीं जानते
फूल, पौधों और झरनों
का सत्संग
कितना शान्त, कितना सुखद है।
वातानुकूलित कमरों के आदी
नहीं जानते;
बदलते मौसम में
कितना रस है।
तिजोरी की उपासना
करनेवाले नहीं जानते
प्रेम से भरा मन
कितना बड़ा खजाना है।
शायद इसीलिये हम
आज सूरज की जगह तहखाने,
दूब की जगह कंक्रीट,
फूल की जगह रंगीन परदें,
मौसम की जगह एयर कंडीशनर
और प्रेम की जगह
लौकर तलाशते रहते हैं।
अपने ही टूटे तारों को
जोड़ने में निमग्न मानव
एक टूटा सितार बनकर
रह जाता है।
जिसकी जगह या तो
घर का एक उपेक्षित कोना
या मकड़ी के जालों से भरा
स्टोर रुम बन जाता है।
अपने ही लाभ-हानि में डूबा व्यक्ति
न तो लाभ में आनन्दित होता है;
न हानि से कुछ सीखता है।
वर्ष प्रति वर्ष वह बनता जाता है
एक जड़, नीरस, बैलन्स-शीट
जिसमें न कोई प्रगति होती है
न कोई प्रेरणा।
अपनी बुद्धि और तिकड़म के
कम्पयूटर पर आसक्त व्यापारी,
सिर्फ ग्राफ की सीढ़ियों पर
चढ़ता, उतरता रहता है-
सृच्छांकोड के दुर्गम भँवर में
डूबता उतराता है;
कभी बैन्ड-बैलन्स और
लाकरों के तरंगों पर नाचता है
तो कभी सी० बी०आई० और रेड की
अन्ध कूप में डूब जाता है।
शायद ये लोग नहीं जानते
बिना किसी तिकड़म और प्लानिंग के
जीवन सरिता में
सहज बहते रहने में
कितना आनन्द है
कितना रस है।

आंखें खोलो

बच्चन लाल 'बच्चन'

अरे! समाज के ठेकेदारों आंखें खोलो ।
कब तक रहे सिसकता मानव कुछ तो बोलो ।।
बाजारों में यहां मनुजता [illegible] है।
बोलो इसमें कहां प्रगति तेरी होती है ।।
महाकाल लाने में जो तुम रहोगे तत्पर ।
यह मृत्यु का नृत्य देख लोगे हर पथ पर ।।
अगर कलंकित तुम समाज में हो जाओगे ।
जीवन भर कर मलते रहोगे — पछताओगे ।।
जिस प्रलोभ में पड़कर अपने को भूले हो ।
पापाचारों में रत होकर क्यों फूले हो ।।
अभी समय है संभलो मत दौलत से खेलो ।
मानवता बहुमूल्य अरे मत इसको तौलो ।।
अरे! समाज के ठेकेदारों आंखें खोलो ।
कब तक रहे सिसकता मानव कुछ तो बोलो ।।
जीवन है एक स्वप्न भरोसा क्या इसका है।
चंचल जल की भांति हुआ धान किसका है ।।
तब क्यों करते हो अनर्थ अपने ही घर में ।
सभी व्यर्थ हो जायेगी सम्पत्ति क्षण भर में ।।
अरे! स्वदेश का अर्थ न उल्टा यहां लगाओ ।
स्वार्थ सभी दो त्याग गरीबी दूर भगाओ ।।
तुच्छ भावना छिपी हुई जो तेरे तन में ।
ठुकरा दो अब उसे प्रेम भर दो जन–जन में ।।
दुखियों के बहते आंसू से हृदय भींगो लो ।
परोपकार की सरिता में मन आज डूबो लो ।।
अरे! समाज के ठेकेदारों आंखें खोलो ।
कब तक रहे सिसकता मानव कुछ तो बोलो ।।

सम्पर्क : १२/१, मयूरभंज रोड, कलकत्ता-७०००२३

मदद

प्रीति बलगोत्रा

गरीबों की देखो दशा
हम जो खाए, बांटो जो बचा
आओ बांटे उनमे प्यार
वो भी है इस देश के यार
मातृभूमि पर जनमे हम
प्यार करो उनसे ना कम
उनके दु:ख हमारे दुख
उनमें बांटो हमारे सुख
जमीन उनका बिस्तर हैं
आकाश उनकी चादर
आप चाहो तो दे सकते हो
उन सबको भी आदर
उनका जीवन कोरा कागज
आप चाहो तो भर सकते हो
देकर उनको एक जिन्दगी
जीवन सुखद बना सकते हो
गरीबों की देखो दशा
हम जो खाए, बांटो जो बचा।

मिली नहीं......

कु० नवनीत कोठारी

आज दुनिया के पास क्या नहीं ?
पैसा, सोना, चांदी की कमी नहीं है,
पर जिसकी है कमी उन्हें
वह मिली कहां है.........?
छेड़ी मैंने भी ऐसी तंत्री
हुआ मैं मंत्री
किया फिर ऐसा जादू
कहलाया साधु
गुफाओं में जा
किया मैने तप
पर जिसकी चाह लिये
कर रहा था श्रम
वह शान्ति मिली कहां........?

**सम्पर्क : ए०बी०-40
अन्नानगर वेस्ट,
चेन्नई-600040**

भावना को भुनाने की कला और सामाजिक यथार्थ

❑ डॉ० रति सक्सेना

"जनरल अस्पताल के नवें वार्ड का बरामदा, बरामदे में आड़े-तिरछे पड़े दो कंकाल-जीवित कंकाल-उनमें से एक के तन पर एक सूत तक नहीं-फटी आँखें-ऊपर उठे हाथ-कूल्हों के पास बिखरा मल मूत्र, भिनकती मक्खियाँ.. उधड़ी खाल वाले मुर्गे की तरह ऊपर की ओर उठी टाँगें-और पास में पड़ी अस्पताल की रूई-दूसरा कंकाल-कुछ बेहतर, यानी कि कपड़ा नहीं किन्तु मल मूत्र भी नहीं, नग्न शरीर से बेखबर, टाँग पर टाँग चढ़ाए, आँखें बन्द किऐ-न जाने कुछ सोच रहा है, या फिर सो रहा है।"

ओणम के अवसर पर "अत्तप्पू"(फूलों की रंगोली) बनाने के कम्पीटीशन में भी नगर में पहला पुरस्कार उसे ही मिला जिसने समाज की इस वीभत्स नग्नता को पुष्प-रंगोली में उतारा। शायद फूल भी शर्मा गए होंगे इस नंगी सच्चाई को देखकर। लेकिन साहब क्या कमाल की है हमारी कला.... हर नग्नता को भुना लेते हैं....

केरल के सबसे ज्यादा बिकने वाला अखबार **मलयालम मनोरमा** के मुख्य पृष्ठ पर छपा एवं रंगीन चित्र... अखबार पढ़ते हुए चाय पीने वालों में से कुछ की चाय जरूर छलक गई होगी.... संभव है कि कुछ का दिल भी छलका हो.. राजनीतिक समुदायों में भी खलबली मच गई... पात्तुम्मा ने उस दिन बेटी की शादी के लिए कपड़े खरीदने का विचार बनाया था। तुरन्त विचार बदला और **मलयालम मनोरमा** के दफ्तर में फोन घुमाया।

शाम के चार बजे तक मनोरमा के दफ्तर में करीब तीस- चालीस हजार रुपए दिए जाने का भरोसा जमा हो चुका था। शाम के पाँच बजे से पहले ही मंत्री महोदय, कंबल, डबलरोटी और चटाई का वितरण करके वापस लौट चुके थे। पत्रकारों की दूसरी खेप को नग्नता के स्थान पर कंबल दिखाई दिए .. भूख के स्थान पर रोटी दिखाई .... निराशा तो होनी ही थी।

दूसरे दिन के अखबार प्रतिक्रियाओं से भरे हुए थे... कहीं कोश तो कहीं आक्रोश ... सबने अपनी-अपनी भागीदारी निभाई। एक सप्ताह बाद अस्पताल के दसवें वार्ड में न तो बूढ़े थे. . और न ही डाक्टर.... सप्ताह भर में क्या हुआ. . कौन जाने!

एक सप्ताह बाद फिर एक खबर सुर्खियों में,बूढ़े का चित्र खींचने वाले फोटोग्राफर को आठ हजार रुपये का पुरस्कार मिला है। लोगों के दिल से फिर एक हाय निकली, कमबख्त क्या किस्मत है.... एक फोटो के लिए आठ हजार झाड़ लिए।

यानी कि उस फोटो में छिपा दर्द, उन बूढ़ों की आँखों में तैरते सवाल, उनकी नग्नता में उधड़ती पारिवारिक व्यथा.... सामाजिक चरमराहट, सब के सब आठ हजार के सागर में डुबकी लगा कर अन्तर्धान हो गए। फिर तो वह चित्र पुरस्कार प्राप्त करने की कुंजी बन गया....कवियों ने कविताएँ रच डाली.. कभी न छपने वाले लोगों ने "लेटर टू एडीटर" में छप कर भड़ास निकाल ली.... **ओणम** के अवसर पर "अत्तप्पू"(फूलों की रंगोली) बनाने के कम्पीटीशन में भी नगर में पहला पुरस्कार उसे ही मिला जिसने समाज की इस वीभत्स नग्नता को पुष्प-रंगोली में उतारा। शायद फूल भी शर्मा गए होंगे इस नंगी सच्चाई को देखकर! लेकिन साहब क्या कमाल की है हमारी कला.... हर नग्नता को भुना लेते हैं.... हर जहर को मधु बना लेते हैं.... हर बदबू को खुशबू बना लेते हैं। मैं सोच रही थी कि उस सच्चाई की बदबू के भभाके को दर्शाने के लिए किस फूल का इस्तेमाल किया होगा.... सोचने से क्या होता है? सोचना तो कुछ और था और सोचने कुछ और लगे। जिन सवालों को उठना था, वे कुछ ऐसे हो सकते थे-

1. सरकारी अस्पताल के नवें वार्ड में ये बूढ़े कहाँ से आए?
2. क्या उनके साथ उनके रिश्ते नातेदार कोई नहीं थे?
3. यदि थे तो वे कहाँ चले गए?
4. चले गए तो कहाँ चले गए?
5. क्या उनका रोग सिर्फ बुढ़ापा था या गरीबी थी?
6. क्या अभी तक उन पर किसी की भी निगाह नहीं पड़ी?
7. भीड़-भड़क्के वाले अस्पताल में बूढ़ों पर किसी की भी निगाह नहीं पड़ी?
8. यदि निगाह पड़ी भी तो लोगों के दिल क्यों नहीं पसीजे? क्या लोगों ने अपने दिल का आपरेशन करवा कर पत्थर लगवा लिया है?
9. सामाजिक संस्थाओं, गैर सरकारी संस्थाओं ने इस पर ध्यान क्यों नहीं दिया?
10. इस सामाजिक कोढ़ का घाव क्या अभी फूटा?

आदि आदि... लेकिन सबसे बड़ी बात तो यह है कि यह स्थिति आई क्यों? अभी-अभी तो **अमर्त्य सेन** केरल की इतनी तारीफ करके गए हैं.... केरलीय शिक्षा की चर्चा दुनिया में हो रही है। केरलीय नर्से दुनिया में मशहूर हैं...यहाँ की मातृसत्तात्मक प्रणाली अपनी चरमराहट के बावजूद परिवार सहयोगी है।

फिर ऐसा क्यों हुआ? हुआ ही नहीं हो रहा है.... लगातार हो रहा है। कहीं पर यह नग्नता उधड़ी पड़ी है तो कहीं पर छिपी। एक सूत्रात्मक समीकरण बनाने की कोशिश की जाए तो कुछ ऐसा बन सकता है-

1. शिक्षा-श्रम से अरुचि-नौकरी की कमी-पलायन
2. पलायन-कल्पनाओं की टूटन, रिश्तों में बिखराव या फिर

1.शिक्षा-धन की प्राप्ति-व्यावसायिक बुद्धि-स्वार्थ की वृद्धि
2. स्वार्थ- अतृप्त प्यास संवेदना कोशिकाओं का क्षरण
3. संवेदनहीनता-पशुत्व मनोवृत्ति-सामाजिक हरास

चलिए, सूत्रात्मक शैली को छोड़ा जाए.. .. देखें कि हो क्या रहा है। माता-पिता जागरुक हो गए हैं.. वे चाहते हैं कि बच्चों को पढ़ाया-लिखाया जाए। कुली का बच्चा भी अंग्रेजी स्कूल में पढ़ना चाहता है.... किन्तु

सामाजिक अन्तराल, मानसिक दवाब और अन्धप्रवृत्ति के कारण अधिकतर बच्चे दसवीं से पहले ही स्कूल छोड़ देते हैं.... जो कुछ और पढ़ लिख गए वे भी नौकरी के अभाव में ड्राप-आउट सा जीवन बिताने नहीं सकते क्योंकि पढ़ लिख गए हैं और नौकरी मिलती नहीं। किसी तरह सब कुछ बेच- बाच कर खाड़ी के देशों में भागे भी तो त्रिशंकु की तरह लटकते रहे। न घर के न घाट के... लिहाजा घर से टूटे ... परिवार से टूटे .... और समाज से टूटे। अब इनके बूढ़े माँ बाप क्या करें? उनका तो सब कुछ बच्चों के लिए स्वाहा हो गया.... शिक्षा के कारण एक-बच्चों तक ही सीमित रहे....बेबस बुढ़ापा आया..कोई आस-पास का नाते रिश्तेदार अस्पताल में सर्दी-खाँसी के नाम पर भर्ती करवा गया और चुपचाप गुल हो गया। सरकारी अस्पताल से रोगी को भगाया तो नहीं जा सकता.... दिन में एक बार आधी डबलरोटी मिलती है.. चलो, उसका तो सहारा है...डाक्टरों की यही मानवता कम है कि उन्होंने इन्हें भगाया नहीं....फिर कपड़े आदि का इंतजाम वे क्यों करें। दूसरी स्थिति तो और भी भयानक है। लड़के-लड़कियों को नौकरी मिली.. आशाओं ने पंख फैलाये.... आमदनी से बढ़ कर इच्छाएँ.. लिहाजा व्यावसायिक पंजे की गिरफ्त में... एक सामान खरीदा.. तो दूसरा हावी हो गया.. दूसरा खरीदा तो तीसरा.. .अन्तत: कर्ज के फंदे ने भावनाओं को सोख लिया...चलो छुट्टी पाओ इन बेकार के बूढ़े-बूढ़ियों से... बेटा खाँसी-जुखाम के नाम पर बूढ़े को अस्पताल लाया और भर्ती करवा कर चुपचाप खिसक गये। कुछ दिनों तक तो इन बूढ़ों के पास कुछ पैसा लत्ता था, पर धीरे-धीरे वह भी खत्म हो गया.. या फिर कोई उठाईगीर ले भागे. .. अन्तत: केवल आधी डबलरोटी के सहारे ये नंगे-धड़गे पड़े रहे। डाक्टरों की इतनी ही कृपा कम है कि उन्होंने इन्हें भगाया नहीं। हाँ इतना जरूर किया कि बेड की जरूरत पड़ी तो इन्हें बरामदे में पटक दिया गया। ये लोग इतने अशक्त कि उठ भी नहीं सकते। सुबह जमादार वार्ड की सफाई करने आता तो इन पर पानी का फौव्वारा छोड़ देता.. बस यही इनका स्नान...

अब यक्ष प्रश्न यह है कि क्या इस कटु सच्चाई का कारण शिक्षा है?... सोचे क्या ऐसा हो सकता है?.

शायद हर कोई यही कहेगा कि नहीं शिक्षा इसकी उत्तरदायी नहीं है। और है भी नहीं...सही शिक्षा तो ऐसा सिखा नहीं सकती। फिर कौन है इस पर्दे के भीतर?

शिक्षा का दुरुपयोग? धन की बढ़ती हुई लालसा? पारिवारिक संकुचन? सामाजिक उत्तरदायित्व की कमी? मानवता का ह्रास?

शायद ये सभी। **एक प्रश्न और... कला का काम मानवीय सम्वेदना को जगाना होता है किन्तु यहाँ उसका दूसरा रूप दिखाई दिया। कला व्यावसायिकता में इतनी फंस गई कि उपचार की जगह उत्तेजना को लक्ष्य मानने लगी।**

उन बूढ़ों का क्या हुआ पता नहीं... शायद खदेड़ दिए गए.... किन्तु समाज में सैंकड़ों बूढ़े इस तरह की जिन्दगी जी रहे हैं... उनके बारे में सोचें तो शायद समाजशास्त्र के अनेक सवाल हल हो जाए... कला में मानवता की छोंक लग जाए....आदमी की आदमीयत बच जाए....

आइए, हम इस दिशा में सोचें।

सम्पर्क: के पी 9.624, वैजयन्त,
चेट्टिकुन्नु मेडिकल कालेज
तिरुवनन्तपुरम-694011

कलाकार को शादी नहीं करनी चाहिए –आशा भोंसले

आशा भोंसले का नाम किसी पहचान का मोहताज नहीं है। हाल ही में उन्हें **फिल्मफेयर** लाइफ टाइम अचीवमेंट पुरस्कार दिया गया है। प्रस्तुत है उनसे की गई बातचीतः

क्या आप इस बात में यकीन करती हैं कि गायक जन्मजात होते हैं, बनाए नहीं जाते?

मैं तो यही कहूँगी कि गायक जन्मजात ही होते हैं। दीदी(लता मंगेशकर) और मैंने गायन की प्रतिभा अपने पिता से विरासत में पाई है। हमारे पिता दीनानाथ मंगेशकर तो साधारण संगीतज्ञ थे। वैसे, कुछ लोग (जैसे संगीतकार शंकर) कहते थे कि गायक बनाया जा सकता है। वह शारदा को संगीत में बी ए कहते थे, मतलब कि वह बहुत अच्छी गायिका है। ठीक है, लेकिन मैं यह कहूंगी कि आप मेरे पास कोई ऐसा संगीतज्ञ ले आइए जो गीत में एम० ए० हो और लता या रफी के बराबर हो। मराठी स्कूल से सिर्फ चौथी पास हूँ और मेरे पास अब तीन तीन मानद डिग्रियाँ हैं। आपके सवाल का जवाब यही है कि इस तरह का जन्मजात ही होता है और अपनी जिंदगी में इससे ज्यादा मैं क्या चाह सकती हूँ।

आपका पहला रिकार्ड हुआ गाना कौन सा था?

1943 में एक मराठी गाना **चाला चाला माजा नावा बाला**। लेकिन मेरा पहला हिट गाना **गोरे हाथों में** फिल्म **परिणिता** का था। और **नया दौर** के गानों ने मेरे लिए सही मायनों में सफलता के दरवाजे खोले थे।

आपको आज तक अपना सबसे कठिन गाना कौन सा लगता है?

साकिया आज मुझे, साहिब बीबी और गुलाम फिल्म का, **मुझे जीने दो** का **मांग में भर कर रंग सभी,** ताजमहल की कव्वाली **दइय्या ये कहां आ फंसी** और **कारवां** का **ओ मेरी जान** आदि मुश्किल गाने थे। कैबरे नृत्य के गाने भी कभी आसान नहीं रहे। हां, एक बात और है। वह यह कि मैंने अश्लील शब्दों वाले गाने कभी नहीं गाए।

आप अपनी जिंदगी का सबसे खुशी भरा दिन कौन सा मानती हैं।

1949 में जब मेरा बेटा हेमंत पैदा हुआ था। लेकिन पांच साल की उम्र में ही उसे दून स्कूल में पढ़ने के लिए भेज दिया गया था, वह फैसला काफी दुखद था।

आपको किस बात पर गुस्सा आता है?

अब तो गुस्सा सब खत्म हो चुका है। लेकिन पहले कभी जब भी कहीं अन्याय देखती थी, मुझे गुस्सा आ जाता था। लेकिन अब मैं नहीं समझती कि ज्यादा मुंह फट होने की जरूरत है। वैसे, जिंदगी पूरे 20 रील की एक ऐसी फिल्म है जिसमें खुशी भी है और गम भी।

जिंदगी का सबसे दुखद दौर कब था?

जिंदगी में कई दौर ऐसे आए। कहां से मैं शुरू करूं पर अब सब ठीक ठाक है। लेकिन 1960 में कभी वह दिन भी आया था जब मैं बदन पर पहने कपड़ों में ही घर से बाहर थी। कहां जाना है, क्या करना है कुछ पता नहीं था। अब मैं अपने पैरों पर खड़ी होने में सफल हुई हूँ। मैंने अपने तीनों बच्चों को ठीक से पाला है।

क्या नंबर एक या नंबर दो गायिका की उपाधि की कभी आपको चिंता हुई है?

आप कैसे कह सकते हैं कि सूरज या चांद में से कौन नंबर एक है? सबकी अपनी-अपनी अहमियत है। कौन बड़ा है-टाटा या बिड़ला? लोग अक्सर मेरे और मेरी दीदी की तुलना करते हैं। मैं कहती हूँ ऐसा क्यों? मैं और वह एक दूसरे से तुलना के लायक ही नहीं हैं।

लता और आशा की आवाज में क्या अंतर है?

मेरे ख्याल से दीदी की आवाज ज्यादा पतली, ज्यादा सुरीली है। मेरी थोड़ी भारी है, पर हम दोनों ही अपनी आवाज को काफी ऊंचाई पर भी ले जा सकती हैं। लेकिन दीदी की आवाज बहुत ज्यादा प्यारी और अच्छी है। हां, कुछ लोगों को मेरी आवाज भी पसंद आती है। अगर मैं दीदी की नकल करती तो शायद इतनी सफलता न पा सकती थी।

दीदी **नूरजहां** की गायन शैली को बहुत पसंद करती हैं, लेकिन उन्होंने भी अपनी एक गायन शैली विकसित की है। 72 की होके भी दीदी जिस तरह से गा रही हैं वह अद्‌भुत है। मैं 67 साल की हूँ।

क्या लता जी को शादी नहीं करनी चाहिए थी?

नहीं की तो ठीक ही किया। वैसे, इस बारे में न तो मैंने उनके सामने कुछ कहा न पीठ पीछे कहूंगी। लेकिन **मैं इस बात में यकीन करती हूँ कि एक कलाकार को शादी नहीं करनी चाहिए, क्योंकि अगर बीबी ज्यादा मशहूर हुई तो पति को हीन भावना जकड़ लेती है। इससे जिंदगी बिखर सी जाती है।**

आर० डी० बर्मन से आपने दूसरी शादी क्यों की?

हमारी शादी का आधार संगीत था।

सरकार से कोई सम्मान न मिलने पर आप क्या कहेंगी?

मुझसे क्यों पूछते हैं। सरकार से पूछिए उसने मुझे क्यों सम्मानित नहीं किया? मैंने **उमराव जान** और **इजाजत** के लिए सर्वश्रेष्ठ गायिका का राष्ट्रीय पुरस्कार दो बार जीता। आठ बार सर्वश्रेष्ठ गायिका के लिए फिल्म फेयर पुरस्कार मुझे मिल चुका है।

लेकिन **पद्मश्री** तक सरकार ने मुझे नहीं दिया। शायद मेरे लिए सरकार से पैरवी करने वाला कोई नहीं था।

दीदी के पड़ोस में ही रहने में खुश हैं?

एकदम। अपना तो अपना ही होता है न। अब जो कुछ मेरे पास है उससे मैं संतुष्ट हूँ। जो कुछ मिला है ईश्वर की मेहरबानी है। उसने मुझे खूब सुख भी दिया है, कुछ दुख भी। उसी ने मुझे बनाया है। अब ईश्वर से और क्या मांगू?

तालिवान में बुद्धा पर बूलेट
कठमुल्लापन की पराकाष्ठा

❑ शशि रंजन

कट्टरवादी विचारधारा के लोग किसी भी धर्म या सम्प्रदाय के हों वे उसे नुकसान ही पहुँचाते हैं। अफगानिस्तान में सत्तारूढ़ कट्टरपंथी तालिवान को आखिर क्या मिला वहाँ के मध्य बामियान प्रांत स्थित विश्व शांति के प्रतीक बुद्ध की दो विशाल प्रतिमाओं को तोड़कर? कहा जाता है कि कट्टर पंथियों ने बामियान में पर्वत चोटी को तराश कर बनाई गई बुद्ध की 175 फुट और 120 फुट ऊँची प्रतिमाओं को भारी मात्रा में विस्फोटक का इस्तेमाल कर उड़ा दिया। ये मूर्तियां लगभग दो हजार वर्ष पुरानी हैं। क्या बिगाड़ा था मूर्तियों ने उनका? यदि उन्हें मूर्तियां नहीं चाहिए थी तो उन्हें जिन्हें चाहिए थीं, उन देशों को दे देनी चाहिए थी। आश्चर्य की बात तो यह है कि तालिबान के विदेश मंत्री ने कहा कि मूर्तियां तोड़ने के तालिबान के सुप्रीम कमांडर मुल्ला मोहम्मद उमर के फतवे को बदला नहीं जाएगा और देश में कोई मूर्ति नहीं छोड़ी जाएगी। यह उनकी महामूर्खता और कठमुल्लापन की पराकाष्ठा नहीं तो और क्या है? उनका यह कहना कि ये प्रतिमाएं इस्लाम के खिलाफ हैं, हास्यास्पद लगता है।

विश्व की सबसे ऊँची बुद्ध की प्रतिमा के ऊपरी एवं निचले हिस्से को तोड़े जाने को लेकर पाकिस्तान सहित विश्व के प्राय: सभी खासकर इस्लामिक देशों ने न केवल विरोध प्रकट किए हैं बल्कि मिश्र, जापान, ईरान और यूनान ने इस कुकृत्य को रोकने के लिए तालिबान पर दबाव डालने का फैसला भी किया है। भारत में कई मुस्लिम संगठनों ने भी इस घृणित कार्य का विरोध किया है।

ऐसा लगता है कि पाकिस्तान और अफगानिस्तान उन गैर अरब इस्लामी देशों में आते हैं जिनकी अपनी कोई अलग पौराणिक अवधारणा नहीं है, सिवाय इस्लाम की अरबी-यहूदी अवधारणा के। अगर ऐसा होता तो शायद उनमें अलग सांस्कृतिक पहचान के कुछ-एक चिन्ह तो प्रकट होते ही। स्पष्ट है कि किसी समाज की अपनी एक अलग सांस्कृतिक अवधारणा तभी सामने आती है जब वह अपनी बनाई हुई परम्पराओं, रीति-रिवाजों का पालन करे। वास्तविकता यह है कि पाकिस्तान और अफगानिस्तान

के कट्टरपंथी इस्लामी भय के कारण धार्मिक हैं। जरूरी नहीं कि वे मन से धार्मिक ही हों। अपने धर्म पर विश्वास करने वाले लोग दूसरे धर्म का भी आदर और सम्मान करते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि तालिबान के कट्टरवादियों का अपना एक अलग एजेन्डा है जिसका पालन वे कर रहे हैं जबकि पूरे अफगानिस्तान के लोग भूखे मर रहे हैं। जिन्होंने तालिबान को बनाया उनके नियंत्रण के बाहर दिखता है तालिबान। 1994 में पाकिस्तान द्वारा तालिबानों को विधि-व्यवस्था के नियंत्रण हेतु अफगानिस्तान भेजा गया था। 1998 तक उनलोगों ने 90 प्रतिशत अफगानिस्तान को नियंत्रित किया। यही वजह है कि तालिबान अब पाकिस्तानी सेना या और किसी अन्य के नियंत्रण के बिल्कुल बाहर हो चुका है।

तालिबान सराकार ने अपने कारनामों से यह साबित कर दिया है कि किसी शक्ति किसी संगठन के समक्ष वे झुकने को तैयार नही है सो तालिबान सरकार को जो करना था वह कर चूकी, अब देखना यह है कि संयुक्त राष्ट्रसंघ की ओर से या यूरोप, अमरीका, चीन, जापान सारे बौद्ध देश और भारत उन्हें क्या दंड देते है। विनाश का यह प्रारम्भ भविष्य की ओर इशारा कर रहा है। यदि इसे न रोका गया तो परिणाम भंयकर होगे। पाकिस्तान, सऊदी अरब और यू.ए.ई जो आतंकवादियों का भरण-पोषण करते है उन्हें सख्ती से रोका जाऐगा। इन्हीं देशों ने तालिबान सरकार को मान्यता देकर उनका दु:साहस बढ़ाया है खैर जो हो विश्वव्यापी निन्दा भर्त्सना के बाद अफगानिस्तान में सत्तारूढ़ तालिवान के सर्वोच्च नेता मुल्ला मोहम्मद उमर ने अब वहां बची प्रतिमाओं की रक्षा करने का वायदा दिया है। दरअसल तालिबान में रहने के लिए रचनात्मक काम कुछ है ही नही। मूर्तियों को तोड़ा जाना उसकी मानसिक हताशा का परिणाम है। तालिबान में दुनिया के करोड़ों मुसलमानों के चेहरों पर अपनी शैतानियत की कालिख पोत दी है, जिसे मिटाना आसान नहीं होगा। ब्रर्बर, क्रुर, वहशी और धर्मान्धाता के शिखर लुटेरों ने सदियों से धरती के शांतिमय स्थलों को रौंदा, लूटा तहस-नहस किया इसके बाबजूद जीवन के किसी क्षेत्र में तरक्की नहीं कर पाए।

विचार कार्यालय, नई दिल्ली से

भारत के बैडमिन्टन इतिहास में एक नया अध्याय

गोपीचन्द ऑल इंग्लैंड बैडमिन्टन चैंपियन

भारत के पुलेला गोपीचन्द ने विश्व की सर्वाधिक प्रतिष्ठित ऑल इंग्लैंड बैडमिन्टन चैंपियनशिप का खिताब जीतकर भारतीय खेल इतिहास में एक नया अध्याय जोड़ा। 27 वर्षीय दसवीं वरीयता प्राप्त गोपीचन्द ने टूर्नामेंट में ओलम्पिक और विश्व चैंपियनों को हराने के बाद फाइनल में अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करते हुए बारहवीं वरीयता प्राप्त चीन के चेन हांग को लगातार गेमों में 15-12, 15-6 से पराजित किया। इससे पूर्व भारत के पादुकोण ने 1980 में यह खिताब जीता था। 21 वर्षों बाद बैडमिन्टन का यह प्रतिष्ठित खिताब गोपीचन्द ने जीतकर भारत की झोली में डाल दिया। खेल जगत में भारत को सचमुच गोपीचन्द ने गौरव प्रदान किया। 10 हजार डॉलर की इनामी राशि जीतने वाले **गोपीचन्द** को बैडमिन्टन एशोसियेशन ऑफ इन्डिया की ओर से इनाम के रूप में दो लाख रुपये तथा अगले चार वर्षों तक प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए गोपीचन्द को असीमित विदेश यात्राओं और प्रशिक्षण खर्च वहन करने की व्यवस्था की गई है। बैंगलूर स्थित प्रकाश पादुकोण बैडमिन्टन अकादमी में प्रशिक्षण प्राप्त करनेवाले गोपीचन्द पिछले दो वर्षों से स्वीडन में अभ्यास कर रहे थे। 1999 में हुए थाइलैंड ओपेन टूर्नामेन्ट में हांग ने गोपीचन्द को पराजित किया था। गोपीचन्द का कहना है कि उनके जीवन में बैडमिन्टन और संगीत के अलावा कुछ भी नहीं है। विचार परिवार की ओर से उन्हें हार्दिक बधाई।

पहली हैट्रिक बनाकर हरभजन ने इतिहास रचा

टेस्ट में हैट्रिक बनाने वाला पहला भारतीय

पंजाब के दाएं हाथ के ऑफ स्पिनर **हरभजन सिंह** ने आस्ट्रेलिया के विरुद्ध कोलकाता में खेले गए दूसरे क्रिकेट टेस्ट मैच में भारतीय टेस्ट क्रिकेट के इतिहास में पहली बार हैट्रिक बनाने का श्रेय हासिल कर इतिहास रचा। हरभजन ने आस्ट्रेलिया के धुरंधर बल्लेबाजों रिकि पोंटिंग, एडम गिलक्रिस्ट और शेन वार्न को लगातार तीन गेंदों पर आउट कर एक नया इतिहास बनाया। जालन्धर में जन्मे 20 वर्षीय **हरभजन सिंह** ने भारतीय टेस्ट क्रिकेट इतिहास के 69 वर्षों में अब तक खेले गए 338 मैचों में पहली बार किसी गेंदबाज ने **हैट्रिक** बनाने का कीर्तिमान स्थापित किया है और इस प्रकार वे विश्व क्रिकेट में हैट्रिक बनानेवाले 26 वें गेंदबाज बन गए हैं। हलांकि अब तक टेस्ट क्रिकेट में कुल 29 वीं बार हैट्रिक बनी है जिसमें से भारत की जमीन पर पहली बार किसी गेंदबाज ने यह उपलब्धि हासिल की है। हैट्रिक बनाने वाले एशिया के चौथे स्थान पर हरभजन आ गये हैं। इनके पूर्व पाकिस्तान के **वसीम अकरम** और **अब्दुर रजक** तथा श्रीलंका के **नुवान जोएसा** टेस्ट क्रिकेट में हैट्रिक बनाने वाले अन्य एशियाई गेंदबाज हैं। हरभजन ने कहा कि कठिन परिश्रम करने पर फल की प्राप्ति होती है और उन्हें अपनी उपलब्धि पर गर्व है।

-विचार खेल संवाददाता, कोलकाता से

क्रिकेट के युग-पुरुष ब्रेडमैन का महाप्रयाण

कृष्ण मुरारी सिन्हा, गाजियाबाद से

क्रिकेट के क्षेत्र में यह निर्विवाद है कि आस्ट्रेलिया के सर डोनाल्ड ब्रैडमैन न केवल इस खेल के महानतम खिलाड़ी रहे हैं अपितु खेलों की पूरी दुनिया में सर्वाधिक मान पानेवाले गिने-चुने महानायकों में भी वे बेजोड़ कहे जा सकते हैं। खेल की ऐसी बड़ी हस्ती के अचानक दुनिया से चले जाने की खबर से न केवल आस्ट्रेलिया के पूरे जीवन में एक शोक की लहर फैल गई बल्कि दुनिया के सभी क्रिकेट प्रेमी देशों के खेल प्रेमी लोगों में भी एक मातम-सा छा गया। आस्ट्रेलिया के दूरदर्शन और आकाशवाणी ने तो नियमित प्रसारण रोक कर अपने इस महान सपूत के अद्वितीय कारनामों और अपने कीर्तिमानों की यशगाथा प्रसारित करनी शुरू कर दी। जी हाँ, ब्रैडमैन की 52 टेस्ट मैचों में 6996 रन तथा 99.94 की औसत ऐसा कारनामा है जिसे पार कर पाना तो दूर, अभी उसके मीलों समीप भी कोई नहीं पहुँच पाया है। सचिन तेन्दुलकर तथा ब्रायन लारा, जिसे ब्रैडमैन ने श्रेष्ठ बल्लेबाज माना है, वे भी औसत में अभी उनसे कोसों दूर हैं। जहाँ तक प्रथम श्रेणी के मैचों का सवाल है 234 मैचों में 28067 रनों का अम्बार जुटाना, 117 शतक लगाना एक पारी में 453(अविजित) का सर्वोच्च स्कोर बनाना तथा 95.14 रन की औसत पाना उसी ब्रैडमन के बूते की बात है, कहा नहीं जा सकता कि कोई इसे छू भी पाएगा या नहीं।

क्रिकेट खेल के ऐसे महानायक का 92 वर्ष की आयु में पिछले फरवरी के अन्तिम सप्ताह में हुए महाप्रयाण से पूरी दुनिया के खेलप्रेमियों का मर्माहत होना स्वाभाविक है। ब्रैडमैन यों तो अपनी पत्नी के निधन के बाद टूट से गए थे, पर अन्तिम समय में वे निमोनिया से पीड़ित थे। उनके देहावसान पर आस्ट्रेलिया के प्रधान मंत्री **जॉन हावर्ड** ने उन्हें आस्ट्रेलिया का गौरव और पूरी शताब्दी का महानतम नायक कहकर अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। सादगी पसन्द ब्रैडमैन ने अपनी अंत्येष्टि भी सादगी से किए जाने की इच्छा जताई।

क्रिकेट के इस युग पुरुष को **विचार दृष्टि** परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि।

रास्ता बताने वाले

❑ अलका पाठक

रास्ते हर गांव हर शहर में होते हैं। रास्ता दिखाने और बताने के रास्ते हर शहर में अलग होते हैं। दिल्ली में लोग रास्ता तब भी बताते हैं जबकि वे जानते नहीं हैं। मुंबई में न जानने वाले गर्दन हिला देते हैं। चेन्नई वाले थोड़ा-सा बता कर कहते हैं कि आगे पूछ लेना। कोलकाता वाले बताने से पहले सोचते हैं कि बताएं कि न बताएं।

शहर छोटा हो तो बताने वाले संग चल लेते हैं कहीं मथुरा या कुरुक्षेत्र जैसी कृष्ण नगरी हो तो बताने वाला अधिकारपूर्वक दरवाजा खोल गाड़ी में बैठ जाता है। रास्ते चलतों को बताता चलता है कि अभी आया, इन्हें जरा फलां के यहां छोड़ आऊं। अगर फलां इंसान है तो उसके घर-द्वार की सूचना और अगर संस्थान है तो उसकी यशगाथा और व्याजस्तुति रास्ते में ही प्राप्त हो जाती है। अगर स्थान गोकुल-महावन है तो बताने वाला रास्ता बता कर लौटता नहीं है, संग ही बैठ जाता है, कुर्सी-मूढ़ा डालने में मदद करता है। अगर रास्ता शहर की बजाय गांव में पूछा जाए तो बताने वाला एकाध जन नहीं होगा। बच्चों का एक गोल पीछे हो लेगा। जब तक वहां पहुंचा जाए तब तक गोल बढ़ता रहेगा। रास्ता बताने का अंदाज यों है कि आप जो गांव में पधारे सो पूरे गांव के मेहमान हो, हमारे भी हो।

रास्ते बताने के रास्ते अलग हैं, रास्ता पूछने के रास्ते भी उतने ही अलग हैं। किसी मुहल्ले की संकरी गली में रास्ता पूछो कि 'फलां मकान नंबर किधर होगा?' 'किसके यहां जाना है?' 'जी, यह नंबर किधर?' 'कहां से आए हैं?'

अगर वे संतुष्ट हो जाएं तो रास्ता बताएं, न हो तो गर्दन झटक दें कि हमें नहीं पता। एक बार दिल्ली की एक संकरी गली के नुक्कड़ पर बैठे एक यक्ष के ऐसे एक भी सवाल का उत्तर न देकर गली के तीन चक्कर काटना पसंद किया। यक्ष ने तीन बार पूछा कि आखिर जाना कहां है? मुझे उस यक्ष को उस बालिका का नाम बताना न जंचा। बालिका के पिता का नाम मुझे ज्ञात न था। याददाश्त पर जोर डाल कर पिता के महकमे का नाम बताया। सुनते ही उन्होंने कन्या का नाम पुकारा। वह सामने वाले मकान से ही निकल आई।

'मैंने आपको रास्ता नहीं बताया था!'-अस्वीकृति में दो नन्हें-नन्हें हाथ हिले। वे एक चार या पांच साल के बच्चे के हाथ थे। बच्चा गरीब, बहुत गरीब। मंगलवार को हनुमान मंदिर के आगे लगे बच्चों के जमघट में वह भी था। प्रसाद चढ़ा कर लौटते लोग प्रसाद बांटते हैं। दो या तीन बूंदी को हाथ पसारे खड़े लोगों में बच्चे अधिक होते हैं। यहां भी थे। मंदिर प्रसिद्ध न था। छोटा था। उस छोटे से मंदिर में हनुमानजी की प्रतिमा भी छोटी। प्राय: मंगलवार को छोटी-मोटी दुकान मंदिर के बाहर ही होती है। यहां न थी। शायद इधर-उधर देखने को ताड़ कर दो छोटे बच्चे बोले-'वहां से लीजिए।' छह-सात दुकानों के बाद ही दुकान थी-हलवाई की। आगे-आगे बच्चे भागे। वे स्वयं नियुक्त गाइड थे। बूंदी के दो-तीन दानों की आशा उन्हें वहां खींच ले गई थी। खरीदते ही हाथ फैले-'लाइए'। 'क्या?' 'परशाद।' 'अभी मंदिर में चढ़ा तो लें।'

बची हुई रेजगारी हाथ में थी। देखा-चार रुपए। सामने बच्चे थे तीन। पहले के हाथ में एक रुपए का सिक्का रखा। बच्चा गरीब था। भिखारी न था। उसने रुपया वापस करने की कोशिश की-'परशाद चाहिए।' मैंने रुपया देने को सही सिद्ध किया-'रास्ता बताया था न, ले लो।' अब यह रुपया भीख न रहा। मेहनताना हो गया। तीनों बच्चों ने स्वीकार कर लिया। चौथे ने लेने से पहले ही मना किया-'मैंने आपको रास्ता नहीं बताया था।' मैं शायद पैसे देने के अहंकार से लदी-फंदी थी। उस गरीब ने वह रुपया ठीकरा-सा फेर दिया था। उसे यह रास्ता बताने का मेहनताना भी स्वीकार न था।

मुझे रास्ता बताने का मेहनताना मिला था। मेरे वेतन के अतिरिक्त, इस रास्ता बताने को पढ़े-लिखे लोग 'कंसलटैंसी' कहते हैं। वेतन के अतिरिक्त मिले इस पैसे को मैंने सिर झुका कर स्वीकार किया था। उसी में भगवान का भी भाग निकलना चाहिए, सोच कर मंदिर पहुंची थी। रास्ता बताना काम है। काम को वेतन है। वह अपने को ईमानदार समझने और घोषित करने वालों द्वारा खोजा गया और स्वीकृत अतिरिक्त आय का साधन है जिसे कोई 'ऊपर की आमदनी' नहीं कहता। इसके बड़े सुंदर नाम हैं-ऑनरेरियम, रिसोर्स पर्सन फी, सिटिंग फी, कंसल्टेशन फी। जो जुगाड़ ले सो काबिल या जो काबिल सो जुगाड़ ले। वह मुझे आईना दिखा रहा था-पैसा वह अस्वीकार कर चुका था-'मैंने आपको रास्ता नहीं दिखाया था।' मैंने उसके हाथ पर पांच का सिक्का रखा-'रास्ता तो तुमने ही दिखाया।' वह इतना छोटा, इतना गरीब है कि यह आभार कभी पढ़ नहीं सकता। वह नहीं जानता कि रास्ते ऐसे भी दिखाए जाते हैं।

साभार, जनसत्ता, कोलकाता

मुझे सब कुछ पता है

हिंदी फिल्मों के उभरते युवा नृत्य निर्देशक रौनक सदाना का मानना है कि वर्तमान में फिल्मों में समूह नृत्य अपनी जड़े जमा चुका है। और भविष्य में भी इसी का वर्चस्व रहेगा। भोपाल में जन्मे और यहीं पले बढ़े रौनक ने प्रकाश झा की चर्चित फिल्म राहुल में बच्चों पर फिल्मायें गये अंग्रेजी गीत 'ए सांग टू सिंग' के साथ वालीवुड में अपने कैरियर की शुरूआत की है। रोशन इस बात से सहमत नहीं है कि वर्तमान में हिंदी फिल्मों में नृत्य एक बेईमानी उछल कूद में बदल गया है। और उसकी शक्ल भद्दी और अश्लील हो चुकी हैं रो

शन का मानना है कि फिल्म 'कहो ना प्यार है' में अभिनेता ऋतिक रोशन पर फिल्मायें गये नृत्यों के पीछे युवा वर्ग की दीवानगी से इस बात को समझा जा सकता है कि अच्छे नृत्य आज भी लोकप्रिय हैं। रौनक का कहना है कि वक्त के बदलाव के साथ उसका असर नृत्य पर भी हुआ है। लेकिन किसी चीज की बुनियाद नहीं बदली है। आज भी हिंन्दी फिल्मों में वही नृत्य सीक्वेस पंसद किये जाते हैं जिनके पीछे गहरा अभ्यास और कड़ी मेहनत होती है। रौनक कई विज्ञापन फिल्मों और कुछ निजी एलबमों के लिये भी नृत्य निर्देशन की भूमिका निभा चुके हैं। जिनमें 'दलेर मेंहदी', और सुनीता राव जैसे मशहूर पाप गायक भी शामिल हैं।

राहुल फिल्म में बच्चों के साथ नृत्य सीक्वेंस के सम्बन्धा में उनकी राय है कि इस फिल्म के निर्देशक प्रकाश झा एक बेहद कल्पना शील निर्देशक हैं उन्होंने बेहद खूब सूरती के साथ इस फिल्म में नृत्य सिक्वेंस डाला है। उनका मानना है कि बच्चे जल्दी सीखने में माहिर होते हैं। और उन्हें बच्चों के साथ काम करने में बेहद मजा आया। उन्होंने कहा कि इस दौरान हमारी कोशिश यही रही कि हम बच्चों को बार–बार रीटेक लेने के बजाय उनकी स्वाभाविक नृत्य गति विधियों को ही कैमरे में कैद करें। उन्होंने कहा कि उन अभिनेता और अभिनेत्रियों के साथ काम करने का आनन्द ही कुछ और होता है जो नृत्य के पारंगत होते है। गोविन्दा, ऋतिक रोशन, और उर्मिला मातोंडकर नृत्य के दौरान अपने सुझाव भी नृत्य निर्देशक के सामने रखते है। 'प्रकाश झा' द्वारा निर्देशित, टिप्स कैसेट की प्रस्तुति वाले इस एलबम के गीतकार, आनन्द बख्शी और संगीत कार 'अनूमलिक हैं।

इस एलबम में कुल नौ गीत हैं हर गीत बढ़िया गायिकी और शायरी का नमूना है। पहला गीत 'छेड़ न मुझको मेरे महबूब जाने दे मुझे, झील सी आखें हैं तेरी, डूब जाने दे मुझे (कविता कृष्ण मूर्ति, हरिहरन,) के युगल स्वरों में है जो कि बड़ी ही शिद्वत से गाया गया है। चलती है पुरवाई चल हम भी चलते हैं अल्का याज्ञिक और महालक्ष्मी की आवाज में है।

जो कि किसी भी एंगिल से कम नहीं है। आ झुमके वाली, ओ ढुमके वाली, गालों पे लगा के लाली, कुछ भी कर ले सौतन, मैं तो अपनी पिया की जोगन, (सुनिधि चौहान और ऋचा शर्मा की आवाजों में है।

जैसा कि गीत के बोल से ही जाहिर है यह एक विश्वास से भरा चुटीला गीत है। धुन व गायकी भी काफी हद तक पसंद की जायेगी। तू मुझे कैसे भूल जाता है (अलका याज्ञिक) की आवाज के जादू से लबरेज है। ऐ काश ऐसा होता मैं पैदा न होता (उस्ताद सुल्तान खान) तथा तू ही तो है मेरा सारा जहां जैसे जमीं पर है ए आसंमा, (रूप कुमार राथौड दीपाली सोमैय्या) भी बढ़िया गायकी का नमूना है।

प्रकाश झा निर्देशित तथा टिप्स की पेशकश इस फिल्म के संगीत एलबम के गीत आनन्द बक्शी ने तथा संगीत अनु मलिक ने तैयार किया है। एलबम में कुल नौ गीत हैं। हरेक गीत बढ़िया गायिकी और शायिरी का नमूना है।

'आ झुमके वाली ओ ढुमके वाली, गालों पे लगा ले लाली, कुछ भी कर ले सौतन, मैं तो अपने पिया की जोगन.....' (सुनिधि चौहान, ऋचा शर्मा) जैसा कि गीत के बोलों से जाहिर है एक विश्वासभरा चुटीला गीत है। धुन व गायिकी भी काफी हद तक पंसद की जायेगी।

'तू मुझे कैसे भूल जाता है....' (अलका याज्ञिक) एक गम्भीर किस्म का गीत है। 'ऐ काश ऐसा होता, मैं पैदा न होता.....' (उस्ताद सुल्तान खान) तथा 'तू ही तो है मेरा सारा जहां, जैसे जमीं पर है यह आसंमा....' (रूप कुमार राठौड़, दीपाली सोमैय्या) भी बढ़िया गायिकी के नमूने हैं। गिव मी ए सांग टू सिंग. ...' एवम् 'तू मुझे कैसे भूल जाता है....' (सोनाली वाजपेयी) भी ठीक ठाक हैं गीत हैं।

समीक्षक सुधांशु कुमार

SAMANTA BROTHERS
Shambhu Nath Samanta
Raj Kumar Samanta
GOLD SMITH
A gem of Collection and Manufacturers of:
All Kinds of Set Exclusive Diamond, Gold & Silver Jewellery
Specialised in Chains
25/3876, Regerpura, karol Bagh, New Delhi-5, Tel.:5842778,5825210

पटना हड्डी एवं रीढ़ रोग अस्पताल

एच/3, डाक्टर्स कॉलोनी, कंकड़बाग, पटना-20 (बिहार)

राजेन्द्र नगर उपरी पुल के सटे पूरब

- रीढ़ के सभी प्रकार के रोगों का सम्भव इलाज।
- हड्डी एवं जोड़ के सभी प्रकार के रोगों का अत्याधुनिक इलाज।
- अत्याधुनिक इमेज इंटेसिफायर एवं अन्य ऑटोमेटिक़ एवं पावर उपकरणों की सुविधा उपलब्ध।
- वातानुकूलित ऑपरेशन गृह की व्यवस्था।
- नर्सिंग एवं रहने की निम्नतम दर पर उत्तम व्यवस्था।

चिकित्सक : डॉ० विश्वेन्द्र कुमार सिन्हा

(M.S.FICS, Ph.D. Orth.)

हड्डी एवं रीढ़ रोग विशेषज्ञ

पटना मेडिकल कॉलेज अस्पताल, पटना (बिहार)

प्रेम त्रिकोण

ऐसे बदली दुश्मनी दोस्ती में :

इतिहास गवाह है कि किसी स्त्री के प्यार को लेकर कई बार राजाओं में झगड़ा हुआ है। और कहा यह भी जाता है कि इतिहास अपने

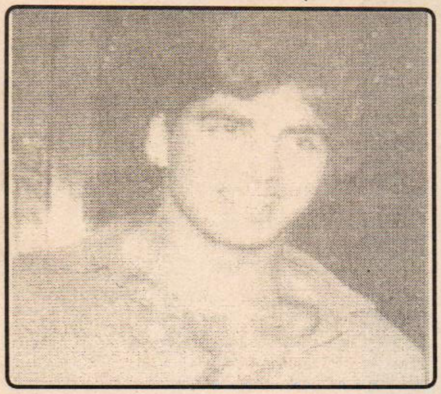

आपको को दोहराता है। पिछले दिनों हालीवुड के दो नामों ने भी एक नया इतिहास रच डाला यह सही है कि एक स्त्री के लिये दो पुरुष आपस में लड़ाई कर सकते हैं परन्तु किसी दूसरी स्त्री के प्यार के लिये वे इकट्ठा भी हो सकते हैं।

अब आप जानना चाहेंगे कि बालीवूड के ये दो हीरो हैं कौन, तो जनाब ये है अक्षय कुमार और सनी देओल जी। रवीना टन्डन को लेकर इन दोनों पंजाबी शेरों में झगड़ा हो गया था और फिर ये दोनों इकट्ठा भी हो गये। कैसे? यही अब हम आपको बताने चल रहे हैं। यह तो सभी जानते हैं कि सनी देओल ओर अक्षय कुमार दोनों गठीले जिस्म वाले खूबसूरत युवक हैं और लड़कियां इन पर खुद ब खुद शहद की मक्खियों की तरह गिरती रहती हैं। १५ साल पहले जब डिम्पल सनी की तरफ आकर्षित हुयी तो लोग कहने लगे कि कुछ दिनों बाद सनी इससे अलग हो जायेगा परन्तु आज तक किसी ने भी इस बात की चर्चा नहीं की यहां तक उस बात को भी कोई अलग नहीं कर सका। इस बीच सनी को घर वालों की इच्छा के अनुसार शादी करनी पड़ी लेकिन डिम्पल को लेकर उसके रिश्ते में कोई कमी नहीं आयी। डिम्पल को भी सनी के रूप में एक ऐसा प्रेमी मिल गया जिसमें वे सभी गुण हैं जो एक पुरूष में होने चाहिये। खास तौर से एक पुरूष मित्र में । इन दोनों का प्रेम लगभग डेढ़ दशक तक बरकरार रहा। बस एक बार बीच में थोड़ी सी गलतफहमी हो गयी थी जिसका कारण थी रवीना टन्डन। हुआ यह कि सनी देओल और रवीना टन्डन किसी फिल्म की शूटिंग के चक्कर में स्काट लैंड गये हुये थे वहां पर मस्त-मस्त रवीना टन्डन ने सनी पर डोरे डाले और सनी अपने आपको रोक नहीं सका। वह रवीना की तरफ खिंचता गया, उस वक्त दोनों इस बात को भूल गये थे कि यहां भारत में दोनों के ही अलग-अलग प्रेमी मौजूद हैं। और जब खबर यहां पहुंची तो यहां के दोनों प्रेमी बेचैन हो गये, यहां पर बेचैन होने वाले प्रेमी थे डिम्पल और अक्षय, एक तरफ डिम्पल बैचेन हो रही थी तो दूसरी तरफ अक्षय भी कमबेचैन नहीं थे।

अक्षय का रोमांस उन दिनों रवीना टन्डन से चल रहा था लेकिन जब उसने रवीना और सनी के अफेयर के बारे में सुना तो वह गुस्से में सीधा स्काट लैंड पहुंच गया। वहां उसने अपनी गर्लफ्रैन्ड रवीना को सनी की बाहों में बांहे डाले रंगे हांथो पकड़ा। आव देखा न ताव उसने रवीना को लताड़ना शुरू कर दिया तब सनी देवल से न रहा गया उसने भी अक्षय को बुरा भला कहा। दोनों में जब मामला बढ़ गया तो सुनने में आया कि अक्षय को सन्नी ने एक थप्पड़ जड़ दिया। उधार जब डिम्पल को इस बात का पता चला तो वह बहुत दुखी हुई। कुछ समय बाद जब सन्नी स्काटलैंड से वापस आया तो डिम्पल और उसके बीच भी कुछ कहा सुनी हुई होगी। अब यह लेखक तो वहां मौजूद था नहीं पर कहते हैं कि डिम्प्ल एक समझदार औरत थी और वह झगड़ों को समाप्त करके सुलह चाहती थी इसलिये उसने एक दिन अक्षय को अपने घर बुलवाया और उससे सारी राम कहानी सुनना चाहा डिम्पल के साथ उसकी बेटी ट्विंकल ने भी इस रामकहानी में हिस्सा लिया सारी रात इसके विषय में मंत्रणा चलती रही और ट्विंकल अक्षय के नजदीक आती चली गयी और वे एक-दूसरे को पसंद करने लगे। फिर समय के साथ-साथ कुछ दिनों बाद सनी और डिम्पल में सुलह हो गयी क्योंकि वे दोनों एक दूसरे के बिना रह नहीं सकते थे।

हालांकि रवीना के कारण सनी ने डिम्पल को आहत किया था लेकिन डिम्पल ने 'बीती ताहि विसार दे' के तहत सब कुछ भूल जाना ही दोनों के हित के लिये श्रेयस्कर समझा। जहां तक अक्षय का सवाल है वह रवीना को छोड़कर शिल्पा शेट्टी के साथ रोमांस करने लगा था लेकिन उनका यह रोमांस केवल दो साल तक ही टिक सका था जब फिल्म 'इन्टरनेशनल खिलाड़ी' बनी तो ट्विंकल और अक्षय दोनों फिर एक दूसरे के करीब आये

दोनों में प्रेम के अंकुर फूट पड़े, पुष्पित और पल्लवित भी हुये। जब अक्षय से ट्विंकल की शादी हो गयी तो सन्नी पिछली सारी बातें भूल गया। आखिर 'ट्विंकल उसकी प्रेमिका डिम्पल की बेटी जो थी। अब सन्नी और अक्षय दोनों इस तरह मिल गये है जैसे दोनों में कभी कोई झगड़ा ही न रहा हो।

विचार संवाददाता, मुम्बई से

त्रिमूर्ति ज्वेलर्स | त्रिमूर्ति अलंकार

बाईपास रोड, चास (बोकारो)
दूरभाष 65769, फैक्स 65123

त्रिमूर्ति पैलेस, (रूपक सिनेमा के पूरब)
बाकरगंज पटना 800004
दूरभाष–662837

आधुनिक आभूषण के निर्माता नए डिजाइन, शुद्ध सोने चाँदी के तथा
हीरे के गहनों का प्रमुख प्रतिष्ठान

परीक्षा प्रार्थनीय
सुरेश, राजीव एवं सुनील

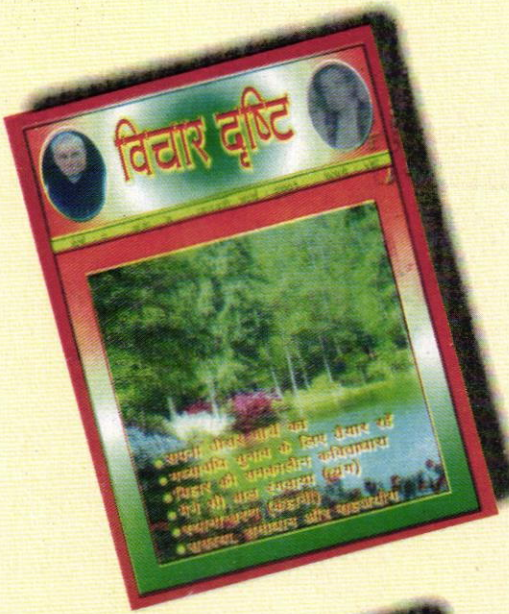
विचार दृष्टि

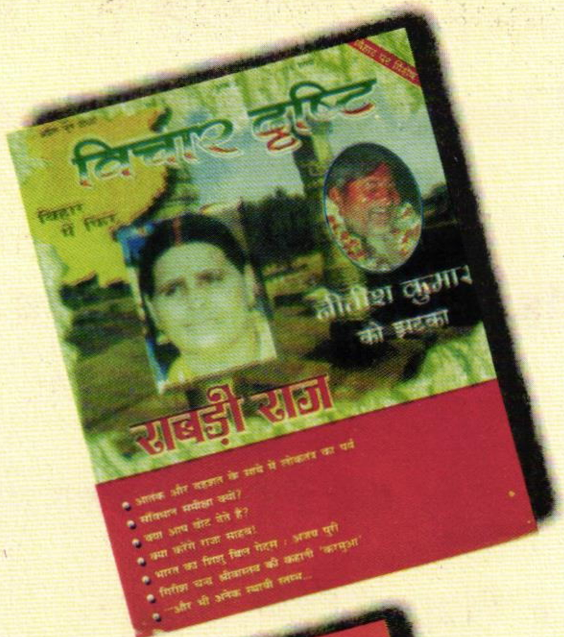
विचार दृष्टि
नीतीश कुमार
को झटका
राबड़ी राज

विचार दृष्टि
15 रुपये
वर्ष 2 अंक 5 अक्टूबर दिसम्बर, 2000

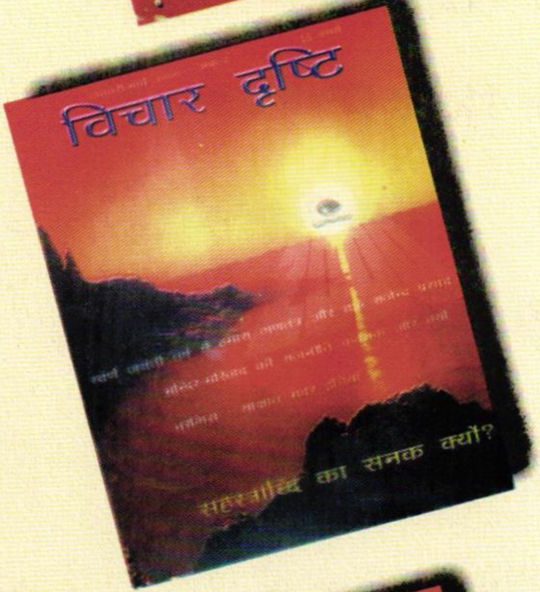
विचार दृष्टि
सहस्राब्दि का सनक क्यों?

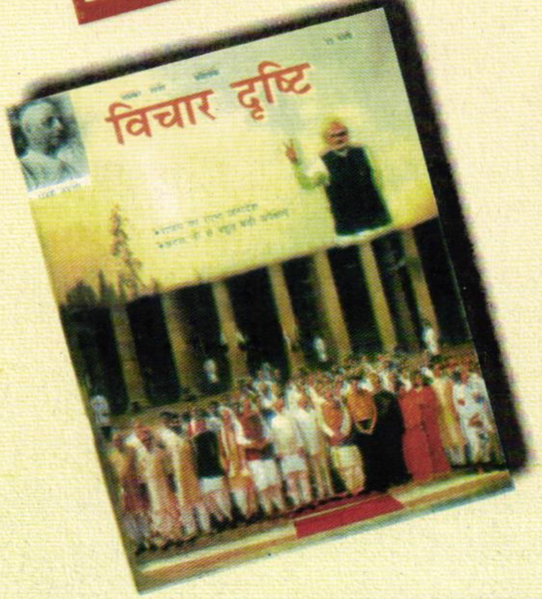
विचार दृष्टि

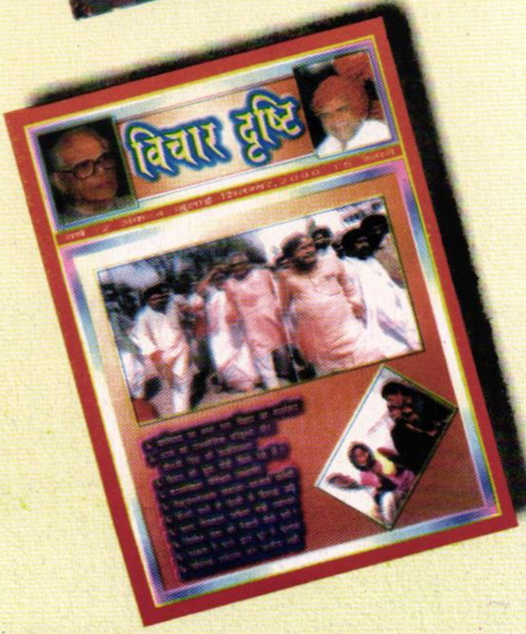
विचार दृष्टि

R.N.I.Regd.No:DEL HIN/1999/791

Soul and Vein of Electronic Existence

Distribution Products :

- Cabinets
- CD Rom Drives
- Floppy Disk Drives
- Hard Disk Drives
- Key Boards
- Multimedia Kits
- Zip Drives

intel. SONY®

iomega. MEDALIST SAMSUNG Challenge the limits BARRACUDA

ACER CREATIVE CHEETAH Seagate

KUMARTEK COMPUTERS

U-208, Shakarpur, Behind Bank of Baroda, Delhi-110 092
Ph.: 011-2230652 Fax-011-2225118, (Mob.) 9810229265
E-mail- shashibhushankumar@usa.net
sudhir-ranjan@usa.net

प्रकाशक, मुद्रक व स्वामी सिद्धेश्वर द्वारा ई–50, एफ. एफ. सी., झंडेवालान, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली–55 से प्रकाशित एंव प्रोलिफिक इनकारपोरेटेड, एक्स–47, ओखला, फेज–2, नई दिल्ली–20 से मुद्रित। –सम्पादक: सिद्धेश्वर